18

u, IV

श्रीः

त्रैमासिक

श्रीस्वाध्याय

[ग्रीष्माङ्क]

वर्ष ४ सं० २००२

संख्या ४ आषाढ़

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः

वार्षिक मूल्य ३।-)

इस अङ्क का मूल्य ।।।=)

संस्थापक—
श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्य

सम्पादक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

विषय-सूची

विलम्बका कारण

यह अङ्क हम ठीक निश्चित समय पर आषाढ़ शु० १० ता० १९ जुलाई तक पाठकोंके पास पहुंचा देना चाहते थे, किन्तु अकस्मात् प्रेसकी असुविधा हो जानेसे ऐसा न हो सका, इसका हमें बड़ा दुःख है। प्रेमी पाठक 'श्रीस्वाध्याय' को समय पर प्राप्त करनेके लिये अत्यन्त उत्कण्ठित रहते हैं, उन सबकी आवश्यकता एवं अभिलाषाओंका ध्यान रखना हमारा प्रधान कर्तव्य है। परन्तु परावलम्बनके कारण कर्तव्यपालनमें कभी विलम्ब हो जाना बहुत सम्भव है। वर्तमान विषम-समयमें जहां कई अच्छे-अच्छे साधन-सम्पन्न मासिक पाक्षिक पत्र महीनों लेट निकलते हैं वहां चार वर्षमें इस एक बार परिस्थितिवशात् 'श्रीस्वाध्याय' का एक सप्ताह पिछड़ जाना कोई बड़ी बात नहीं। गताङ्ककी भांति यह अङ्क भी हम ८ फार्म (६४ पृष्ठ) का ही निकालना चाहते थे, किन्तु ग्राहकोंके पत्र-पर-पत्र और तार तक आने प्रारम्भ हो गये, अतः अब अधिक विलम्ब करना उचित न समझ, इतिहास और कामस्तम्भके महत्त्वपूर्ण लेख, साहित्य-समालोचना, नाटक, कहानी आदिको रोककर ७ फार्ममें ही इस अङ्कको पूर्ण किया गया है। रोके हुए सब लेख आगामी अङ्कमें प्रकाशित होंगे।

—व्यवस्थापक

ग्राहकोंके हितकी बात—

पंचम वर्षका नववर्षांक

वार्षिक मूल्य शीघ्र भेजिये

इस अङ्कके साथ 'श्रीस्वाध्याय' का चतुर्थवर्ष समाप्त हो रहा है और सब ग्राहकोंका पिछला मूल्य भी इसी ग्रीष्माङ्कके साथ समाप्त हैं। अतः आगामी पंचमवर्षके लिए जिन ग्राहकोंका वार्षिक मूल्य ३।-) तीन रुपये पांच आने ता० ६ सितम्बर १९४५ ई० (भाद्रपद कृष्ण ३०) तक कार्यालयमें मनीआर्डर द्वारा पहुँच जायेगा उन्हींको विजयादशमी पर प्रकाशित होनेवाला १५० पृष्ठोंके लगभग अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सुन्दर सचित्र विशेषाङ्क प्राप्त हो सकेगा। 'श्रीस्वाध्याय' के नववर्षाङ्क या विशेषांकके सम्बन्धमें हमें अधिक कुछ कहनेकी आवश्यकता नहीं। भारतभरके धुरन्धर विद्वानों और पत्र पत्रिकाओंने इन अङ्कोंकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। पिछले विशेषाङ्क अब चतुर्गुण मूल्य पर भी कहींसे प्राप्त नहीं हो सकते, यही इनकी सर्व-श्रेष्ठता और सफलताका प्रत्यक्ष प्रमाण है। गत वर्ष जिन पुराने ग्राहकोंने मूल्य भेजनेमें विलम्ब किया और आश्विनके अनन्तर जो नये ग्राहक बने उन्हें वर्तमान चतुर्थ वर्षका 'नववर्षाङ्क' नहीं मिल सका यह पाठकोंको विदित ही है। यदि इस बार किसी सज्जनने आलस्यवश मूल्य भेजनेमें विलम्ब किया तो वे पंचमवर्षके कलापूर्ण अद्भुत विशेषाङ्क द्वारा होने वाले अमूल्य लाभसे वञ्चित रह जायेंगे।

स्थायी ग्राहकोंको विशेष लाभ

पञ्चम वर्षका 'नववर्षाङ्क' पिछले सब विशेषाङ्कोंसे बड़ा और अत्यन्त गवेषणात्मक महत्त्वपूर्ण ठोस सामग्रीसे परिपूर्ण होगा। भारतके सुप्रसिद्ध विद्वानों सुकवियों एवं गवेषकोंके मौलिक लेख और ओजस्वी कविताएं इस अङ्कके लिए आ रही हैं। महर्षिव्यास, पृथिवीपुत्र, भारतीय ज्योतिष क्या ग्रीकसे आया है? यज्ञो-पवीत-मीमांसा, दीपमालाका वैज्ञानिक रहस्य, आर्य-जाति, क्या हनुमान् आदि मनुष्य थे? इत्यादि अनेक लेख नाटक कहानी कविता आदि हिन्दी साहित्यकी स्थायी सम्पत्ति सिद्ध होंगे। गणित और फलित ज्योतिष एवं तेजी मन्दीके गूढ़ रहस्यों पर विशेष रूपसे प्रकाश डाला जायेगा, जो सैंकड़ों रुपये व्यय करने पर भी अन्यत्र कहींसे प्राप्त नहीं हो सकता। इतनी उपादेय सामग्रीसे भरपूर १५० पृष्ठके इस सचित्र अङ्कका मूल्य २) दो रुपये होगा। किन्तु स्थायी ग्राहकोंको वार्षिक मूल्य ३।-) में ही यह अङ्क भी दिया जायगा। इस प्रकार स्थायी ग्राहकोंको अगले शेष तीन अङ्क केवल १।-) में, ।≡) प्रति अङ्क पड़ेगा। वैसे फुटकर साधा-रण अङ्कका मूल्य ।।।≡) होगा। अतः वर्षारम्भसे पहले स्थायी ग्राहक बननेमें ही विशेष लाभ है।

'नववर्षाङ्क' रजिष्टरीसे मंगवाइये

इस वर्ष कई ग्राहकोंने 'नववर्षाङ्क' और कुछ साधारण अङ्क डाककी गड़बड़ीके कारण न मिलनेकी शिकायत की थी, उन्हें दुबारा अङ्क भेजे गये थे। किन्तु इस बार हम ऐसा नहीं कर सकेंगे। जिन ग्राहकों को अङ्क खो जानेका भय हो वे ≡) तीन आने अधिक भेजें अर्थात् ३।।) वार्षिक मूल्य भेजें, ताकि 'नववर्षाङ्क' रजिष्ट्री द्वारा सुरक्षित रूपमें उनके पास पहुँचाया जा सके। जो ग्राहक केवल ३।-) भेजेंगे उन्हें हम पोस्टल सर्टीफिकेटसे अङ्क भेज देंगे। किन्तु मार्गमें या उनके पोस्टआफिसमें ही अङ्क कहीं गुम हो जावेगा तो उसका उत्तरदायित्व न तो पोस्टआफिस पर होगा और न हम पर ही। शिकायत करने वाले ग्राहकको हम अपना पोस्टल सर्टीफिकेट दिखा सकेंगे। दुबारा 'नववर्षाङ्क' किसीको भी नहीं भेजा जावेगा, अतः सबसे अच्छा यही होगा कि प्रत्येक ग्राहक तीन आने अधिक भेजकर रजिष्ट्रीसे मंगवायें।

पहले १०० ग्राहकोंको विशेष सुविधा

रजिष्ट्री खर्च सहित पंचम वर्षके वार्षिक मूल्यके साथ ।।) आठ आने अधिक मिलाकर कुल ४) चार रुपये सबसे पहिले भेजने वाले एकसौ ग्राहकोंको १।।) रुपये मूल्यका प्रथम वर्षका प्रथमाङ्क भी इस 'नववर्षाङ्क' के साथ ही रजिष्ट्री द्वारा भेजा जा सकेगा। इस प्रकार उन्हें प्रथमवर्षके प्रथमाङ्कमें एक रुपयेका लाभ रहेगा। जो सज्जन इसी अङ्क (ग्रीष्माङ्क) से स्थायी ग्राहक बनना चाहें वे १) रुपया अधिक भेजें।

अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखिये

बहुतसे ग्राहक वार्षिक मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम पता और ग्राहकसंख्या नहीं लिखते और कई उर्दू में अस्पष्ट अक्षरोंमें लिखते हैं, इससे हमें बड़ी कठिनाई होती और अङ्क भेजनेमें भी विलम्ब हो जाता है। अतः पुराने ग्राहकोंको अपनी ग्राहक संख्या (जो "श्रीस्वाध्याय" के रैपर—पतेके कागजपर लिखी रहती है) और नये ग्राहकोंको अपना पूरा पता कूपन पर स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिये।

"श्रीस्वाध्याय" का नमूना बिना मूल्य किसीको भी नहीं भेजा जाता है। अतः कोई सज्जन नमूनेके लिये बाध्य न करें। यदि एक साधारण प्रति (नमूनार्थ) मंगवानी हो तो उसके लिए १) भेजना आवश्यक है। नववर्षाङ्क (विशेषांक) की एक प्रति २≡) प्राप्त होनेपर रजिष्ट्री द्वारा भेजा जावेगा। जिन सज्जनोंके जवाबीपत्र या उत्तरके लिये टिकिट आवेंगे उन्हींको संस्थाकी ओरसे उत्तर दिया जायगा।

'नववर्षाङ्क' वी० पी० से नहीं भेजा जायेगा

कोई ग्राहक 'नववर्षाङ्क' वी० पी० से न मंगवावें। 'श्रीस्वाध्याय' दिल्लीमें छपता है और वहीं से छपते ही सब ग्राहकोंके नाम डाक द्वारा भेज दिया जाता हैं। दिल्लीके डाकघरोंसे रजिष्ट्री भेजी जा सकती है, परन्तु श्रीस्वाध्यायसदन सोलनके नामसे दिल्लीका कोई भी डाकघर वी० पी० स्वीकार नहीं करता। अतः सब ग्राहकोंके भेजनेके पश्चात् शेष अङ्क जब सोलन पहुंचते हैं तब वी० पी० भेजी जा सकती है। ऐसा करनेसे ग्राहकोंके पास अङ्क पहुँचनेमें १०–१५ दिनका विलम्ब हो जाता है। अतः जिन ग्राहकोंका वार्षिक मूल्य ३।−) मनीआर्डर द्वारा प्राप्त हो जावेगा उन्हींको ठीक समयपर 'नववर्षाङ्क' भेजा जा सकेगा। वी० पी० के लिए अधिक अङ्क बचना ही असम्भव है। और यदि किसीको वी० पी० भेजी भी गयी तो वह विलम्बसे मिलेगी।

सम्मान्य ग्राहकोंके लिए अपूर्व अवसर

५) से ५०) रु० तक वार्षिक मूल्य देनेवाले "श्रीस्वाध्याय" के सम्मान्य ग्राहक माने जाते हैं; उनके लिए इस वर्षसे यह व्यवस्था की गई है कि जो सज्जन २१) रु० भेजकर "श्रीस्वाध्याय" के सम्मान्य ग्राहक बनेंगे उनकी जन्म कुण्डली (यदि वे चाहेंगे तो) "श्रीस्वाध्याय" में प्रकाशित करके भारतके अनेकों उच्च कोटिके विशेषज्ञ ज्योतिषाचार्योंकी सम्मति या शास्त्रीयफलादेश घर बैठे ही उनके पास पहुँचा दिया जावेगा। इस प्रकार उनका ज्योतिर्विज्ञान सम्बन्धी जो कार्य सहस्रों रुपये व्यय करनेपर भी नहीं हो सकता वह "श्रीस्वाध्याय" के द्वारा बहुत सहज सुलभ रीतिसे सुसम्पन्न हो सकेगा। जिन अनुभवी विद्वानोंका फलादेश शास्त्रदृष्टिसे अधिक शुद्ध सत्य सिद्ध होगा वे महानुभाव "श्रीस्वाध्याय सदन" की ओरसे भी सम्मानित किये जावेंगे। इस प्रकार ज्योतिष शास्त्रके श्रद्धालु ग्राहकों और ज्योतिर्विज्ञानके विशेषज्ञ ज्योतिषाचार्यों दोनों ही के लिए यह सुवर्ण सुअवसर सिद्ध होगा।

प्रत्येक ग्राहकका यह परम कर्तव्य है कि वह अपने परिचित इष्ट मित्रोंको नये ग्राहक सहायकादि बना कर 'श्रीस्वाध्याय' यज्ञमें अधिकसे अधिक सहायता पहुंचावें।

पत्रव्यवहारका पता—व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (शिमला)

॥ श्रीः ॥

श्रीस्वाध्याय

[त्रैमासिक-पत्र]

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य

१०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

संरक्षक—

बघाटमहीमहेन्द्र धर्ममार्तण्ड

राजा साहब श्री १०५ मान् दुर्गासिंह जी बहादुर C. I. E. सोलन।

राव राजा कैप्टेन श्री १०५ मान् गिरिधारीशरणसिंह जी भरतपुर।

सहायक—

श्री १०५ मती माँजी महाराणी साहिबा (सिरमौरीजी) बघाटराज्य।

श्री १०५ मती सौ० राणी साहिबा वृन्दावनवाली जी (भरतपुर)।

रावबहादुर धर्मालङ्कार श्री १०५ मान् महाराज प्रभुनाथसिंहजी नरसिंहगढ़।

श्री १०५ मान् राजकुमार मानसिंहजी बार.एट-लॉ. जज हाईकोर्ट उदयपुर।

श्रीमान् सरदार कुँवर रणदीपसिंह जी नाहन (सिरमौर)।

श्रीमान् कुँवर शिवसिंह जी B. A., L-L. B. सेशनजज सोलन।

श्रीमान् कुँवर ईश्वरीसिंह जी अध्यक्ष धर्मसभा उदयपुर (मेवाड़)।

श्रीमान् सरदार जगजीतसिंह जी ढिल्लों B. A., L-L. B. नाभा।

सम्पादक और व्यवस्थापक—

ज्यो० मा० ज्यो० र० श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिश्शास्त्री

उपसम्पादक—

श्री पं० बलजिन्नाथ शास्त्री B. A.

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (पंजाब)

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना "श्रीस्वाध्याय" का मुख्य उद्देश्य है।

सञ्चालक गणोंके नियम—

संरक्षक—

(१) जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५०) से ३००) रु० तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जायेंगे।

सम्मान्य ग्राहक—

(३) जो सज्जन ५) से अधिक ५०) रु० तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के सम्मान्य ग्राहक माने जायेंगे।

'श्रीस्वाध्याय' के नियम—

(१) 'श्रीस्वाध्याय' (जब तक त्रैमासिक रहेगा तब तक) आश्विन शुक्ल १०, पौष शुक्ल १०, चैत्र शुक्ल १० और आषाढ़ शुक्ल १० को प्रकाशित हुआ करेगा। इस त्रैमासिक संस्करणका वार्षिक मूल्य ३।~) और एक प्रतिका १) है। स्थायी ग्राहक आश्विन से ही बनाये जाते हैं। 'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहकों को हमारी "श्रीग्रन्थमाला" की सभी अद्भुत अमूल्य पुस्तकें बिना मूल्य (मुफ्त) दी जावेंगी। ऐसी सर्वोपयोगी अमूल्य पुस्तकें कोई भी मासिक-पत्र प्रतिवर्ष अपने ग्राहकोंको बिना मूल्य नहीं देता। यह 'श्रीस्वाध्याय' के ग्राहकोंको विशेष लाभ है। पर्याप्त संरक्षक सहायक और ग्राहक होने पर बहुत शीघ्र ही 'श्रीस्वाध्याय' मासिक कर दिया जायगा।

(२) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय-सदनकी ओरसे प्रार्थना-पूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जायेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जावेंगे, अन्यथा नहीं।

(३) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियाँ और विनिमय (परिवर्तन) के पत्र पत्रिकायें सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (पंजाब) के पतेसे भेजने चाहियें।

(४) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(५) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने बढ़ाने तथा उसे लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। जिस अस्वीकृत लेखको सम्पादक लौटाना स्वीकार करें, उसका डाक और रजिस्ट्रीका व्यय लेखकको भेजना होगा। अधूरे लेख नहीं लिये जाते।

विज्ञापन छपवाईके नियम—

पता—व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन, (शिमला)

श्रीस्वाध्यायमें क्या क्या होगा ?

विज्ञ पाठकोंको 'श्रीस्वाध्याय' के उद्देश्य तथा नीतिका ज्ञान तो भली-भांति हो ही गया है। इसमें जो मोक्षादि पांच प्रधान स्तम्भ रक्खे गये हैं—उनके अन्तर्गत किन २ विषयों पर लेख लिये जा सकते हैं ? इसकी एक संक्षिप्त सूची हम नीचे दे रहे हैं। इस तालिका द्वारा हमारे विद्वान् लेखकोंको आगामी 'नववर्षाङ्क' के लिए विषय चुननेमें सुविधा होगी।

मोक्षस्तम्भमें—

भारतीय दर्शनोंका संक्षिप्त परिचय। न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त (शाङ्कर रामानुज निम्बार्क माध्व श्रीकण्ठ भास्कर आदि मतोंका संक्षिप्त सार) शैव (त्रिक प्रत्यभिज्ञा पाशुपत आदि मतोंका संक्षिप्त परिचय) शाक्त (दक्षिण वाम कौल तन्त्र सिद्धान्त त्रैपुर आदि मतोंके संक्षिप्त परिचय) पारमार्थिक मोक्ष, व्यावहारिक मोक्ष आदि आदि।

धर्मस्तम्भमें—

वेदोंका स्वाध्याय। राष्ट्रिय शिक्षा। घरेलू शिक्षा। स्त्री शिक्षा। धर्म-रहस्य। धर्ममें स्मृतियोंका स्थान। कल्प-सूत्र। स्त्रीधन। दत्तक-दाय। दाय-भाग। प्रायश्चित्त विधान। पर्व व्रतोत्सवादि निर्णय। मुहूर्त्तादि निर्णय। पर्व किस प्रकार मनाये जायें। पर्व और त्यौहारोंका राष्ट्रिय महत्त्व। पर्व मनानेमें धार्मिक दृष्टिसे हानि लाभका विचार। ज्योतिश्शास्त्रानुसार तात्कालिक शुभाशुभ योग और भविष्यवाणियां। राशिफल। खगोलके ग्रह नक्षत्रादिकोंका परिचय।

अर्थस्तम्भमें—

अर्थशास्त्र। चाणक्यके विचार। घरकी व्यवस्था। पारिवारिक आय व्यय। राष्ट्रको समृद्ध करनेके उपाय। यातायातमें अर्थ प्राप्ति। व्यापार। ज्योतिश्शास्त्रानुसार महर्घ समर्घ (तेजी मन्दी) विचार। खानोंसे अर्थ प्राप्ति। आर्थिक दृष्टिसे कलाओंका विचार। पर्व और आर्थिक दृष्टि। युद्धसे आर्थिक हानि लाभ। कृषि (धान्य, फल, शाक-भाजी, ईख, कपास आदिके उत्पादन) से अर्थ प्राप्ति आदि आदि।

कामस्तम्भमें—

आयुर्वेद। शरीरके सभी अवयवोंको सुन्दर सुदृढ स्वस्थ ओजस्वी बनानेके उपाय। दीर्घजीवी बननेके उपाय। रसोईघर। कलाकौशल। घरकी स्वच्छता और पवित्रता। बच्चोंका पालन पोषण। भृत्योंके साथ व्यवहार। पशुपालन आदि आदि।

इतिहासस्तम्भमें—

इतिहास जाननेके साधन (ताम्रपत्र दानपत्र मुद्रा शिलालेखादि) संस्कृत-साहित्यका इतिहास। भारतीय ग्रन्थ और ग्रन्थकारोंके परिचय। भौगोलिक परिचय (देशकी सीमायें नदियां पर्वत तीर्थ नगर ग्राम आदि) प्राचीनकालमें भूमण्डलके समस्त देश प्रान्त नगरादिकोंके जो नाम और सीमा थी उनके वर्तमान नाम और सीमाका विवेचन। महापुरुषों (दानवीर युद्धवीर धर्मवीर मृत्युवीर शास्त्रार्थवीर विशिष्टविद्वान् भगवद्भक्त राष्ट्रभक्त सिद्ध सती ज्ञानी आदि) के जीवन चरित्र। प्रत्येक वस्तु पर ऐतिहासिक दृष्टिसे विचार।

विशेष—

इसके अतिरिक्त 'श्रीस्वाध्याय' में कुछ सामयिक लेख भी रहेंगे। प्रत्येक अङ्ककी त्रैमासिक अवधिमें जो-जो विशेष पर्व त्योहार या जिन-जिन अवतारों एवं महापुरुषोंकी जयन्तियां आवेंगी उन-उन पर विशेष रूपसे प्रकाश डाला जावेगा। आगामी अङ्क (शरदङ्क) के लिए विद्वान् महानुभाव सर्वप्रथम निम्न विषयों पर सुविचारपूर्ण लेख भेजनेकी अवश्य कृपा करें—

विजयादशमी, शरत्पूर्णिमा' श्रीहनुमान्जीका जीवन चरित्र, हनुमान्जीके जन्मका शास्त्रीय निर्णय, श्री हनुमान्जीकी स्वामिभक्ति, दीपावली, अन्नकूट, भ्रातृद्वितीया, वष्टिकाकर्षण, (रस्साकशी) गोपाष्टमी, महाकालभैरव जयन्ती, श्रीदत्तजयन्ती, मल्लद्वादशी आदि।

सब लेख श्रावण शु० १५ ता० २३ अगस्त १९४५ पर्यन्त "सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (पञ्जाब)" इस पते पर पहुँचना आवश्यक है।

भारतीय विद्वानोंकी दृष्टिमें



हिन्दी-साहित्यके सुप्रसिद्ध विद्वान्, टिहरी गढ़वाल राज्यके न्यायप्रिय भू० पू० प्रधानामात्य, अ० भा० हिन्दी-साहित्य सम्मेलनके प्रधानमन्त्री श्री पं० मौलिचन्द्रजी शर्मा M. A. L. L. B. महोदय लिखते हैं—

"..................'श्रीस्वाध्याय' को देख कर बहुत प्रसन्नता हुई। सोलन जैसे स्थान पर बैठ कर आप यह पत्र निकाल रहे हैं उसको ध्यानमें रखते आपकी सफलता आश्चर्यजनक है। यदि शिमलाके पहाड़में आप ऐसा वातावरण तैयार कर सकते हैं तो और क्या चाहिए। भाषा सुन्दर, भाव ऊंचे और संकलन विस्तृत क्षेत्रसे है..................।"

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

सुप्रसिद्ध साहित्यसेवी और विख्यात ज्योतिषी, 'सामुद्रिकविज्ञान' 'मुखाकृतिरहस्य' 'साकोरीका सन्त' आदि ग्रन्थोंके यशस्वी लेखक श्री पं० ईशनारायणजी जोशी महोदय लिखते हैं—

"..................'श्रीस्वाध्याय' के अङ्कोंको मैंने अत्यन्त रसपूर्वक आद्यन्त पढ़े। इसकी पाठ्य सामग्री सुरुचिपूर्ण और ठोस है। कई लेख तो मुझे बहुत पसन्द आये। बहुत दिनों बाद हिन्दीमें ऐसा पत्र देखने को मिला है जिसमें ज्योतिषको इतनी प्रधानता दी गई हो। साथ ही पत्र भारतीय संस्कृतिका रक्षक तथा भारतीय राजनीतिका पृष्ठपोषक भी है। आशा है ज्योतिष और भारतीय संस्कृति कला विज्ञानके अनुरागी इस पत्रको अपनायेंगे। पत्रके आदरणीय योग्य संस्थापक संरक्षक सम्पादक और सहायक वास्तवमें धन्यवादार्ह हैं। 'श्रीस्वाध्याय' खूब उन्नति करे, इसके यशका विपुल विस्तार हो यही मेरी हार्दिक कामना है।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

राजस्थानका सुप्रसिद्ध राष्ट्रिय साप्ताहिक 'नवजीवन' लिखता है—

".................. ज्योतिर्विज्ञान तथा अध्यात्मविद्याका प्रचारक 'श्रीस्वाध्याय' पत्र गत ४ वर्षोंसे साहित्यके एक अछूते अङ्गकी अच्छी सेवा कर रहा है। इस समय जब कि भारतके अधिकांश शिक्षित सज्जन आँख मूंद कर पश्चिमके विज्ञानको ही सब कुछ समझ बैठे हैं—इस पत्र द्वारा भारतीय प्राचीन आदर्शकी रूपरेखाकी एक झलक पा सकते हैं। हमारे सामने जो अङ्क है वह बहुत गम्भीर चित्ताकर्षक और उपयोगी सामग्रीसे परिपूर्ण है।.................."

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

जम्मू काश्मीरकी सुप्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका 'भारती' लिखती है—

"..................'श्रीस्वाध्याय' में सभी विषयकी रचनाएं मिलती हैं। इसमें गवेषणात्मक तथा ज्योतिष सम्बन्धी लेख बड़े ही महत्त्वपूर्ण हुआ करते हैं। 'दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार चक्र' लेख बड़ा अद्भुत रहता है। ......इसमें श्री त्रिवेदीजीने जब भी वर्षका भविष्य लिखा है—हमने देखा है कि वह प्रायः बादमें ठीक ही निकलता है। इसलिए यह पाठकोंके विशेष कुतूहलकी वस्तु है। इसके अतिरिक्त कविताएं तथा अन्य लेख भी मनोरञ्जक होते हैं।"

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः। ❀ श्रीः ❀ स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम्।

श्रीस्वाध्याय

[ग्रीष्मांक]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति [राष्ट्रालोक]

वर्ष ४ | सोलन, आषाढ़ शु० १० गुरुवार सं० २००२ वि० | संख्या ४

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या ।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै ॥
—अ० वा० आचार्य

अभ्युदय

[कविसम्राट् श्री पं० अयोध्यासिंह जी उपाध्याय 'हरिऔध]



ऐसा हो अभ्युदय हमारा ।
जिसके बलसे बहे धरामें सरस-शान्तिरसधारा ॥
अपने जीवनके समान जन-जन जनजीवन जाने ।
अपने सुखदुखके समान सब सबका सुखदुख माने ॥
पाशवबल विलीन हो जावे छल छलियोंका छूटे ।
कूटनीतिसे न मालिका मानवताकी टूटे ॥
विविध विपत्ति-विधान-विधायक बन विज्ञान न जावे ।
वसुन्धरा पर वर-विधि-विलसित धर्मध्वज फहरावे ॥

आवाहन

गुरुदेव !

हे प्रभो ! आपके सम्बोधित करनेके लिए अन्य कोई शब्द उपयुक्त सूझ नहीं पड़ता। हमारे जैसे अल्पज्ञ संसारी जीवोंकी तो बात ही क्या, बड़े-बड़े ऋषि-महर्षि—जीवन्मुक्त महात्मा भी आपके लिए इससे बढ़कर कोई दूसरा सुन्दर शब्द ढूंढ निकालनेमें सर्वथा असमर्थ रहे हैं। इसीलिए तो आपका प्रत्यक्ष साक्षात्कार करानेवाले योगदर्शनने—

"स पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्"।

सूत्र द्वारा 'गुरुदेव' शब्दसे ही आपको सम्बोधित किया है।

भगवन् !

आपके लिए—

"त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान्"

और

"वेत्तासि वेद्यञ्च परञ्च धाम"

आदि वाक्य अक्षरशः चरितार्थ होते हैं, अतः यद्यपि इसमें कुछ सन्देह नहीं कि आप सर्वज्ञ हैं—सर्वान्तर्यामी हैं—त्रिकालदर्शी हैं—आचार्योंके आचार्य हैं—परमभक्त वत्सल हैं और यही कारण है कि जहां जब भी कोई भक्त आपको सच्चे हृदयसे—पूर्णनिष्ठासे स्मरण करता है, तत्काल उसकी पुकार आप तक पहुंच जाती है। और आप यों तो अहर्निश अपने जनोंकी—नहीं, अपने जनोंकी ही क्यों प्राणिमात्रकी कल्याणकामना करते रहते हैं और कल्याणस्वरूप होनेके कारण ही लोक श्रीचरणोंको 'शिव' 'आनन्दकन्द' आदि अनेकों नामोंसे सम्बोधित करते हैं। फिर भी भक्तजन अपने कर्मदोषोंके कारण ही अत्यन्त लालायित और उत्कण्ठित होते हुए भी आपके दर्शन सौभाग्यसे वञ्चित हैं।

योगिराज !

इसमें तो कुछ सन्देह नहीं कि आपके सन्देश अपने भक्तजनोंको प्रायः प्राप्त होते रहते हैं, आपको सर्वदा उनका ध्यान रहता है और आप प्रतिक्षण न केवल अपने भक्तोंका प्रत्युत अपने विरोधियोंकी भी कल्याणकामना करते रहते हैं। किन्तु, भक्तगण तो आपके श्रीविग्रहके दर्शनोंके लिए उत्कण्ठित हैं, इसलिए हे ! महामहिम-महात्मन् ! एक बार फिरसे दर्शन देकर कृतार्थ कीजिए और अधिक नहीं तो किसी ऐसे माध्यमका निर्देश कीजिए जिसके द्वारा आपके अपने जन आप तक पुकार पहुँचा सकें—अपनी करुणकथा सुना सकें। आप तो भक्तवत्सल हैं, फिर क्या कारण कि आज आपके भक्तगण कई प्रकारकी आधिव्याधियों से पीड़ित हो रहे हैं और आप अपना सन्देश देते हुए भी उनकी प्रार्थना सुननेकी वा दर्शन देनेकी कृपा नहीं करते।

प्रभो !

हमारी करबद्ध प्रार्थना है कि अब अधिक और व्याकुल न कीजिए और हमें दर्शन देकर अथवा यदि समयके प्रभावके कारण इस अनार्ययुगमें अभी दर्शन प्रदान करना सहज न हो तो भी भक्त हृदयों में किसी ऐसे उपायका प्रकाश कीजिए कि उनकी प्रार्थनाएं—अनुनय विनय सीधी आपके कर्णगोचर हो सके।

आपका अपना ही—

हरदेव शर्मा त्रिवेदी

साम्यवाद



इस महायुद्धमें साम्यवादी राष्ट्रोंकी आश्चर्य जनक विजयको देखकर संसारमें चारों ओर साम्यवादकी एक लहर जैसी फैल रही है। प्रायः प्रत्येक व्यक्तिके हृदयमें साम्यवादकी ओर सहानुभूतिका प्रादुर्भाव हो रहा है। इस समय यूरोपके अधिकांश प्रदेश पर साम्यवादका प्रभाव पर्याप्त मात्रामें अवस्थित हो चुका है। कोई आश्चर्यकी बात नहीं कि युद्धका अन्त होते होते चीन आदि देशोंमें भी साम्यवाद पूर्णरूपेण फैल जाए। वर्तमानमें डा० सुंगकी मास्को यात्रा और रूस चीनके मैत्रीपूर्ण गठबंधनकी बातें इसका पूर्वरूप है। हमारे भारतवासियोंके भी हृदय दिन-प्रति-दिन साम्यवाद की ओर झुकतेसे दीख रहे हैं। कोई समय था कि प्रजातन्त्रका प्रभाव भी इसी प्रकारसे संसारमें फैल रहा था; धीरे धीरे संसारभरमें कहीं अधिक तो कहीं थोड़ी मात्रामें स्थान पकड़ ही गया। इसी प्रकारसे क्या पता है कि कभी साम्यवाद भी किसी-न-किसी रूपमें संसारभरमें अपना प्रभुत्व जमा बैठे। पिछले कई वर्षोंकी घटनाओंको विचारनेसे ऐसा प्रतीत होता है कि दैव भी साम्यवादके कुछ अनुकूल ही है। युद्धके आरम्भकी ओर दृष्टि डालनेसे विदित होगा कि उस समय यूरोपमें तीन महान् शक्तियां थीं। (१) अंग्रेज (२) जर्मन, और (३) रूसी। तीनों शक्तियां एक दूसरेकी शत्रु थीं। जर्मनी और अंग्रेजोंमें परस्पर इतनी शत्रुता नहीं थी जितनी कि जर्मनीको रूसके साथ थी, अथवा जितनी अंग्रेजोंको रूसके साथ थी। हर हेसकी घटनासे और उस समयके जर्मनोंके व्यवहारसे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि जर्मन और विशेषकर हर हिटलर आदि अंग्रेजोंके साथ मिलकर रूस तथा साम्यवादका सत्यानाश कर डालना चाहते थे। परन्तु दैवगति देखिए—आरम्भमें जर्मनी और रूस मित्र बने, अंग्रेज और जर्मन परस्पर लड़ने लगे। पश्चात् कुछ ही समयके अनन्तर जर्मनोंकी वास्तविक नीति प्रकट हो गई और उन्होंने रूस पर आक्रमण किया। रूसके अभ्युदयका भय जैसा पश्चिमी यूरोपके साम्राज्यवादियों और पूंजीवादियों को था उससे कुछ भी न्यून भय पूर्वमें जापानको न था। पर दैवका दूसरा अनुग्रह देख लीजिए, जिस समय रशिया जर्मनीके साथ घोर युद्ध करता हुआ बड़े ही संकटमें फंस गया था, उस समय जापानको उसपर आक्रमण करनेका साहस नहीं हुआ, फल यह हुआ कि धीरे-धीरे साम्यवादने जर्मनीको तो मिट्टीमें मिला दिया। जापानको भी भयभीत कर दिया। अंग्रेजों और अमेरिकनोंकी इच्छाके विरुद्ध पौलैण्ड आदि देशोंमें राज्य प्रबन्ध स्थापित किया गया। इस समय भी समस्त पूंजीवादी, चाहे वे अंग्रेज, जर्मन, अमेरिकन, जापानी या और भी कोई क्यों न हों, स्वभावसे ही साम्यवादके शत्रु हैं। पर इस प्रकार संसारकी अधिकांश शक्तियां साम्यवादको न चाहती हुई भी उसके तीव्र अभ्युदयका कोई प्रतीकार कर नहीं सकती। बढ़ते हुए साम्यवादके प्रभावका ही यह एक फल है कि ब्रिटिश सरकारको भारतीय समस्याको शीघ्र सुलझानेकी चिन्ता पड़ी हुई है। इसका एक रूप लार्ड वेवल योजना और शिमला-सम्मेलनके रूपमें प्रकट हो रहा है। बुद्धिमान् अंग्रेज अमेरिकन तथा भारतीय पूंजीवादी अब यह मानगये हैं कि यदि भारतीय समस्या सुलझ गई तो शांतिपूर्वक पूंजीवादियोंका काम और कुछ समय तक चलता रहेगा। परन्तु यदि ऐसा न हो सका तो भारतमें शीघ्र ही क्रान्ति होनेकी सम्भावना है, जिससे इस देशमें साम्यवादके उल्लास और पूंजीवादके भयानक ह्रास तथा विनाशका बडा भारी भय है।

अब प्रश्न यह उठता है कि यदि भारतवर्षमें साम्य-

वादका बल बढ़ता जाए तो हमें क्या करना चाहिए? प्रकृतिका नियम है कि जो वस्तु कालके परिवर्तनके साथ परिवर्तित होती जाए वह कालको अपने अनुकूल बना सकती है। जो कालके प्रतिकूल ही डटी रहे काल उस को खा जाता है। अतः हमें भी इस समय साम्यवादी बनना चाहिए। साम्यवादका यह अभिप्राय नहीं कि पुरुष और स्त्री सम बनें अथवा बच्चों और बूढ़ोंमें भेद नहीं रहे। जो भेद प्रकृतिके नियमोंने बना रक्खें हैं उन्हें मिटा कौन सकता है? अतः साम्यवादका अभिप्राय यह है कि प्रत्येक व्यक्तिको उसके सामर्थ्यके अनुसार उन्नति करनेका सुअवसर मिलने का प्रबन्ध किया जाए। कोई अधिक धनाढ्य न बने और कोई भूखा न मरे। कोई कामके बिना न रहे और कोई बिना काम किए ही पूर्वजोंके धनसे ऐश्वर्य भोग न करने पाए। भूमि तथा कारखानों का लाभ किसी एक व्यक्ति-विशेषको न मिले। अपितु समस्त जनताका हित उससे हो। आदि २।

सूक्ष्मदृष्टिसे देखा जाए तो हमारे पूर्वजोंने स्वयं साम्यवादका प्रचार किया। परन्तु उनका साम्यवाद आध्यात्मिक क्षेत्र तक ही सीमित रहा। आधिभौतिक क्षेत्रमें उस समय इसका प्रचार न हो सका। आधुनिक साम्यवादियोंने इससे विपरीत आधिभौतिकक्षेत्रसे ही इसका आरम्भ किया। अभी तक इसी क्षेत्रमें यह सीमित है। यदि हिन्दु साम्यवादको अपनाएं तो साम्यवाद आध्यात्मिक तथा आधिभौतिक दोनों क्षेत्रोंमें फैलकर संसारका अधिकसे अधिक हित कर सकेगा। कई महानुभावोंको डर है कि हमारा धर्म भयमें पड़ जायगा यदि साम्यवादने भारतमें पदार्पण किया। परन्तु उनको स्मरण रखना चाहिए कि कोई भी विनाशकारक शक्ति सनातन आर्य-धर्मको नष्ट नहीं कर सकती। सनातनधर्ममें ही ऐसी शक्ति है कि अपने आपको प्रत्येक परिस्थितिके अनुकूल बना सकता है और इस प्रकार सदा जीवित रह सकता है। किसी भी अन्य धर्ममें ऐसी शक्ति नहीं। आर्य धर्ममें इस समय एक बड़ी भारी क्रान्ति हो रही है। यह क्रान्ति आगे आगे बड़ी तीव्र गतिसे होने लगेगी। हमें सद्भावनासे धार्मिक गवेषणा करके इस क्रान्तिको श्रेष्ठ क्रान्तिका रूप देना चाहिए, जिससे कि हमारी जाति और हमारा राष्ट्र अभ्युदय और निःश्रेयसको प्राप्त करनेमें अग्रसर बनते रहें। परन्तु यह सब कुछ हम कर सकते हैं जब हमारे पास अपना राज्य हो। राज्य शासनके सहायके बिना कोई भी बड़ा कार्य सफल नहीं होता। इस कारण हमारा पहला कर्तव्य यह है कि अपने महान् राष्ट्रमें आर्यस्वशासन स्थापित करने का प्रयत्न करें। भगवत्कृपा और हमारे बलिदानोंसे अब वह सुवर्णसुयोग सन्निकट आनेवाला है, उससे हमें पूर्णरूपेण लाभ उठाना चाहिए।

रूसके वर्तमान साम्यवादसे हम पूर्णरूपेण सहमत नहीं हैं। समदर्शी आर्यगण ही सच्चे साम्यवादी हो सकते हैं, अनार्य कदापि नहीं। आर्योंके द्वारा जो क्रान्ति होगी वह शान्तिदायिनी श्रेष्ठ क्रान्ति है और अनार्योंके द्वारा की जानेवाली क्रान्ति अशान्तिदायिनी दुष्ट क्रान्ति है। श्री १०८ आचार्यचरण अमृतवाग्भवजी महाराजने श्रीराष्ट्रालोकमें आर्य और दोनों क्रान्तियोंका निरूपण कितनी सुन्दरतासे किया है जरा देखिये—

निग्रहानुग्रहाभ्यां ये निर्लोभाः समदर्शिनः।
समुन्नयन्ति संसारं त एवार्याः स्मृता बुधैः॥

[जो लोभ रहित और समदर्शी हैं, जो निग्रह और अनुग्रह द्वारा संसारको उन्नत करते हैं, उन्हींको विद्वान् लोग आर्य कहते हैं।

श्रेष्ठ क्रान्तिके लक्षण—

या क्रान्तिः क्रियते लोके दण्डनायाततायिनाम्।
सा शान्तिदायिनी श्रेष्ठा लोकद्वयशुभावहा॥

[संसारमें आततायियोंको दण्ड देनेके लिए जो क्रान्ति की जाए वह शान्तिदायिनी श्रेष्ठ और दोनों लोकोंमें कल्याण करनेवाली होती है]

इससे विपरीत स्वार्थवश दूसरे राष्ट्रका स्वातन्त्र्यापहरण करनेके लिए अन्य राष्ट्रोंमें जाकर जो क्रान्ति की जाती है वह दुष्ट क्रान्ति दोनों लोकोंकी विनाशक है।



प्रेम

] लेखक—श्री पं० वलजिन्नाथजी शास्त्री B. A.]

"प्रेम-प्रेम सब ही कहै प्रेम न जाने कोय"

प्रेम वस्तुतः एक रहस्यपूर्ण वस्तु है। देवता मनुष्य पशु-पक्षी आदि समस्त चेतन सृष्टिमें प्रेम व्याप्त है। सभी जीव जन्तु दिन-प्रति-दिन प्रेमका अनुभव स्वय करते रहते हैं। कोई भी व्यक्ति ऐसा न होगा जिसने प्रेमका अनुभव न किया हो। सिंह जैसे महा भयानक तथा हिंसक जीव भी प्रेमके दास बन जाते हैं। उनको भी अपनी प्रेयसी तथा वच्चों से प्रेम होता ही है। जो जीव सर्वथा जड़तुल्य हों उनको यदि किसी अन्यसे प्रेम न भी हो तो कमसे कम अपने शरीर तथा शरीर सम्बन्धित वस्तुओंसे उनको भी अवश्य प्रेम होता है। आधुनिक विज्ञान द्वारा यह भी सिद्ध हुआ है कि स्थावर जीवों अर्थात् वृक्षोंको भी परस्पर बड़ा प्रेम हुआ करता है। प्रेम पर ही वस्तुतः यह सारा संसार स्थित है। यदि प्रेम को एक आकर्षण शक्ति जैसा माना जाए तो जड़ पदार्थोंमें भी ऐसा प्रेम सिद्ध होगा। जितने भी ग्रह-नक्षत्र तारे आदि विविध मंडल हमें इस आकाश में दिखाई पड़ते हैं—सभी आकर्षण शक्ति रूपी प्रेम ही के बल पर खड़े हैं। यदि इनमें यह आकर्षण शक्ति न हो तो इस ब्रह्माण्डमें कोई भी व्यवस्था नहीं रहेगी। समस्त मण्डलोंका संहार हो जाएगा। अतः प्रेमकी ही महिमा पर समस्त विश्वका व्यवहार स्थित है। इस प्रकारसे प्रेम ही इस ब्रह्माण्डका एक चक्रवर्ती सम्राट है। प्रत्येक व्यक्तिका हृदय इसका सिंहासन है। प्रत्येक शरीर प्रत्येक मन, प्राण और इन्द्रिय, बुद्धि आदि इसके दास तथा दासियां हैं। परन्तु आश्चर्य यह है कि इतना व्यापक, प्रकाशमान, और सदा अनुभूत होते हुए भी यह प्रेम पहचाना नहीं जाता। किसीसे भी पूछिए कि यह प्रेम क्या वस्तु है ? कोई भी यथेष्ट उत्तर नहीं दे सकेगा। किसी मातासे पूछिए कि पुत्र प्रेम कैसा होता है ? इस प्रेमका स्वरूप क्या है ? तो वह यही उत्तर देगी कि पहले स्वयं पुत्रवान् बनो, तब स्वयं इस पुत्र-प्रेमका स्वरूप पहचान सकोगे। इसी प्रकारसे किसी युवतीसे पूछिए कि पति प्रेमका कैसा स्वरूप होता है ? अथवा किसी युवासे पत्नी-प्रेमके विषयमें ऐसा ही प्रश्न कीजिए तो वे भी यही उत्तर देंगे कि स्वयं युवावस्थाको प्राप्त करके इस प्रेमके रहस्यको आप ही आप जान लोगे। सारांश यह कि शब्दोंमें ऐसी शक्ति नहीं कि प्रेमके स्वरूपको प्रकट कर सके। परन्तु प्रेम सदा प्रकट होता ही रहता है। बिना सिखाए भी प्रेम सभीके हृदयमें प्रकाशमान बना रहता है। प्राचीनकालसे लेकर आज तकके कवि प्रेमका वर्णन करते आए, परन्तु किसीने भी प्रेमके रहस्यको शब्दोंमें प्रकट नहीं किया। प्रेम क्या वस्तु है ? किस प्रकारसे प्रेम अपना व्यापार करता है ? क्यों किसीसे मनुष्य प्रेम करता है ? क्यों किसीसे

रूस यदि दुष्ट क्रान्ति द्वारा साम्यवादका विस्तार चाहता हो तो उस साम्यवादसे किसीका भी कल्याण न होगा। आर्य-भावनासे परिपूर्ण भारतीय साम्यवाद वा भारत की स्वतंत्रता ही समस्त संसारके लिए कल्याणकारक हो सकती है। अतः हमें बड़ेसे बड़ा बलिदान करके प्रभाविनी राष्ट्रशक्ति द्वारा न केवल अपने ही लाभके लिए अपितु समस्त संसारके कल्याणके लिए भारत को पूर्णरूपेण स्वतन्त्र एवं समृद्ध करना होगा। राष्ट्रालोकमें लिखा है कि जो मनुष्य अपने राष्ट्रको स्वतन्त्र बनाना नहीं चाहते उनसे बढ़कर महान्-मूर्ख इस संसारमें और कौन होगा ?

न स्वतन्त्रं स्वराष्ट्रं ये कर्तुमिच्छन्ति मानवाः।
ततोऽधिका महामूर्खाः सन्ति के ऽत्र भुवस्तले ॥

प्रेम अधिक तो किसीसे थोड़ा होता है ? प्रेमका आधार कौन है ? प्रेममें कौन-कौन गुण रहते हैं ? इन प्रश्नोंका समाधान कोई भी कवि यथार्थरूपमें कर न सका।

प्रेम वस्तुतः एक आन्तर वस्तु है, इसको बाह्य-परीक्षाओंसे समझा नहीं जा सकता। किसी वस्तुकी परीक्षा करनी हो तो उसके मूलको जाकर पकड़ लेना चाहिए। दार्शनिकोंका मत है कि प्रेमका केन्द्र अर्थात् मूल "आत्मा" है। प्रेमका वास्तविक स्वरूप भी आत्मा ही है। आत्माके प्रत्यक्ष अनुमान या शब्द रूपी प्रमाणोंसे जानना असम्भव है। आत्माको प्रमाता कहते हैं। प्रमाता रूपी आधार पर आश्रित होकर प्रमाण प्रमेयकी सिद्धि कर सकता है। प्रमाण में अपनी कोई भी शक्ति नहीं। वह तो प्रमाताको शक्ति पर निर्वाह करता है। इस कारण प्रमाताको वह प्रकाशित कैसे कर सकेगा। जिसके प्रकाशसे वह स्वयं प्रकाशित होता है, उसको वह कैसे प्रकाशित कर सकेगा। इससे यह सिद्ध होता है कि प्रमाता रूप आत्माको प्रत्यक्ष आदि प्रमाण प्रकाशित नहीं कर सकते। इसी विचारसे उपनिषद्ने कहा है:--

"विज्ञातारमरे केन विजानीयात्"

तथा "तमेव भान्तमनुभाति सर्वं
तस्य भासा सर्वमिदं विभाति।"

आचार्य उत्पलदेव भी कहते हैं—

"कर्तरि ज्ञातरि स्वात्मन्यादि सिद्धे महेश्वरे।
अजडात्मा निषेधं वा सिद्धिं वा विदधीत कः॥"

यह बताया गया कि -

प्रेमका मूल स्रोत तथा प्रधान केन्द्र भी आत्मा ही है। प्रेम वस्तुतः आत्म स्वरूप ही है। इसी कारण प्रेमका स्वरूप भी आत्माकी भांति शब्द आदि प्रमाणों द्वारा प्रकट नहीं किया जा सकता। इसी कारण प्रेम एक रहस्य वस्तु है। इसीलिए इसका पूरा वर्णन करना असम्भव है। जैसे आत्मा स्वयं ही प्रकाशमान है उसी प्रकारसे प्रेम भी स्वयमेव चमका करता है। इसको दूसरेके प्रकाशकी अपेक्षा नहीं रहती। समय पर स्वयं प्रज्वलित होता रहता है।

आत्मा विश्वरूप है। जो कुछ है आत्मा ही है। इसी प्रकार प्रेम भी विश्वरूप है। परन्तु मायाके बल से आत्माने अपने विश्वरूपको छिपा कर रखा है और अपरिमित होते हुए भी परिमित जैसा प्रतीत होता है। सारा ब्रह्माण्ड आत्मा का शरीर है, फिर भी यह इस प्राण-बुद्धि अथवा भौतिक शरीर ही को केवल अपना स्वरूप मानता है। यह संकुचितता ही आत्माकी जीव दशा है। इस दशामें प्रेम भी संकुचित रूपमें ही प्रतीत होता है। इस शरीरात्म-भाव की दशामें शरीर आदि ही प्रेमका पहिला केन्द्र है। अतः सभी जीव जन्तु सबसे अधिक प्रेम अपने आप (अर्थात् शरीर, प्राण, मन इन्द्रियों) से ही करते हैं। अपने आपसे अधिक प्रिय कोई भी वस्तु नहीं होती। अपने आप ही के सम्बन्धसे अन्य वस्तुएँ भी प्रिय बनती हैं। अपने इस मायीय शरीर आदि स्वरूप का ही एक अंश अपना अपत्य होता है इसी कारण प्रेमका दूसरा पात्र अपत्य होता है। इसीलिए बाह्य वस्तुओंमेंसे सबसे अधिक प्रिय अपत्य ही होता है। इसके अनन्तर उन वस्तुओंका स्थान है जो हमारे शरीर, मन, बुद्धि, इन्द्रियों आदिके अनुकूल हों, जिनसे इनको सुख मिले, इस तृतीय कक्षामें स्त्री, मित्र, आदि आजाते हैं। शरीर आदिसे परम्परित सम्बन्ध रखने वाले व्यक्ति और सुखके बाह्य साधन चतुर्थ कक्षामें आजाते हैं। इनमें भाई, बन्धु, सम्बन्धी पड़ोसी, घर, भूमि, धन, धान्य आदि गिने जा सकते हैं। इस प्रकारसे प्रेमका मण्डल विशाल होता जाता है। सर्वत्र अपने आपके ही सम्बन्धसे प्रेम प्रसार होता है। इसी कारण उपनिषद् कहते हैं—

'न सर्वस्य कामाय सर्वं प्रियं भवति।
आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति॥"

यद्यपि इस संकोच दशामें प्रेम संकुचित जैसा ही प्रतीत होता है, तथापि इसका वास्तविक अपरिमित रूप सर्वथा छिपा ही नहीं रहता। अपने क्षेत्रको यह प्रेम बढ़ाता ही रहता है। और बढ़ाते बढ़ाते जब योगीकी दशाको प्राप्त करता है तो समस्त विश्वको

श्रीकृष्ण-सन्देश

[लेखक—श्री पं० लक्ष्मणनारायण जी गर्दे भू० पू० सम्पादक 'भारतमित्र' 'श्रीकृष्ण-सन्देश' आदि]

भगवान् श्रीकृष्णने अवनीतलपर अवतीर्ण होकर साधुजनोंका परित्राण, दुष्टोंका दलन किया और धर्मसंस्थापन किया।

वे अपने जीवन एवं उपदेशके द्वारा हमें जो दिव्य सन्देश सुना गये उसे भूलकर यदि हम पथ-भ्रष्ट न होजाते तो आज हमारी यह अधोगति न होती! पर हमने वह सन्देश सुनकर अनसुना कर दिया और मनमानी-घरजानी आरम्भ की। नाना पन्थ, नाना सम्प्रदाय, नाना मतमतान्तर चलाये। भक्तिमार्गी ज्ञानमार्गियोंको हृदयहीन और ज्ञान-मार्गी भक्तिमार्गवालोंको बुद्धिविहीन समझने लगे। कोई मायाको चिन्मयी मानने लगा, कोई मृण्मयी। और इस कोरे तर्कवादपर सब आपसमें लड़ने-झगड़ने लगे। उस महान् सत्यको भी भूल गये जिसको ग्रहण किये रहनेसे मूल सिद्धान्तोंमें मतभेद नहीं होता। हम सत्यकी उस वाणीको भूल ही नहीं गये, वरन् उसके अर्थके अनर्थ भी करने लग गये; और इसीका ऐसा भीषण परिणाम हुआ कि लोग धर्मके नामसे अधर्म करने लगे या उनसे अज्ञानवश अधर्म होने लगा। इसी कारण त्यच्युत मानवसमाजमें ऐसे लोग भी उत्पन्न हुए जो धर्मको नहीं मानते, धर्मशास्त्र को नहीं मानते, ईश्वरको भी नहीं मानते। जो कुछ मानते और जानते थे उसकी पूर्ण विस्मृति हो गयी!

भगवान् कृष्णका सन्देश हिन्दू धर्म, तत्वज्ञान और संस्कृतिका सार है। यह प्रत्येक काल, देश, और पात्रके लिये कार्याकार्यव्यवस्थितिका सर्वाङ्गपूर्ण विधान है। इस विधानको सामने रखनेसे और विधानोंकी आवश्यकता नहीं पड़ती। इसलिए सब पन्थों और मतोंके लोग गीतामें कथित इस श्रीकृष्ण-सन्देशको सुनें। स्वार्थवश या अज्ञानवश भक्तिके भ्रममें संसारके कर्मोंको त्याग देनेवाले सुनें—

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

भगवान्के इस वचनका यह अर्थ नहीं है कि तुम जड़ बन जाओ। धर्मपरित्यागका यह अर्थ नहीं कि तुम शिलाखण्डकी भांति निश्चेष्ट पड़े रहो; और कहो कि हमें तो भगवान्ने सब कर्म परित्याग कर भगवान् भगवान्की रट लगानेको कहा है। उन्हींकी शरणागतिमें हमारा कल्याण है। परन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं है—संन्यास भी यह नहीं है, वरन् इसका अर्थ यह है कि अपना समस्त पुरुषार्थ भगवान् को समर्पण कर दो, स्वयं भगवान् हो जाओ, संसार-चक्रको चलानेके लिये उनके हाथके हथियार बन जाओ, यह समझ लो कि तुम कुछ नहीं हो—जो कुछ है वह भगवान् हैं, तुम्हारा अपना कुछ नहीं है—

पुनः अपना ही स्वरूप समझने लगता है। तब यह प्रेम अपने पूर्ण रूपको पुनः प्राप्त-सा करता है। प्रेमकी संकुचित दशा ही जीव भाव तथा संसार दशा है और इसी प्रेमकी यह परिपूर्ण दशा ही मोक्ष तथा ईश्वर दशा कहलाती है। योगकी सर्वोच्च सिद्धि तथा ज्ञान की सर्वोच्च भूमिका भी यह परिपूर्ण प्रेम ही है। इसी पूर्ण प्रेमको पराभक्ति कहते हैं। इसी भक्तिको आचार्य उत्पलदेवजीने "ज्ञानस्य परमा भूमिर्योगस्य परमा दशा।" कहा है। इसी भक्तिकी प्रशंसा उन्होंने अनेक स्थानों पर की है। इसी भक्तिका स्वरूप गीता जी के भक्तियोग नामक अध्यायमें गाया गया है। भक्ति का वास्तविक स्वरूप यह परिपूर्ण प्रेम ही है। इसी प्रकारके प्रेमके उपासक हमें बनना चाहिए। तब कहीं प्रेमके वास्तविक स्वरूपको हम पहचान सकेंगे।

जो कुछ है भगवान्‌का है। इसलिये भगवान्‌के बनकर भगवान्‌का कार्य करो। उसका फल क्या होता है, मत सोचो, क्योंकि उसपर तुम्हारा अधिकार नहीं, वह सब भगवान्‌का है। कभी यदि भूलकर भी फल की कामना करोगे तो अटक जाओगे,—मोहमें फंस जाओगे, स्मृतिको खो बैठोगे, बुद्धिसे कुछ काम न ले सकोगे—प्रकाश तुमसे हट जायगा—अन्धकार छा जायगा। पर यदि कहो कि इन झंझटोंको मोल लेने की क्या आवश्यकता, तो विकर्मदोषका खड्‌ग तुम्हारे सिरपर टंगा है। कर्म न करके भी तुम्हारा काम नहीं चल सकता। प्रकृतिके थपेड़े तुमसे बिना कर्म कराये न मानेंगे। जिसे तुम अकर्म मान बैठे हो वह वास्तवमें अकर्म नहीं—वह तो विकर्म है। इसलिए 'कर्मण्य कर्म यः पश्येत्' इस उक्तिके अनुसार अपने आपमें स्थिर रहकर अपने लिये नहीं, लोकसंग्रहके लिये भगवान्‌के लिये कर्तव्य कर्म करो। संन्यासी भी कर्म करें, क्योंकि कर्मत्यागका अर्थ संन्यास नहीं है। कर्म स्वयं बन्धनकारक नहीं होता, बन्धनका कारक तो कर्मफलकी आकांक्षा है, इसीको दूरसे नमस्कार करो। शान्ति ढूंढते फिरते हो, उसके लिये बेकल हो, पर तुम्हें यह नहीं मालूम कि कर्म भी शान्तिका कारण होता है? भगवानके चलाये हुये चक्रको उल्टा फिरानेमें कहीं शक्तिक्षय मत करो। संसार चर है, उसमें गति है, उसकी प्रभुप्रेरित गतिका विरोध करना उचित नहीं। यह सम्भव भी नहीं। कल्याण इसीमें है कि स्थिर-बुद्धिसे, समत्व-बुद्धिसे, लोकसंग्रहमें सहायक हो ऐसी पद्धतिसे कार्य करो, यही तुम्हारे लिये भगवान कृष्णका सन्देश है।

आजकल बुद्धिवादका बड़ा जोर है और उस बुद्धिवादका स्वरूप हो गया है कोरा कुतर्कवाद। प्रत्येक बात तर्ककी कसौटीपर कसी जाती है। कसौटीपर कसनेमें कोई हानि नहीं, लाभ ही है; क्योंकि अन्ध-श्रद्धा भी तो बड़ी हानिकर वस्तु है। किसी बातको कसौटीपर कसते समय इस बातकी सावधानी रखना भी तो परम आवश्यक है कि बुद्धिवादके झोंकेमें कहीं बुद्धिका अजीर्ण न हो जाय; और कसौटी पर कौन बात खरी उतरी, कौन खोटी, इसका निर्णय करनेमें पक्षपातके चश्मेका उपयोग न होने लगे। इसके सिवा बहुतसी ऐसी बातें भी तो होती हैं जो तर्कसे सिद्ध नहीं होतीं। ऐसी अवस्थामें अपनी बुद्धिके बाहरकी बात समझकर उसे कसौटीपर कसनेकी व्यर्थ चेष्टा करना बुद्धिमत्ता नहीं। कारण, बुद्धिके परे भी तो कोई सत्ता है; और वह ऐसी सत्ता है जिसके बाहर कोई जा ही नहीं सकता—उसकी इच्छाके विरुद्ध एक पत्ता तक नहीं हिल सकता—'यो बुद्धेः परतस्तु सः।' तुम इस स्थलपर तपाकसे उन्हीं भगवान्‌का यह वचन अपने पक्षसमर्थनमें कह सकते हो—

> न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः।
> न कर्मफल संयोगं स्वभावस्तु प्रवर्त्तते ॥
> उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।
> आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः॥

हां, भगवान् कृष्णके ये वाक्य वास्तवमें भक्तान्धोंके नेत्रोंमें ज्ञानज्योति जगानेवाले हैं। इन वचनोंके अनुसार मनुष्योंके हृदयमें सच्ची कार्यकारिणी शक्तिका संचार हो सकता है। ईश्वरके भरोसे सब काम छोड़ हाथपरहाथ धरकर बैठे, मालपुआ उड़ा, तोंदपर हाथ फेर मौज उड़ानेवाले व्यक्तियोंके लिये ये महा-वाक्य उन्हें उनके उत्तरदायित्वका बोध करानेवाले हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं; पर ऐसा दायित्व वहन करना भी तो किस कामका कि दायित्व प्रदान करने-वालेको ही भुला बैठे; और उसकी सत्ताको विस्मरण करके मनमानी-घरजानी करने लग जाय? इसीलिये तो भगवान्‌ने कहा है कि 'तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्य व्यवस्थितौ।' परन्तु आजकल तो ऐसा युग आ गया है कि अनेक कर्मयोगी होनेकी डींग मारने-वाले लोग शास्त्रोंको ही व्यर्थ मानने लगे हैं। इन्हें यह नहीं मालूम कि—"कि कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः।" पर इससे क्या? वे तो कर्तव्याकर्तव्यका झंझट उत्पन्न करनेवाले धर्मशास्त्रके ही शत्रु बन गये हैं—शास्त्रको फूटी आँखों देखना भी अच्छा नहीं

समझते। कोई इस शास्त्रको समुद्रमें डुबो देनेको कहता है, कोई उसमें दियासलाई लगानेकी बात सोचता है, और कोई उसपर दया विचार कर तथा शास्त्रानुयायियोंके साथ सहिष्णुता प्रदर्शित कर उसे अलमारीमें मजबूत तालेके अन्दर बन्द कर देना चाहता है; और तबतक उसे बाहर निकालकर देखनेकी आवश्यकता नहीं समझता जबतक कि वही समय पुनः लौटकर नहीं आ जाता जब उसके प्रकट करनेकी आवश्यकता हुई थी और वह प्रकट किया गया। वे इस बातको नहीं मानते कि शास्त्रके बनाने वाले त्रिकालदर्शी थे, उन्होंने तीनों कालोंके लिये ही शास्त्र-सिद्धान्त बनाये जो त्रिकालाबाधित हैं। उनमें प्रत्येक समय, प्रत्येक परिस्थितिके अनुकूल व्यवस्था मिल सकती है। वचनोंकी व्यवस्थामें मतभेद हो सकता है; परन्तु मूल सिद्धान्तोंमें मतभेदकी कोई गुंजाइश ही नहीं है। पर इससे हमारे तर्क-विद्या-निष्णात व्यक्तियोंको क्या मतलब ? वे तो ईश्वरकी सत्ता नहीं मानते, और यदि मानते भी हैं तो केवल इस रूपमें कि ईश्वर है तो; पर मारने-जिलानेके सिवा उसका और क्या काम है ? इस बातकी क्या आवश्यकता है कि हम अपने प्रत्येक कार्यमें ईश्वरसे सलाह पूछते फिरें ? हमें इस संसारमें रहना है अतएव हम अपने जीवनके उपयोगी नियम स्वतः निर्माण कर लेंगे। पर हमें उनकी बुद्धिपर तरस आता है कि वे इतना भी नहीं समझते कि भगवान् की सत्ता उनके न माननेसे क्या चली जायगी ? ऐसे ही लोगोंको गीतामें आसुरी सम्पदावाले कहा है—

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ ! सम्पदमासुरीम् ॥

अर्थात् दंभ, दर्प, अभिमान, पारुष्य और अज्ञान, ये आसुरी संपदामें जन्मे हुए पुरुषके लक्षण हैं। ये आसुरी सम्पदामें उत्पन्न मनुष्य अपने बराबर किसीको न समझ मनमाने ढङ्गसे मनमाने कार्य करते हैं; और अन्तमें अज्ञानसे विमोहित, चित्तकी नाना भावनाओंसे विभ्रान्त, मोहजालसे घिरे हुए ये व्यक्ति नरकमें गिरते हैं, क्योंकि जो शास्त्रकी विधिको त्यागकर अपनी इच्छासे कार्य करता है वह न सिद्धिको पाता है, न सुखको और न परमगतिको ही। इसीलिये तो भगवान्‌ने यह उपदेश दिया है कि "तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्य व्यवस्थितौ।" और इसीलिये श्रीकृष्णका यह सन्देश आस्तिक-नास्तिक सभीके लिये कल्याणकर है।

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ॥

ईश्वर प्राणिमात्रके हृदयमें वास करता है और अपनी मायाके चक्रपर उन्हें बैठाकर घुमा रहा है। यदि मनुष्य ऐसा समझ लें तो उसके बतलाये हुए भक्ति-ज्ञान-समन्वित निष्काम-कर्मयोगके मार्गसे दिव्य-ज्ञान लाभ कर, दिव्य कार्य कर, अपना तथा अन्य लोगोंका उद्धार कर, इस जड़ जगत्से ऊपर उठ कर उस अनन्त महाशक्तिमें अपने आपको लीन कर सकता है। दिव्य जन्म कर्मका स्वयं अनुभव कर सकता है। बुद्धिबल बड़ा है, नैतिक बल भी बड़ा है, पर वह बल सबसे बड़ा है, जिसका उद्गमस्थान बुद्धिके परे हृदयक्षीरसागरमें है। वह महाशक्ति है, अनन्त प्रकाश है और परम सुखधाम है। भारतका भार सदा उसीपर रहा है, उसका उद्धार सदा उसीसे हुआ है। उसका आश्रय ही वह दैवी शक्ति है जिसके सामने मनुष्यका बुद्धिबल हार जाता है—रावण और कंस धराशायी होते हैं। उसका आश्रय करो और निमित्तमात्र होकर कर्मक्षेत्रमें अग्रसर हो, यही भगवान् श्रीकृष्णका सन्देश है।

———

खुले प्रश्नोंका उत्तर



'श्रीस्वाध्याय' सं० २००२ के 'वसन्ताङ्क' पृष्ठ ४३ में श्री पं० गोविन्ददत्तजी मिश्र महोदयने केवल "श्री मार्तण्ड पञ्चाङ्ग" पर खुला प्रश्न किया है, जिसमें लिखा है कि—यदि दो चैत्रोंमें प्रथम चैत्र शुक्ल १ को वर्षका राजा और द्वि० चैत्र शुक्ल १ को वर्षारम्भ वर्षफल श्रवण तैलाभ्यङ्गके विधानका कोई प्रमाण हो तो प्रकाशित करनेकी कृपा करें।

उत्तरमें निवेदन हैं कि यदि दो चैत्र हों तो प्रथम (अधिक) चैत्र शुक्ल १ को ही वर्षका राजा और वर्षका आरम्भ होता है। तद्यथा कल्पलतायाम्—

संवत्सरस्य चान्तस्य कुहुर्भवति यद्दिने।
अपरो वासरो यो सो सोयं राजा विनिर्दिशेत्॥

यहां वर्षान्तके चैत्र कृष्णकी अमावस्यासे अपर दिनका वाराधिपति अभीष्ट है, चाहे वह शुद्ध पक्षका हो वा अधिक पक्षका, इसी पक्षकी पुष्टि निर्णय-दीपिकाकारने भी किया है। वर्षारम्भके विषयमें श्री-राघवाचार्य लिखते हैं—"चैत्रमलमासे सति तस्मिन्नेव संवत्सरारम्भः मलमासस्यागामिवर्षान्तः पातित्वात्।" इस प्रमाणसे स्पष्ट है कि वर्षारम्भ अधिक चैत्र शुक्ल को मानना शास्त्र सम्मत है। अब रहा वर्षफल-श्रवण, निम्बपत्र-भक्षण, तैलाभ्यङ्गादिका विधान, सो धर्मसिन्धुके द्वितीय परिच्छेदमें देखिये—

चैत्रस्यमलमासत्वे वत्सरारम्भ निमित्तकं तैलाभ्यङ्ग सङ्कल्पादौ नूतनवत्सर-नाम-कीर्तनाधारम्भश्च मलमास प्रतिपद्येव कुर्यात्। प्रतिगृहं ध्वजारोपणं निम्बपत्राशनं वत्सरादि फल श्रवणं नवरात्रारम्भो नवरात्रोत्सवादि निमित्ता-भ्यङ्गादिश्च शुद्धमास प्रतिपदि कार्यः॥

उपरोक्त धर्मसिन्धुके प्रमाणसे स्फुट सिद्ध हो रहा है कि यदि दो चैत्र हों तो वत्सरारम्भ निमित्तक तैलाभ्यङ्ग एवं सङ्कल्पादिमें नूतन संवत्का नामोच्चारण मलमासकी प्रतिपदाको ही करे। और प्रतिगृहमें ध्वजारोपण निम्बपत्र-भक्षण वर्षफल श्रवण एवं नवरात्रारम्भ निमित्तक तैलाभ्यङ्गादि शुद्ध (द्वितीय) चैत्र शुक्ल १ को करे।

इस प्रमाणसे यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि यदि चैत्राधिकमास हो तो वत्सरारम्भ निमित्तक और वासन्त नवरात्रोत्सव निमित्तक ऐसे तैलाभ्यङ्ग दो बार होता है और निम्बपत्र-भक्षण, वर्षफल-श्रवणादि कृत्य शुद्ध चैत्र शु० १ को ही शास्त्र विहित है। मेरे पास इस विषयमें और भी कई प्रमाण हैं। विस्तार भयसे नहीं लिखे गये। कभी प्रत्यक्ष समागम होनेपर आचूलमूल बतला सकता हूँ। हां, केवल वर्षफल-श्रवण मात्रपर युक्ति प्रमाण भिन्न-भिन्न मिलते हैं। स्मरण रहे आपने जो खुला प्रश्न श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्ग पर किया है यही प्रश्न काशीसे हिन्दू विश्वविद्यालयके धर्म-शास्त्र और ज्योतिष-शास्त्र विभाग द्वारा प्रकाशित श्री० महामना पं० मदनमोहन मालवीय आदि द्वारा सम्पादित श्री विश्व पञ्चाङ्गपर भी लागू होता है।

निर्मत्सराणां सतामनुचरः—
मुकुन्दवल्लभः।

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

[लेखक—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]



आषाढ़ शुक्ल	१० गुरुवार ता० १६ जुलाई	श्रीस्वाध्याय सदन-स्थापना दिवस
	११ शुक्रवार ता० २० ,,	देवशयनी एकादशी व्रत स्मार्त्तोंके लिये, चतुर्मासारम्भ
	११ शनिवार ता० २१ ,,	देवशयनी ११ व्रत वैष्णवोंका सम्राज्ञी एलिजाबेथ-
	१२ रविवार ता० २२ ,,	प्रदोष व्रत [जन्मदिन
	१४ मङ्गलवार ता. २४ ,,	सत्यव्रत, वायु परीक्षा ध्वजारोपण
	१५ बुधवार ता० २५ ,,	श्री गुरुपूजा, व्यासपूजा, शबरात
श्रावण कृष्णा	४ शनिवार ता० २८ ,,	श्री गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय नवीन स्टे० टा० १०।५५
	११ शनिवार ता० ४ अगस्त	कामिका एकादशी व्रत
	१२ रविवार ता० ५ ,,	प्रदोष व्रत
	३० मङ्गलवार ता० ७ ,,	हरियाली अमावस
श्रावण शुक्ला	१ बुधवार ता० ८ ,,	नक्तव्रतारम्भ
	२ गुरुवार ता० ९ ,,	चन्द्रदर्शन
	२ शुक्रवार ता० १० ,,	रमजान रोजा प्रारम्भ
	३ शनिवार ता० ११ ,,	मधुश्रवा ३ मेलातीज, विनायकी ४
	५ सोमवार ता० १३ ,,	नागपंचमी कल्कि जयन्ती
	७ बुधवार ता० १५ ,,	श्री० गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती; नेपोलियन बोनापार्ट जन्मदिन
	८ गुरुवार ता० १६ ,,	सिंह संक्रान्ति मु० ३० पुण्यकाल दुपहर तक, दुर्गा ८ मेला श्री नयनादेवी व चिन्तपूर्णी
	११ रविवार ता० १९ ,,	पुत्रदा एकादशी व्रत
	१३ मङ्गलवार ता०२१ ,,	भौमप्रदोष व्रत
	१५ गुरुवार ता० २३ ,,	उपाकर्म ऋषितर्पणी रक्षाबन्धन सत्यव्रत श्री अमरनाथ (काश्मीर) यात्रा
भाद्रपद कृष्णा	३ रविवार ता० २६ ,,	कज्जली ३ श्री गणेश ४ चन्द्रोदय नवीन स्टे० टा० १०।९
	६ मङ्गलवार ता० २८ ,,	चन्दन ६ व्रत
	८ गुरुवार ता० ३० ,,	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (जयन्ती)व्रत चन्द्रोदय नवीन स्टे० टा० घं० १२।५७
	९ शुक्रवार ता० ३१ ,,	गुग्गा ९
	११ रविवार ता० २ सितम्बर	अजा एकादशी व्रत
	१२ सोमवार ता० ३ ,,	सोमप्रदोष व्रत गोवत्स १२

भाद्रपद कृष्ण	३० गुरुवार ता० ६	सितम्बर	कुशोत्पाटिनी ३० सतीपूजा
भाद्रपद शुक्ला	२ शनिवार ता० ८	,,	चन्द्र दर्शन
	३ रविवार ता० ९	,,	हरितालिका ३ मङ्गलागौरीव्रत
	४ सोमवार ता० १०	,,	पत्थर (कलङ्क) ४ चन्द्र दर्शन निषिद्ध चन्द्रास्त न० स्टे० टा० घं० १० मि० ३
	५ मङ्गलवार ता०११	,,	ऋषि ५ जैनपर्यूषणोत्सवारम्भ
	७ शुक्रवार ता० १४	,,	श्री दधीचि जयन्ती
	८ शनिवार ता० १५	,,	श्री १०५ मान् बघाट नरेश महोदयका जन्मोत्सव
	९ रविवार ता० १६	,,	कन्या संक्रान्ति मु० ३० पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर श्रीचन्द्रनवमी
	११ मङ्गलवार ता०१८	,,	पद्मा (जलझूलनी) एकादशी व्रत, वामन द्वादशी मेला अम्बाला पटियाला
	१२ बुधवार ता० १९	,,	प्रदोष व्रत
	१३ गुरुवार ता० २०	,,	अनन्त १४ व्रत, श्री १०५ मान् रावराजा कैप्टन गिरिधारीशरणसिंह जन्मोत्सव
	१५ शुक्रवार ता० २१	,,	पूर्णिमा सत्यव्रत प्रौष्ठपदी श्राद्ध
आश्विन कृष्णा	१ शनिवार ता० २२	,,	महालया (पितृपक्षा) रम्भ
	३ सोमवार ता० २४	,,	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय न० स्टे० टा० ९ । २३
	९ शनिवार ता० २९	,,	सौभाग्य ९
	११ सोमवार ता० १	अक्टूबर	इन्दिरा एकादशी व्रत
	१३ बुधवार ता० ३	,,	प्रदोष व्रत
	१३ गुरुवार ता० ४	,,	शस्त्राग्निविषादिहतानां श्राद्धम्
	१४ शुक्रवार ता० ५	,,	सर्वपितृ ३० श्राद्ध
	३० शनिवार ता० ६	,,	शनैश्चरी ३० गजच्छाया श्राद्ध महालय समाप्तिः
आश्विन शुक्ला	१ रविवार ता० ७	,,	चन्द्रदर्शन शारदीय नवरात्रारम्भ घटस्थापन मातामहश्राद्ध
	५ गुरुवार ता० ११	,,	ललिता ५ शान्ति ५
	६ शुक्रवार ता० १२	,,	श्री सरस्वती आवाहन
	७ शनिवार ता० १३	,,	श्री सरस्वती पूजन
	८ रविवार ता० १४	,,	महाष्टमी श्रीसरस्वती बलिदान मेला ज्वालामुखी व तारादेवी
	९ सोमवार ता० १५	,,	महा ९ श्री सरस्वती विसर्जन नवरात्रोत्थापन
	१० मङ्गलवार ता० १६	,,	विजया १० (दशहरा) राजचिह्न पूजा, शमी वृक्ष पूजा अपराजिता पूजा, सीमोल्लङ्घन

वेदस्वरूप-निरूपण (ख)

[लेखक—विद्याभूषण विद्यावागीश श्री पं० दीनानाथ जी शर्मा शास्त्री, सारस्वत]

(गताङ्कसे आगे)



२६—जो कि स्वा० दयानन्दजीने ब्राह्मणभाग के वेदत्वका निषेध किया है वह भी ब्राह्मणभागके वेद होनेमें प्रमाण है। इस विषयमें स्वामीजीसे प्रष्टव्य यह है कि आपने जो ब्राह्मणभागके वेदत्वका निषेध किया है; वह वेदत्वकी प्राप्ति होने से किया है, वा अप्राप्ति होने से ? अप्राप्ति होने पर यह कहना ठीक नहीं हो सकता, क्योंकि—'प्राप्तौ सत्यां निषेधः' यह न्याय, प्राप्ति होने पर निषेध बता रहा है, नहीं तो स्वामीजीने गृह्यसूत्र वा मनुस्मृति आदियोंके वेदत्वका खण्डन क्यों नहीं किया ? यदि स्वामी जी कहें—ब्राह्मणभागकी वेदत्व प्राप्तिमें ही हमने वेदत्व का निषेध किया है; तो फिर प्रष्टव्य यह है कि—उनके वेदत्वकी प्राप्ति आपने कहांसे पाई ? यदि लोकव्यवहार इसमें कारण कहा जाए; तो वह व्यवहार प्राचीन है या अर्वाचीन ? वह व्यवहार अर्वाचीन है, यह बात ठीक नहीं; क्योंकि—प्राचीन लोग वैसा व्यवहार मान गये हैं। यदि वह व्यवहार प्राचीन तथा पारम्परिक है; तब स्वामी जीका पक्ष कट गया।

यदि कहा जाए कि—आपस्तम्ब कात्यायन आदियों ने 'मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्' इत्यादि वाक्यसे यह व्यवहार चलाया है; तो वह भी ठीक नहीं। इस वाक्यमें यह नहीं कहा गया कि—'मन्त्र और ब्राह्मण का नाम वेद हो जावे' बल्कि इसमें तो कहा गया है कि—इन दोनोंका नाम वेद प्राचीनकालसे चला आ रहा है हमने नया नहीं चलाया। यदि स्वामीजी वा उनका कोई अनुयायी इस बातको न माने; तो फिर मन्त्रभागमें वेदत्व व्यवहार भी अर्वाचीन मानना पड़ेगा क्योंकि—बोधायनादिके उक्त वाक्यमें मन्त्र और ब्राह्मणको एक साथ कहा गया है, केवल ब्राह्मण-भागका नाम नहीं लिया गया। इससे स्पष्ट है कि—वैदिककालसे लेकर आर्य-समाजके प्रवर्त्तक स्वा० दयानन्दजीसे कुछ काल पहले तक मन्त्रभागकी भांति ब्राह्मणभाग भी वेद माना जाता रहा, केवल स्वा० दयानन्दजीके समयसे ही सनातनधर्मको संकुचित करनेके लिये ब्राह्मणभागकी अवेदताकी बातचीत चल पड़ी। तब यही व्यवहार अर्वाचीन और अश्रद्धेय सिद्ध हुआ।

३०—वास्तवमें स्वा० दयानन्दजीके अधीन ईश्वर के मतमें भी ब्राह्मणभाग वेद है। स्वामीजीने सत्यार्थप्रकाशके २५ पृष्ठमें कहा है कि—"कुलीन शूद्र हो तो उसको मन्त्रसंहिता छोड़के सब शास्त्र पढ़ावे।" इसी प्रकार अपनी संस्कारविधिके उपनयन तथा वेदारम्भ संस्कारमें भी स्वामीजीने शूद्रादिको उपनयन तथा वेदारम्भका अधिकार नहीं दिया। फिर उन्हीं स्वामीजीने सत्यार्थप्रकाशके ४४ पृष्ठमें ईश्वरके प्रमाण से शूद्रोंको भी वेदाधिकार दिया है। पहले शूद्रोंको मन्त्रभागमें अधिकार न देनेसे, पीछे शूद्रोंको वेदका अधिकार देनेसे यहां पर स्वाम्यधीन ईश्वरके मतमें भी वेद यहां पर ब्राह्मणभाग ही इष्ट है, नहीं तो स्वामिमतानुसार मन्त्रभागमें अनधिकृत शूद्रको ईश्वर मन्त्रभागका अधिकार कैसे दे सकता है ?

और देखिये—स्वा० दयानन्दजीने वैदिक सन्ध्या बनाई है। उसमें 'ॐ भूः पुनातु शिरसि' यह मन्त्र 'ॐ वाक् वाक्' यह मन्त्र, 'ॐ भूः ॐ भुवः, ॐ स्वः, ॐ महः' इत्यादि सप्तव्याहृति मन्त्र—स्वा० दयानन्द सम्मत वेद अर्थात् मन्त्रभागमें नहीं आते; तब वैदिक सन्ध्यामें क्यों रक्खे गये ? इससे स्पष्ट है कि—यह मन्त्र किसी अन्य शाखाके वा किसी ब्राह्मणके हैं। आर्यसमाज सम्मत वेद तो छपे हुए मिलते ही हैं, परन्तु अन्य शाखाएं वा बहुतसे ब्राह्मण अभी तक

लुप्त हैं, तब यह मन्त्र उनमें मिलने सम्भव हैं। इस प्रकार शाखा, ब्राह्मण वेद ही हुए।

एक और प्रबल हेतु भी देखिये—स्वामी दयानन्दजीने सत्यार्थप्रकाशके ४२ पृष्ठ में कहा है—'हमारा मत वेद है अर्थात् — जो-जो वेदमें करने और छोड़ने की शिक्षा की है, उस २ का हम यथावत् करना छोड़ना मानते हैं; जिस लिये वेद हमको मान्य है, इस लिये हमारा मत वेद है, (तीसरा समुल्लास) यह स्वामीजीका वाक्य तब घट सकता है कि—जब सभी शाखाएं तथा सभी ब्राह्मण जिसमें उपनिषद्, तथा आरण्यकभाग भी आजाता है—इन्हें वेद मान लिया जावे, क्योंकि—वे अपने माने हुए सभी विधि निषेध स्वसम्मत वेदों (चार ग्रन्थों) से कभी नहीं दिखला सकते।

कुछ और भी देखिये—स्वा० दयानन्दजीने वेदाङ्गप्रकाश बनाया है—जिसमें अष्टाध्यायीकी व्याख्या की गई है। उससे हम यहां पर कई वैदिक सूत्र उद्धृत करते हैं, जिनके स्वामीजीने उदाहरण वेदसे दिये हैं। पर ढूंढने पर वे स्वामीजीसे माने हुए वेद में नहीं मिलते, तब स्पष्ट है कि सभी शाखाएं तथा ब्राह्मणभाग भी वेद हैं, क्योंकि—वे उन्हींमें मिलते हैं, तथा मिलने सम्भव हैं, क्योंकि बहुत सी शाखाएं तथा ब्राह्मण अब नहीं मिलते, यह हम 'वेदस्वरूप निरूपण (क)' में श्रीस्वाध्यायकी ३।४ संख्यामें बता ही चुके हैं, अब देखिये—

वेदाङ्गप्रकाश (आख्यातिक) के ३२८ पृष्ठमें स्वा० दयानन्दजीने 'बहुलं छन्दसि' ३।२।८८ इस वैदिक सूत्रका उदाहरण 'मातृहा सप्तमं नरकं विशेत्' यह दिया है, पर यह उनके माने हुए वेदमें नहीं, किन्तु ब्राह्मणभागमें है। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिकाके ३८० पृष्ठमें 'उपसंवादाशङ्कयोश्च' ३।४।८ इस वैदिक सूत्रका उदाहरण 'नेजिह्मयन्तो नरकं पताम' दिया है। निरुक्तमें भी इसको उद्धृत किया गया है। परन्तु यह स्वामीजीके माने हुए वेदमें नहीं, किन्तु अन्य शाखामें है। अन्य सूत्र देखिये—'छन्दसि निष्टर्क्य' ३।१।१२३ इसका उदाहरण २६८ पृष्ठ आख्यातिकमें स्वामीजीने निष्टर्क्यं चिन्वीत पशु कामः' यह दिया है, पर यह स्वामीजीके माने हुए वेदमें नहीं, किन्तु ब्राह्मणभागमें है। अन्य भी बहुतसे उदाहरण हैं, कुछ आगे भी देंगे। इससे स्पष्ट है कि—स्वामीजीके मतानुसार भी ब्राह्मणभाग वेद सिद्ध हैं।

अन्तिम हेतु स्वा० दयानन्दजीने ब्राह्मणभागकी अवेदतामें ऋग्वेदादिभाष्यभूमिकामें दिया था—'मनुष्य बुद्धिरचितत्वाच्च' (६) इति। परन्तु ब्राह्मणभागमें वह कौन सी मनुष्य बुद्धि है, जो मन्त्रभागमें नहीं; यह स्वामीजीने सिद्ध नहीं किया। तब यह हेतु साध्य होनेसे हेत्वाभास सिद्ध हो गया। इस प्रकार उनके छहों हेतुओंका सम्यक् प्रत्युत्तर हो जानेसे ब्राह्मणभाग भी मन्त्रभागकी भांति स्पष्ट ही वेद सिद्ध हो गया।

एक आक्षेप यह भी होता है कि—'ऋग्वेद आदि के साथ वेद शब्द वा संहिता शब्दका प्रयोग होता है, शतपथ आदिके साथ नहीं; तब ब्राह्मणभाग वेद कैसे हो सकता है?' यह भी बात ठीक नहीं; ऐसा होने पर तो आयुर्वेद, धनुर्वेद, गन्धर्ववेद, अर्थवेद, सर्पवेद, पिशाचवेद, पुराणवेद, सुश्रुत संहिता, चरकसंहिता, अत्रिसंहिता, भेलसंहिता, हारीतसंहिता, इनके साथ भी वेद वा संहिता शब्द मिला है; तब क्या वादी इनको भी वेद मानेंगे? मन्त्रभागमें 'तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः' यजुः ३१।७ इत्यादिमें ऋक् आदिके साथ वेदशब्दका प्रयोग नहीं मिलता, प्राचीनकालमें इन्ही चारों वेदोंके शाकल्यसंहिता, माध्यन्दिनीसंहिता, तैत्तरीयसंहिता, काण्वसंहिता, कौथुमीसंहिता, शौनकीसंहिता आदि नाम प्रसिद्ध होनेसे वेदशब्द न मिलनेसे मन्त्रभागको भी वेद न माना जाए? परन्तु जब प्राचीन लोग मन्त्रभागकी भांति ब्राह्मणभागको भी 'ऋषि' कहते हैं, वेदका जहाँ उदाहरण देना हो, वहां ब्राह्मणभागका उदाहरण देते हैं; उसे आम्नाय श्रुति आदि नामसे कहते हैं, तब वह स्पष्ट वेद है। कुछ उत्तर आगे भी दिया जायगा।

स्वा० दयानन्द आदि ब्राह्मणभाग वा मन्त्रभाग शब्दके साथ जो कि 'भाग' शब्दको जोड़ते हैं; यह

भी ब्राह्मणभागके वेदत्वमें प्रमाण है। देखिये—भाग का भागी अवश्य हुआ करता है। ब्राह्मणभागका भागी मन्त्रभाग नहीं है, क्योंकि वह भी तो 'भाग' शब्दसे कहा जाता है। स्वा० दयानन्द आदि भी उसे भाग शब्द वाच्य मानते हैं, देखिये—'वेद मन्त्रभाग और ब्राह्मण व्याख्याभाग हैं, स० प्र० ७ पृ० १२७ 'चारों वेदों (ईश्वर प्रणीत संहिता मन्त्रभाग)' स० प्र० स्वमन्तव्यामन्तव्य सं० १ पृ० ३८३। 'महाभाष्य-कारेण मन्त्रभागस्यैव वेदसंज्ञां मत्वा' ऋग्० भा० भू० पृष्ठ ८५। 'अतो नात्र मन्त्रभागे इतिहास लेशोऽप्यस्ति' ऋ० भा० भू० पृ० ८१—८२ 'फिर ब्राह्मणभाग को भी' ऋ० भा० भू० पृ० ८१ 'जिसमें जगत्की उत्पत्ति आदि का वर्णन है, उस ब्राह्मणभागका नाम पुराण है' पृ०८४ इस प्रकार मन्त्रभाग वा ब्राह्मणभाग दोनों भाग ही सिद्ध हुए। इसलिये अमरकोषमें भी कहा है—'वेदभेदे गुह्यवादे मन्त्रः' ३।३।१६७ मेदिनीकोषमें भी कहा है—'मन्त्रो वेदविशेषे स्यात्'। शङ्करमिश्र कृत वैशेषिक-दर्शनके ८।१।२ सूत्रके उपस्कारमें लिखा है—'ब्राह्मण-मिह वेदभागः'। २।४।८६ अमरकोषके श्लोककी टीका रामाश्रमीमें मेदिनीकोषका प्रमाण है—'ब्राह्मणं ब्रह्म-संघाते वेदभागे नपुंसकम्'। इस प्रकार यह दोनों भाग हुए। न्यायविस्तरकारिकामें भी कहा है-'मंत्रश्च ब्राह्मणं चेति द्वौ भागौ'। श्रीतुलसीरामस्वामीने अपने 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिकेन्दूपराग' में जो इस वचनको अमान्य लिखा है—यह निष्प्रमाण है।

फलतः—मन्त्र और ब्राह्मण यह दोनों भाग ही सिद्ध हुए; भागी सिद्ध हुआ वेद, अर्थात्—यह दोनों भाग मिल कर वेद बनता है। तो जब मन्त्रभागको वादियोंने वेद मान लिया; तब ब्राह्मणभाग भी निर्विवाद वेद सिद्ध हो गया।

आजकल जो ब्राह्मणभागकी तथा शाखाओंकी अवेदताके लिए प्रयत्न किया जाता है, उसमें भी एक रहस्य हैं, वह यह है कि—उससे तथा शाखाओं-से सनातनधर्मके बहुतसे सिद्धान्त सिद्ध होते हैं। तब उनकी वैदिकता न हो जाए, और वेदमार्ग संकुचित हो जावें; इसी लिए यह सारा षड्यन्त्र खड़ा किया गया है। विद्वानोंको इधर गम्भीर विचार करना चाहिये।

वास्तवमें जैसे ऋग्वेदादि मन्त्रभाग परमात्माका श्वास है, वैसे ही ब्राह्मणभाग भी। इसलिए शतपथ-ब्राह्मणमें कहा गया है—"अरे अस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतद् ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्गिरसः", इतिहासः, पुराणं, विद्या, उपनिषदः, श्लोका सूत्राणि, अनुव्याख्यानानि, व्याख्यानानि, अस्यैवैतानि इति। १४।५।४।१० इस कण्डिकामें ऋक्आदि रूपसे मन्त्रभाग चार प्रकारका अभीष्ट है और ब्राह्मणभाग इतिहास आदि रूपसे आठ प्रकारका अभीष्ट है। दोनों ही को परमात्माका श्वास कहा गया है। इसीलिए तैत्तिरीया-रण्यकके भाष्यमें उक्त शतपथके वचनका सायणने आठवें प्रपाठकके २ य अनुवाकमें (पूना मुद्रितसंस्करण पृ० ५६३) यों व्याख्यान किया है—'वेदो हि मन्त्र-ब्राह्मणभेदेन द्विविधः ब्राह्मणं च अष्टधा भिन्नम्। तद्भे-दास्तु वाजसनेयिभिराम्नायन्ते—'इतिहासः, पुराणं, विद्या, उपनिषदः, श्लोकाः' इत्यादि। आगे सायणने ब्राह्मणभागसे उनके उदाहरण दिये हैं।

आर्यसामाजिक पण्डित छुट्टनलालजीने उक्त कण्डिकामें 'श्लोकाः सूत्राणि' इत्यादि देख कर अपने 'वेद प्रकाश' पत्रमें उक्त कण्डिकाके लिए शङ्का उठाई हैं कि—'तब तो नास्तिकोंके श्लोक तथा सूत्र भी परमात्माके निःश्वास हो जानेसे प्रमाण मानने पड़ जायेंगे।' यह शङ्का करके उन्होंने उक्त कण्डिकाका अर्थ यों किया है—'ऋक् आदि तो उसी महाभूत (परमेश्वर) के श्वास हैं, इतिहास, पुराण, श्लोक, सूत्र आदि तो 'एतानि अस्यैव निःश्वसितानि' अर्थात् वे जीवके श्वास हैं, यहां पर श्री छुट्टनलालजी कहते हैं कि—'अस्यैव' से यहां जीवका अभिप्राय हैं। तब वे जीवोक्त होनेसे पौरुषेय तथा परतः प्रमाण हुए।' इस प्रकार जो श्री छुट्टनलाल स्वामीने अन्वय वा अर्थ जोड़ा है, उसमें कारण आठ प्रकारके भेदवाले ब्राह्मणभागका अज्ञान ही है। उक्तकण्डिका-में नास्तिक आदियोंके श्लोक, सूत्र आदि अभीष्ट नहीं; बल्कि ब्राह्मणभागके आठ भेद अभीष्ट हैं,

यह हमने सायणभाष्यसे स्पष्ट कर दिया है। तब ब्राह्मणभाग भी महाभूत परमात्माका निःश्वासरूप होनेसे अपौरुषेय तथा स्वतः प्रमाण सिद्ध हुआ।

यहां पर श्री छुट्टनलालस्वामीका जीव-परक अर्थ सर्वथा अनुपपन्न है, क्योंकि—'अस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतद्, यद्-ऋग्वेदः' इस प्रकार 'इदम्' शब्द-से उपक्रम किया गया है, फिर 'अस्यैव एतानि' उसी 'इदम्' शब्दसे उपसंहार किया गया है। तब उपक्रम तथा उपसंहारकी एकताके अनिवार्य होनेसे 'अस्य' 'इदम्' इस पदसे बोध्य महाभूत परमात्मा ही है। इसी लिए इसीकी दृढ़ताके लिए 'अस्यैव' यह यहां पर 'एव' शब्द भी दिया गया है। जीवका तो यहां प्रकरण ही नहीं है, फिर उसका ग्रहण कैसे हो सकता है। हां, यदि ऋक् आदिके प्रकट करने-वालेके लिए 'तस्य' इस प्रकार 'तद्' शब्द होता, पुराणादि ब्राह्मणभागके प्रकट करनेवालेके लिए 'अस्य' इस प्रकार 'इदम्' शब्द होता, तब तो कथ-ञ्चित् श्री छुट्टनलालका पक्ष सिद्ध हो सकता था; पर अब नहीं। दोनों स्थानों पर 'इदम्' शब्द एक (समान) का ही ग्राहक है। इसीलिए ही इससे पूर्व 'अयं च लोकः, परश्च लोकः, सर्वाणि च भूतानि अस्यैवैतानि सर्वाणि निःश्वसितानि' यह कहा गया है। क्या सब प्राणी तथा इहलोक परलोकको जीव बनाता है? कभी नहीं। इस प्रकार 'वेदप्रकाश' में प्रकाशित श्री छुट्टनलालजीका मत निरस्त हो गया।

जब पूर्व कहे हुए प्रकारसे चार प्रकारके ऋक् आदि मन्त्र, और आठ प्रकारके ब्राह्मण—यह दोनों ही ईश्वरके श्वासरूप माने गये हैं; दोनोंका आविर्भाव प्रकार भी जब समान कहा गया है, तब दोनों ही अपौरुषेय, दोनों ही ईश्वरोक्त, दोनों ही समान वेद तथा समान स्वतः प्रमाण सिद्ध हुए। यह शत पथका वचन स्वा० दयानन्दजीको भी स्वीकृत है; तभी उन्होंने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिकाके दसवें पृष्ठमें अपने पक्षकी पुष्टिके लिए उद्धृत किया है। परन्तु 'इतिहासः, पुराणम्' इत्यादि जो आगेका पाठ था, उसे उन्होंने लोकदृष्टिसे छिपा लिया, क्योंकि इससे उनका मत कटता था। उन्होंने स्वयम् ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिकाके ८२-८३ पृष्ठोंमें पुराण-इतिहास आदि शब्दसे ब्राह्मणभागको ही माना है। पर यहां पर जो यह बात छिपा दी गई, इससे उन्होंने अपने पक्षकी निर्बलताको स्पष्ट कर दिया।

कई लोग 'बहुभक्तिवादीनि हि ब्राह्मणानि भवन्ति' ७।२४।६ यह यास्कवचन निरुक्तसे उद्धृत करके ब्राह्मणभागकी अप्रमाणता सिद्ध करनेके लिए प्रयत्न करते हैं और कहते हैं कि "जब यास्कने ब्राह्मणभागको अनादर दृष्टि से देखा है, तब उसका प्रमाण कैसा? और वह वेद ही कैसा?" पर यह आक्षेप निरर्थक है। इस निरुक्तके वचनने ब्राह्मण-भागकी अप्रमाणता नहीं की, किन्तु इसका यह आशय है कि—"ब्राह्मणभागमें एक शब्दके बहुतसे अर्थ हुआ करते हैं। तब मन्त्रभागमें उस शब्दका यह अर्थ है, यह अर्थ नहीं — इस प्रकार अपना वचनमात्र न कह कर वहां प्रकरण आदिसे नियत अर्थ जान लेना चाहिए, अन्धाधुन्ध अर्थ अपनी इच्छानुसार न करते चले जाना चाहिये। यह आशय है। तब इसमें ब्राह्मणभागकी अप्रमाणता क्या हुई? निरुक्तकार अपने अर्थकी पुष्टिमें बहुत जगह ब्राह्मणभागका प्रमाण दिया करता है। यदि वह ब्राह्मणभागको अनादरकी दृष्टिसे देखता; तब ऐसा क्यों करता? इस कारण वादियोंका यह आक्षेप निर्मूल है।

कई लोग जिनमें श्री सत्यव्रत सामश्रमी आदि प्रमुख हैं, ब्राह्मणभागको वेदभिन्न सिद्ध करनेके लिए एक नई कल्पना करते हैं। वे कहते हैं कि—"ब्राह्मणभागकी वेदता सूत्रकालसे जारी हुई है; उससे पूर्व ब्राह्मणभाग वेद नहीं माना गया।" इस कल्पनामें भी रहस्य है। उन्होंने जिस किसी प्राचीन ग्रन्थमें दौड़ लगाई, तो उन्होंने अनुभव किया कि सभी जगह ब्राह्मणोंको वेद कहा गया है। तब उन्होंने इस व्याजको आविष्कृत किया। वे लोग सूत्रकालसे पूर्व वेदकाल मानते हैं। तब यदि मन्त्र ब्राह्मणात्मक वेदमें अपने आपको वेद नहीं बताया

गया, सूत्रकारोंने ही मन्त्र-ब्राह्मण दोनोंकी वेदता सिद्ध की; तब वह वेदता एकमात्र मन्त्रभागकी कैसे हो सकती है? और वह वेदता ब्राह्मणभागकी क्यों नहीं हो सकती? मन्त्रभागने भी अपने मन्त्रोंमें ऋक् आदिको वेद नामसे नहीं कहा, इसी प्रकार ब्राह्मणभागने भी अपनी वेदता नहीं कही। तो यदि वेद होंगे, तो दोनों ही। नहीं तो मन्त्रभाग भी वेद न हो सकेगा — क्योंकि यह दोनों ही भाग इतरेतराश्रित हैं।

जिस प्रकार सूत्रकालमें ब्राह्मणभागकी वेदता कही गई हैं, वैसे ही मन्त्रभागकी वेदता भी वहां पर कही गई है। इससे स्पष्ट है कि दोनों भागोंकी वेद संज्ञा समकालिक है। कई लोग ब्राह्मणभागका काल मन्त्रभागसे बहुत पीछे मानते हैं; पर यह पाश्चात्योंकी कल्पना है। वे तो ऋग्वेदके भिन्न-भिन्न मण्डलोंको भी भिन्न-भिन्न कालमें बनाया हुआ मानते हैं। यदि हम उनकी कल्पनाएं मानें; तो वेदको पौरुषेय तथा अर्वाचीन मानना पड़ेगा। यदि उनका आशय यह कहा जाय कि मन्त्रभाग पहलेसे ही था; समाधि द्वारा उन २ मण्डलोंकी प्राप्ति भिन्नकालमें हुई; तब शब्द और अर्थके लिए नित्य सम्बन्ध होनेसे मन्त्रभागार्थरूप ब्राह्मणभागभी प्राचीनकालसे ही हैं, केवल समाधि द्वारा उसकी प्राप्ति भी पीछेसे हुई—इस प्रकार दोनोंमें साम्य होनेसे ब्राह्मणभागकी अर्वाचीनता कट गई

(क्रमशः)

हिन्दूपर्व (त्यौहार)

[लेखक—विद्वद्वर श्री पं० हनुमान् शर्मा जी]



तीजत्यौहार।

(१) यह श्रावण शुक्ला तृतीया और चतुर्थीको सायंकालके समय मनाया जाता है। इसमें गौरीका डोलोत्सव सम्पन्न होता है। जिस प्रकार चैत्र शुक्ला तृतीया और चतुर्थीको गणगौरका मेला होता है, उसी प्रकारका यह है। इतना अन्तर अवश्य है कि उसमें ईश्वर और गणगौर दोनोंको सुन्दर वस्त्राभूषणोंसे सुशोभित करके दो पृथक् पृथक् डोलोंमें विराजमान कर बाहरके पुष्पोद्यानमें भ्रमण करवाया करते हैं और इसमें केवल 'तीज' (जो गणगौरका ही प्रतिरूप है) को उसी प्रकार आन्दोलित करते हैं।

(२ इस दिन जयपुर, उदयपुर, जोधपुर, बीकानेर आदि राजपूतानेकी बड़ी २ राजधानियों और कई साम तोंके छोटे मोटे ठिकानोंमें भी मेला भरता है। शहरके निवासी अधिवासी और बाहरके देहाती हजारों नर-नारी और बच्चे तथा व्यवसायी और खिलाड़ी आदि अपने ढंगके वस्त्राभूषणादिसे सुसज्जित होकर तीजके प्रभातसे ही इकट्ठे होने लगजाते हैं और जिस मार्गसे तीज या गणगौरकी सवारी निकला करती है उस त्रिपोलिया बाजार गणगौरीदरवाजा रोड और मेलाके मैदान तक यत्र तत्र झुंडके झुंड या टोली-प्रतिटोली एकत्र होते बैठते-उठते खेलते-कूदते गाते-बजाते खेल दिखलाते खिलौने बेचते और किसान लोग हंसी मजाक करते हुए बैठे रहते हैं।

(३) सायंकाल होनेके १-२ घण्टा पहले राजके महलोंकी एक बुर्जपर (यदि उपस्थित होंतो स्वयं महाराजा साहब भी) नहीं तो उनके शूर सामन्त सरदार लोग और अन्यान्य अधिकारी गण एकत्र होते हैं। उधरसे ही तीज या गणगौर तालकटोरे पर जाती है, वहां प्रदोष कालके होने पर गणिकाओं का गायन वादन और नृत्य होजानेके पश्चात् हवाई

छोड़ी जाती हैं और फूलमाला आदिका वितरण किये पीछे मेलेका विसर्जन हो जाता है। आये हुए एकत्रित सभी नर-नारी अपने अपने घर या गाँव में चले जाते हैं।

रक्षाबन्धन ।

(१) यह कर्म अर्वाचीन नहीं, अत्यन्त प्राचीन है जिन दिनों भारतमें सुविख्यात विद्यापीठोंका बाहुल्य था, उनके संचालक सांसारिक व्यवहारोंसे वर्जित—तपोधधन—ऋषिमहर्षि या आचार्यगण थे, अध्ययनाध्यापनादि सत्कर्मोंको अपना मुख्य धर्म मानकर अनेक कोश दूरसे आये हुए एकाधिक दशाधिक या शताधिक ही नहीं—सहस्रावधि विद्यार्थियों तकको अपने आत्मजोंके समान अपने ही समीप रखते और सब विद्याओंका सानुभव अभ्यास कराते। और छात्र यदि सत्पात्र हुआ तो पढ़कर जाते समय अपनी सुलक्षणा कन्या उसीको विवाह देते थे।

इसी प्रकार—

(२) उन दिनोंके विद्यार्थी भी आजके जैसे बहुरंगरंजित वेश-भूषा वासना और वर्तावके नहीं थे। वे गुरु भक्तिपरायण सदाचारी सच्चरित्री निर्दूषित धर्मप्राण और सकलशास्त्र निष्णात होनेकी कामना रखने वाले थे। अत: ऐसे भद्र और निश्छल विद्यार्थियों को विद्या विजयी बनानेकी आन्तरीय कामना करके उन दिनोंके सद्गुरू श्रावणी पूर्णिमाको यथा विधि निर्माण की हुई रक्षा-पोटलिका उक्त शिष्योंके दक्षिण हाथमें धारण कराते और उनको आगामी वर्षके लिए सर्वापत्तियोंसे सुरक्षित एवं प्रकाशमान् मेधासे संयुक्त करते थे।

(३) 'मदन रत्न' में लिखा है कि यथाविधि निर्माण की हुई रक्षा* से सब प्रकारके रोगोंका नाश और सब प्रकारके अशुभोंका विनाश तो होता ही है, साथ ही इसके एकबारके धारण करनेसे धारण करनेवाला एकवर्ष तक रक्षासे आवृत्त (या सुरक्षित) रहता है, अत: इसका धारण करना अवश्य ही आवश्वक है। पुराणोंसे ज्ञात होता है कि※ एकबार देव और दानवोंके द्वादश वर्षीय युद्धमें देवेन्द्र विजयी नहीं होसके थे, यह देखकर इन्द्राणीने श्रावण शुक्ल पूर्णिमाको यथाविधि 'रक्षा' तैयार की और देवराज इन्द्रके दक्षिण हस्तमें धारण करवायी, तब उसके महान् प्रभावसे देवेन्द्रने दानवोंको परास्त किया और विजय श्री प्राप्त करके वापस आये।

(४) वर्तमानमें सर्वत्र देखनेमें आता है कि श्रावणी पूर्णिमाको श्रवणकी प्रतिमूर्तिका पूजन करनेके पश्चात् तत्रस्थ रक्षा सूत्र उपस्थित समुदायको दिया जाता है और उस समय 'येन बद्धो बलीराजा दानवेंद्रो महाबल:। तेन त्वामभिवध्नामि रक्षे माचल माचल।' का उच्चारण किया जाता हैं। इसमें श्रवण पूजनकी योजना इस कारण की गई है कि—श्रवण, माता पिताका भक्त था बड़े प्रेम भावसे उनकी अहोरात्र सेवा करता था और कहीं बाहर जाता तो अपने दोनों स्कंधों पर दोनोंको धारण कर ले जाता था। एक बार दैवयोगवश वह नदी किनारे जल भर रहा था उसी अवसरमें दशरथने शब्दवेधी बाण छोड़ दिया उससे वह मर गया। अत: माता पिताके ऐसे अद्वितीय भक्तके संस्मरणार्थ ही श्रावणीको श्रवण पूजन किया जाता है और रक्षा विधान तो होता ही है।

(५) 'रक्षा पोटलिका किस प्रकार बनाना चाहिये' इस विषयमें भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रने युधिष्ठिरसे कहा है कि—श्रावण शुक्ल पूर्णिमाको प्रातस्नानादि करके ब्राह्मणोंको साथ लेकर सर्वप्रथम उत्तम और बहुल जलसे देव-पितृ और 'उपाकर्म'के द्वारा ऋषि तर्पण करे। फिर पराह्न (मध्याह्नोतर) शुद्ध सुन्दर और विचित्र वर्णके रेशम अथवा सूतीवस्त्रका टुकड़ा लेकर

---

* सर्वरोगोपशमनं सर्वाशुभ विनाशनम्। सकृत्कृतेनाब्दमेकं येन रक्षावृतो भवेत्।' (मदन रत्न)

※ देवासुरमभूद्युद्धं पुरा द्वादश वार्षिकम्। तत्रासुरैर्जित: शक्र: सह सर्वै: सुरोत्तमै:। बबन्ध दक्षिणेपाणौ रक्षापोटलिकां तत:। जघान दानवानीकं क्षणत्काल इव प्रजा:। शक्रश्चाविजयी भूत्वा पुनरेव जगत्त्रयी। (भविष्य)

उसमें गन्ध-अक्षत-पुष्प-दूर्वा-सरसों और सुवर्ण रख कर रंगीन तारोंसे गूथे। इसके सिवा घरके दोनों ओरकी दीवारोंको गोबरसे लीपकर उनमें सुन्दर वृत्ताकार कुण्डल और स्वस्तिक (साथिया) बनावे, और तत्समीपकी वेदी पर जल पूर्ण सुपूजित कलश स्थापन करके उस पर पूर्वोक्त रक्षा पोटलिका रखकर उसका पंचोपचार पूजन करे। तदनन्तर आशानिवद्ध बैठे हुए शिष्यवर्ग (राजा, मन्त्री, सभासद, महाजन, और सदाचारी) आदि जो भी पात्र हों उनके दहने हाथमें 'येन बद्धो बली राजा०' रक्षा धारण करावे। ऐसा करनेसे सब प्रकारके आपज्जनक अनिष्टकारी उपद्रव शान्त हो जाते हैं। और सुख ❀ सम्पत्ति सन्तान आदि समृद्धिकी अभूतपूर्व वृद्धि होती है।

(६) प्राचीनकालके तपस्वी ब्राह्मण आशासे आये हुए शिष्यको आशीर्वाद स्वरूप रक्षा पोटलिका प्रदान करते थे। घर पर जाकर 'राखी' बांधने और दक्षिणा लानेका उन दिनों प्रचार नहीं था। अब (वर्तमान में) रक्षा 'राखी' हो गई — इसका स्वरूप, क्रिया, बनावट रूपरङ्ग और गुण सब बदल गए। यहाँ तक कि ब्राह्मणोंके बदले वैश्यादिके बेटे बेटी बहू और भाई बहिन आदि आपसमें बाजारसे मोल ली हुई राखी बांधते और दक्षिणा लेते हैं। ऐतिहासिक कथाओंसे सूचित होता है कि आपत्तिके अवसरमें कई एक अबला (किन्तु विदुषी स्त्रियाँ) किसी भी सबल सच्चरित्री सत्पुरुषको भाई बनाकर उसके राखी बांधती और वह मनुष्य उसकी आपन्निवारणार्थ अपने शरीर को संकटमें पटककर राखी बांधने वाली बहिनको सदाके लिए निरापद करता था।

(७) रक्षा विषयमें चौमू के भगवत्स्मरण परायण सम्माननीय सरदार ठा० देवीसिंहजीने इस आशयके दो एक पठनीय पद्योंका अपने 'पत्र-पुष्प'में अच्छा संकलन किया है। वे ये हैं—

'भाई यह मणि बद्ध तुम्हारा, शस्त्र तोलने वाला।
जिसकी नसनस में बहता है, रक्त खोलने वाला॥
बांध दिया जिसने भीषण से, भीषण रणस्थली को।
बांध रही हूँ मैं इन निर्मल, तागों से उसी बली को॥'
देखो लाज न जाये इनकी, ये अबलोंके बल हैं।
तागे तागे में स्वदेश की, बहिनों के अञ्चल हैं॥'

(८) श्रवण पूजन और रक्षा बन्धनमें पराह्न व्यापिनी पूर्णिमा ली जाती है। यदि दो दिन वैसी हो तो पूर्व दिनको ग्रहण करे। यदि उस दिन भद्रा हो तो उसमें नहीं करना चाहिये, उसके उतरे पीछे करना चाहिये। कदाचित् वह दिन भर रहे और रात्री में उतरे तो रातमें उसके उतरे पीछे रक्षा बन्धन करना चाहिये। शास्त्रकारोंकी आज्ञा है कि 'श्रावणी' (रक्षाबन्धन) और 'फाल्गुनी' (होलिका दहन) भद्रामें करनेसे यथाक्रम राजा और प्रजाका अनिष्ट होता है।

उपाकर्म-(ऋषि तर्पण)

(१) जिस प्रकार शिवरात्री, जन्माष्टमी और एकादशी आदिके समयज्ञानमें शुद्धाविद्धादिका बहुत विचार किया जाता है उसी प्रकार श्रवणादि युक्त श्रावणीका निर्णय भी बहुत विस्तृत है, परन्तु स्थानाभावसे यहाँ उसका सूक्ष्मरूपमें उल्लेख किया है। विशेषके लिये धर्मशास्त्रोंका अवलोकन आवश्यक है।

(२) श्रावणी कर्ममें श्रवणयुक्त श्रावणी श्रेष्ठ है।.... और देवकर्म होनेसे पूर्वाह्न और वेदके विचारसे पराह्न व्यापिनी ली जाती है। [1]नारदके मतसे उस दिन ग्रहण संक्रान्ति या मृताशौच और दूसरे मतसे उत्तराषाढ़का वेध निषेध है। क्योंकि ग्रहण[2]से गुरु; संक्रान्तिसे शिष्य और आशौच तथा उत्तरावेधसे दोनों का अनिष्ट होता है। 'स्मृतिसार-समुच्चय' में इसको प्रथमारम्भ[3] में वर्जित किया है,

---

❀ 'यः श्रावणे विमलमासि विधानविज्ञो रक्षाविधानमिदमाचरते मनुष्यः। आस्ते सुखेन परमेण सवर्षमेकं पुत्र प्रपौत्र सहितः स सुहृज्जनस्य।' इति। (जयसिंह कल्पद्रुम)

(१) संक्रान्तौ ग्रहणे चैव सूतके मृतके तथा। गणस्नानं न कुर्वीत नारदस्य वचो यथा। (नारद) (२) ग्रहयोगे गुरुं हन्ति संक्रांति शिष्यघातिनी। तयोर्हन्त्युत्तराषाढा उपाकर्मणि वैष्णवे।' (निगमः (३)'प्रथमोपाकृतिर्नस्यात्कृतं कर्मविनाश कृत्।' (स्मृतिसार)

नित्य करने वालों के लिए नहीं है। फिर भी ग्लानि हो तो हस्तयुक्त श्रावणकी और वाजसनेयियोंके लिए भाद्रपदके शुक्लकी पञ्चमी श्रेष्ठ है। बौद्धायनने श्रावणी और भाद्रीके बदले आषाढी ग्राह्य की है।

(३) यद्यपि उपाकर्ममें उत्तराका वेध वर्जित और धनिष्ठाका ग्राह्य है, तथापि जिस दिन उत्तराका ३ मुहूर्त उपरांत श्रवण सवदिन और दूसरे दिन उसका क्षय हो तो ऐसे अवसरमें उत्तरावेध भी अच्छा है। यदि श्रवणयुक्त श्रावणी[४] दो दिन हो (या दोनों दिन न हो) तो उदय व्यापिनी ली जाती है। शास्त्रकारोंका मत है कि चौमासेमें नदियाँ रजस्वला रहती हैं। और स्नानमें रजयुक्त जल वर्जित किया है, परन्तु वशिष्ठने उपाकर्म-उत्सर्ग-प्रेतदाह और चन्द्रसूर्यके ग्रहणमें रजदोष[५] को मान्य नहीं किया है। अस्तु।

(४) श्रावणी कर्मका विधान—शास्त्रकारोंने विधिवद्ध बनाया है, उसका मार्ग प्रदर्शन यह है कि—श्रावणशुक्ल पूर्णिमाको प्रातःकालके समय स्नान संध्या आदि नित्यकर्म करनेके अनन्तर गुरु अपने शिष्योंको साथ लेकर गाँवसे बाहरके जलाशय पर जाकर मृतिका के ४ढेले उठावे और उसके तटको धो कर वहाँ गोवर-भस्म, मृत्तिका-तिल-यव-जल-पुष्प-दूर्वा-अपामार्ग-मिट्टी और यज्ञोपवीतादिको यथोचित स्थापित करे। वहीं ऋष्यादिकोंके लिए वेदी बनाकर उसपर सफेद वस्त्र बिछावे। और पूजन के लिए दूध-दही-घी-मधु-शर्करा-गंध-अक्षत--पुष्प--धूप-दीप-नै--वेद्य और तांबूलादि रक्खे। तत्पश्चात्

(५) सशिष्य गुरु पूर्वाभि या उत्तराभि मुख बैठकर गणेशादिका स्मरण और सुमुखश्चैकदन्तादिका उच्चारण करके हाथमें जल-तिल और कुश लेकर पूर्वाभिमुख हो करके 'हेमाद्रिक्रम' संकल्प करे। फिर दूसरी वार स्नान और (स्नानांग) तर्पण करके धोती पहनकर कुशाके आसन पर पूर्व या उत्तर मुख बैठ करके तिलक धारण कर मध्याह्नसंध्या करे। और विभ्राड् (अनुवाक) सहस्रशीर्षादि (पुरुषसूक्त) और शिवसंकल्पा दिका पाठ करके 'ईषेत्वो' आदि से ब्रह्मयज्ञ करे। तत्पश्चात् प्रचलित देव ऋषि और पितृ तर्पण करे।

(६) इस प्रकार पूर्वाङ्ग पूर्ण करके पूर्वोक्त वेदीपर अपामार्ग प्रयुक्त तीन २ दर्भा (डाभ) के ब्रह्मग्रंथियुक्त ५पवित्रे निर्माण करके उनको कश्यप, भारद्वाज, गौतम, अत्रि, जमदग्नि, वशिष्ठ और विश्वामित्रके रूपमें परिणत करके पृथक २ स्थापन करे और उनके समीप में अरुन्धतीका स्थापन करके प्रत्येकका यथाविधि षोडशोपचार पूजन करे। पूजनके पश्चात् नवनिर्मित यज्ञोपवीतोंको अपने सम्मुख रखकर संकल्पके साथ पितृ पितामहादिके अर्पण करे। यदि माता पिता जीवित हों तो संकल्पमें 'पितुःपित्रादिभ्यो' 'माता महादिभ्यश्च' का उच्चारण करे। फिर सारे यज्ञोपवीतों को मंत्रोंसे संस्कृत करके धारण और (शिष्यादिमें) वितरण करे। और पुराने यज्ञोपवीत शिरोमार्ग से निकाल करके त्याग करे। इसके अनन्तर—

(७) सर्वांग पूर्ण ऋषितर्पण करके श्रावणी कर्मको समाप्त करे, यह अवश्य स्मरण रक्खे कि उपाकर्म एक सर्वोत्तम और अवश्य करणीय कर्म है, अतः पहले किसी विशेषज्ञ सद्गुरुसे सीखकर सुनकर या समझकर करे तो उससे यथोचित फल होता है। कदाचित् समीपमें कोई नद नदी तालाब या तीर्थ विशेष न हो तो कुआ या बावली के किनारे पर बैठ कर उक्त कर्म यथाविधि सम्पन्न करे। विषेष जाननेके लिए 'ब्रह्मकर्म–समुच्चय' आदि देखने चाहियें।

(इति शुभम्)

---

(४) 'उदयव्यापिनीत्वेय विष्णवर्द्धे घटिकाद्वयम्। तत्कर्म सफलं ज्ञेयं तस्य पुण्यं त्वनन्तकम्।' (निर्णयसिंधु)

(५) 'उपाकर्मणि चोत्सर्गे प्रेतस्नाने तथैव च। चंद्रसूर्यग्रहे चैव रजो दोषो न विद्यते।' (वसिष्ठ)

हरितालिका

[लेखक—राजकुमारगुरु ज्यौतिषालङ्कार श्री पं० तारादत्त जी राजज्यौतिषी]



भाद्रपद शुक्ल तृतीयाके दिन हरितालिका व्रत होता है। 'स्कन्दपुराण'में लिखा है—

भाद्रेमासि सितेपक्षे तृतीया हस्तसोमयुक्।
तदनुष्ठान मात्रेण सर्वान् कामानवाप्नुयात्॥

यह व्रत पार्वतीजीने किया था, इसके प्रभावसे प्रसन्न हो कर भगवान् शिवजीने पार्वतीजीका पतित्व स्वीकार किया। इस व्रतसे स्त्रियोंकी सब कामनाएं पूर्ण होती हैं। 'स्कन्दपुराण'में लिखा है—

अहं भर्ता भवेयं वै इति हेतोः कृतं व्रतम्।
तत् प्राप्स्यसि त्वं सुभगे! न वृथा मम दर्शनम्॥
व्रतमेतत् करिष्यन्ति ये नार्यो दृढमानसाः।
प्राप्यापि सकलान् कामान् योक्ष्यन्ते ब्रह्मणा सह॥

हस्त नक्षत्र तथा सोमवारके योगसे इस व्रतका विशेष फल होता है। इनके योगसे रहित भाद्र शुक्ल तृतीयामें भी यह व्रत होता है। 'जयसिंहकल्पद्रुम'में यह वचन लिखा है—

तृतीया नभसः शुक्ला मधुश्रावणिका स्मृता।
भाद्रस्य कज्जली कृष्णा शुक्ला च हरतालिका॥

जया तिथिमें विजय देने वाली शक्तियाँ प्रकट होती हैं। 'वृहद्दैवज्ञरञ्जन'में श्रीपतिके पद्यके द्वारा इसका फल लिखा है—

तृतीया अष्टमी त्रयोदशी ये जयातिथि कहलाती हैं। समय विभागोंके मध्य अंशमें शक्तियोंकी प्रौढावस्था होती है। इसलिए पक्षरूप समय विभागके मध्य अंशकी जया तिथि-अष्टमीमें विशेषरूपसे विजय देने वाली शक्तियां प्रकट होती हैं।

भगवान शिवजी अपने उग्र प्रभावसे सर्वत्र विजयी हैं। इसीलिए उनका उग्र नाम है। अमरकोष में लिखा है— "उग्रः कपर्दी श्रीकण्ठः।"

इस प्रधान जयातिथि अष्टमीके स्वामी ये प्रधान विजयी भगवान् हैं। इस जयातिथिसे प्रथमा जया तिथिकी स्वामिनी अग्निसे अग्निशिखाके समान इनसे अभिन्ना भगवती पार्वतीजी हैं।

समय-विभागोंके प्रथम अंशमें मूल-शक्तियाँ प्रकट होती हैं। इसलिए वास्तवमें इस जयातिथिका भी महत्त्व न्यून नहीं है।

समय-विभागोंके पहिले अंशमें शक्तियोंकी पहिली अवस्था होनेके कारण इस जया तिथिका सम्बन्ध कन्यारूपा पार्वतीजीसे प्रतीत होता है।

पार्वतीजीकी शक्तियाँ चन्द्रमामें विशेषरूपसे व्याप्त हैं। 'जातकपारिजात'के सप्तदश अध्यायमें शिवजीका वाक्य है :—
(ईश्वर उवाच) अहमादित्यरूपोऽस्मि चन्द्रं त्वां संप्रचक्षते।

शुक्लपक्षकी तृतीयामें चन्द्रमाकी पहिली अवस्था होती है। इसलिए कृष्णपक्षकी तृतीयाकी अपेक्षा शुक्लपक्षकी तृतीयासे कन्यारूपा पार्वतीजीका अधिक सम्बन्ध प्रतीत होता है।

भाद्रपद मासमें पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्रका प्रभाव है। इस नक्षत्रका स्वामी अजचरण है। पीयूषधारामें लिखा है:—अजचरणः सूर्य विशेषः। पूर्व लिखित वाक्यके अनुसार सूर्यमें शिवजीकी शक्तियां विशेष रूपसे व्याप्त सिद्ध होती हैं। इसलिए भाद्रपद मास शिव मास सिद्ध होता है।

भाद्र मासकी अमावस्या रूपा मध्यतिथि अवश्य सिंहार्कसे सहित होती है। इसलिए दीप्तांशोंके प्रभाव से संपूर्ण भाद्र मासमें सिंहार्कका प्रभाव होता है। इस प्रकार भी भाद्रमास शिव मास सिद्ध होता है।

सिंह राशि सूर्यकी मूलत्रिकोण राशि और स्वगृह राशि है। इसलिए इस राशिमें स्थित सूर्यकी

शक्तियां प्रभाव शालिनी होती हैं। इस प्रकार भाद्र मासमें विवाह योग्य रूप वाले शिवजीकी शक्तियोंका पूर्ण रूपसे व्याप्त होना प्रतीत होता है। अतएव भाद्र शुक्लतृतीया युक्ति-द्वारा स्पष्ट रूपसे उमा महेश्वरात्मिका सिद्ध होती है।

जिस भाद्रशुक्ल तृतीयाके दिन व्रतान्तमें पार्वती जीको भगवान् शिवजीसे विवाहका वरदान प्राप्त हुआ था वह हस्त नक्षत्रसे सहित था।

'स्कन्दपुराण'में भगवान् शिवजीका वाक्य है:—

हस्तनक्षत्र संयुक्ता मासि भाद्रे सिता जया।
तत्र वाद्येन गीतेन रात्रौ जागरणं कृतम्।
तेन व्रत प्रभावेण आसनं चलितं मम॥

हस्त नक्षत्रमें चन्द्रमा कन्या राशिमें होता है। इसलिए कन्यारूपा पार्वतीजीकी शक्तियाँ हस्त नक्षत्र सहित भाद्रशुक्ल तृतीयाके दिन चन्द्रमामें विशेषरूपसे व्याप्त होती हैं। जब इस राशिका उदय होता है उस समय यह पूर्वमें होती है और सूर्यरूप इसके प्रभावसे सहित सिंहराशि इससे पश्चिममें होती है। विवाहमें कन्याहस्त ग्रहणके समय कन्या पूर्वमें होती है और वर पश्चिममें होता है। हस्त अवयवका अधिष्ठाता हस्त नक्षत्र चन्द्र सहित कन्याराशिके अन्तर्गत होनेसे कन्यारूपा पार्वतीजीका हस्त रूप है। इस प्रकार उस समय शिव-पार्वतीजीकी विवाह-लीला स्पष्ट रूपसे हो रही थी। चन्द्रमामें पार्वतीजीकी शक्तियोंके विशेष रूपसे व्याप्त होनेके कारण इस व्रतमें सोमवारका भी महत्त्व है।

उस समय जो दिव्यशक्तियाँ प्रकट होकर पृथिवी में अन्तर्हित हुई हैं, वे प्रतिवर्ष योगके अनुसार भाद्रशुक्ल तृतीयाके दिन न्यूनाधिक रूपमें प्रकट होती रहती हैं। इसलिए भक्तजनोंको इस शुभ तिथिमें भक्तिपूर्वक उपासनासे इन दिव्य शक्तियों को ग्रहण कर अपना जन्म सफल करना चाहिए।

इस लेखका साररूप स्वनिर्मित श्लोक—

रुद्रात्मको भाद्रपदस्तृतीया,
सिता विशेषेण शिवात्मिकास्ति।
अतो हि भाद्रस्य सितातृतीया,
शिवा शिवानन्दकरी विशेषात्॥
सौभाग्यहेतुर्वनिता जनानां,
शिवा शिवाराधनतः प्रसिद्धा।
शिवा शिवाराधनतोऽत्र यस्मा—
दनल्पभक्त्या शिववल्लभासीत्॥

अर्थ—भाद्रमास विशेषरूपसे शिव-प्रभाव वाला है। शुक्ल तृतीया विशेषरूपसे पार्वती-प्रभाव वाली है। इसलिए भाद्र शुक्ल तृतीया विशेष रूपसे पार्वतीजी शिवजीकी प्रीति करने वाली है। यह तिथि पार्वतीजी-शिवजी की आराधनासे स्त्री जनोंको सौभाग्य देनेवाली प्रसिद्ध है। क्योंकि इस तिथिमें बड़ी भक्तिसे शिवजीकी आराधनासे पार्वतीजी शिवजीकी प्रिया हुई हैं।

"वसन्ताङ्क"में प्रकाशित 'राशिस्वामियोंकी विशिष्ट उपपत्ति' शीर्षक लेखका शेष अंश आगेके अंकोंमें प्रकाशित होगा।

भारतीय ज्यौतिष-प्रणाली

[लेखक—ज्योतिर्विद्यारत्न श्री पं० कृष्णचन्द्र जी शर्मा ओझा, केतकी पञ्चाङ्गकर्ता]

"श्रीस्वाध्याय"के चतुर्थवर्षके 'नववर्षाङ्क'में वर्षमान और अयनगतिके अनेकों प्रमाण देकर शुद्ध सूक्ष्म वर्षमान और अयनगति लेना ही क्रम प्राप्त है यह सिद्ध किया गया है। आधुनिक अत्यन्त सूक्ष्म वेधों द्वारा निश्चित किया हुआ वर्षमान ३६५ दिन १५ घटि २२ पल ५७ विपल हैं और अयनगति ५०'२६ विकला है, यह आज भारतके एतद्देशीय विद्वान् नेता जानते ही हैं। जब तक कि हम शुद्ध सूक्ष्म वेधतुल्य परिमाणोंको स्वीकार नहीं करेंगे तब तक हमारे फलादेश एवं धार्मिक क्रियायें योग्य समय पर हो ही नहीं सकती, इसी त्रुटिको पूर्ण करनेके लिये हमने इस वर्ष शुद्ध सूक्ष्म एवं वेधतुल्य केतकी गणित द्वारा 'श्रीविश्वमार्त्तण्ड—पञ्चाङ्ग' का प्रकाशन कराया है, जनता उससे अवश्य लाभ उठावे और जन्मपत्र आदि ज्योतिष विषय तथा धर्मक्रियायें उसी पञ्चाङ्गके अनुसार करें।

अब अयनांश पौष्णान्त और शून्य अयनांश वर्ष यह तीनों विषय परस्पर सम्बन्धित हैं, पौष्णान्तसे सम्पात जितना पश्चिमकी ओर को हटा होगा उतने अंश कलादि अयनांश प्राप्त होंगे, सम्पात १ सौर वर्षमें जितना पीछे हटे उतनी एक वर्षकी अयनगति होगी और जिस वर्ष पौष्णान्तपर सम्पात था वह वर्ष शून्य अयनांश काल होता है, अतः प्रथम पौष्णान्तका निर्णय होना आवश्यक है। क्रान्तिवृत्त पर अश्विन्यादि २७ नक्षत्रोंकी गणना भारतमें वैदिककालसे चली आ रही है। और वेद वेदाङ्गमें स्थिर नक्षत्र विभाग पद्धति पाई जाती है। प्राचीन सिद्धान्तकारोंने अश्विन्यादि (आकाशीय क्रान्तिवृत्त पर) स्थान निश्चित न कहकर वर्षमानानुरूप अश्विन्यादि मानकर उससे छायार्क जितना पश्चिमकी ओरको पीछे हटा हो उतने अयनांश माननेका अपने २ ग्रन्थोंमें उल्लेख किया है। 'सूर्यसिद्धान्त' में इस प्रकार है—प्राक्चक्रे चलितं हीने छायार्कात्करणागते" अर्थात् छायार्कमें करणागत सूर्यको घटाओ, जो अन्तर रहे वही अयनांश होगा। इस प्रकार अयनांश लानेकी विधि सिद्धान्तोंमें बताई गई है। छायार्क अर्थात् वेधसे प्राप्त हुए सायनसूर्यमेंसे करणागत निरयन सूर्यको घटाने से जो शेष रहे वह अयनांश होगा। इसमें छायार्क अर्थात् वेधसे आया हुआ सूर्य तो सूक्ष्म आयगा परन्तु करणागत सूर्यमें स्थूलता होगी तो अयनांश भी स्थूल ही आयेंगे। आधुनिक सूक्ष्म मानसे देखा जाय तो रविका वर्ष मान ८॥ पलसे अधिक होता हैं, अतः प्राचीन वर्षमानसे करणागत रवि प्रतिवर्ष ८॥ पल अर्थात् ८॥ विकला प्रतिवर्ष पूर्वकी ओरको हटता रहेगा और उसका अश्विन्यादि बिन्दु भी प्रतिवर्ष पूर्वकी ओरको चलित होगा। अश्विन्यादि बिन्दु स्थिर प्राय होना चाहिये यह तो सिद्धान्तकारोंका हेतु था।

प्राचीन सिद्धान्तोक्त वर्षमानानुसार रविसे आया हुआ मेषसंक्रामण अर्थात् अश्विन्यादि बिन्दु प्रति वर्ष ८॥ विकलाके अन्तरसे बढ़ा हुआ मान लिया जाता है, अतः "छायार्कात्करणागते" इस पद्धतिसे आये हुए अयनांश स्थूल प्राय होंगे, यह सिद्ध है। इसी लिये आज भिन्न २ सिद्धान्तोंका सूर्य भिन्न २ आता है और उसीसे उनमें भिन्न २ अयनांश भी आते हैं, वास्तवमें अश्विन्यादि स्थान स्थिर होनेसे और गतिजन्य मान सूक्ष्म वेधतुल्य लेनेसे भारतमें सर्वत्र एकमुखी पञ्चाङ्गका निर्माण होना चाहिए, परन्तु इसी पौष्णान्तकी भिन्नतासे पृथक् २ पञ्चाङ्ग का स्वरूप दिखाई देता है।

ज्योतिष गणितका ग्रन्थोक्त प्रारम्भ 'वेदाङ्ग ज्योतिष'से है, अतः गणितमें आद्य ग्रन्थ यही 'वेदांग-

ज्योतिष' है और सिद्धान्त तदनन्तरके हैं। "वेदाङ्गज्योतिषोक्त वर्षमान आधुनिक सूदम वर्षमानके तत्तुल्य हैं" ऐसा बेलगांवके ज्यो. भा. रा. जोशी चित्रापक्षीय गोसेवक-पञ्चाङ्ग-कर्त्तानें प्रतिपादित किया है। गत आश्विनशुक्ला १० से पूनामें त्रिस्कन्ध ज्योतिष पर व्याख्यानमाला तीन मास तक 'शारदीय ज्ञानसत्र' में चालू रही, उसमें आपने वैदिक मन्त्रोंसे अनेकों प्रमाण देकर चित्रापक्षकी सिद्धि करते हुए 'वेदाङ्गज्योतिष' के विषय पर बोलते हुए दर्शाया कि 'वेदाङ्गज्योतिषोक्त' वर्षमान ३६६ यही आज तकके विद्वान लोग मानते चले आरहे हैं किन्तु वास्तवमें वह ठीक नहीं है 'वेदाङ्गज्योतिष'के मन्त्रोंमें कई गूढ कूट भरे हुए हैं जोकि कई मन्त्रोंके अर्थ अभी तक भारतीय विद्वानोंसे नहीं लगे हैं। इतिहासकार स्व० दीक्षितजीने भी कई मन्त्रों का अर्थ छोड़ दिया और आर्य या पाश्चिमात्योंसे अभी तक सब मन्त्र नहीं छुड़ाये गये उस पर भी श्री जोशीने निम्नलिखित मन्त्रसे सूदम वर्षमान लाकर विद्वानोंको चकित कर दिया।

३६०   ४   २   १२
भांशास्यु रष्टकाः कार्या पक्षा द्वादश चोद्गता।
 ११
एकादशगुणस्योनः शुक्लेर्द्ध चैंद्वा यदि ॥ (वे.ज्यो.१०)
— +

इस मन्त्रका अर्थ निम्नलिखित उदाहरणसे लगाया है—

भांशाः ३६० अष्टका कार्या÷४ (१ वर्षमें अष्टका श्राद्ध ४ होते हैं, अतः अष्टकाका अर्थ ४ होता है) = ९०÷२=४५ यह एक अंक सिद्ध हुआ, इसको "अ" संज्ञा देंगे।

पञ्च सम्वत्सरमें नाक्षत्र मास ६७×११= ७३७÷३६८-३० यह दूसरा अङ्क सिद्ध हुआ, इसको "ब" संज्ञा देंगे।

यहाँ उपरोक्त उदाहरणमें प्रथम अंक "अ" (४५) यह घटी हैं और द्वादश काष्ठा अर्थात् घटी ४५ काष्ठा १२ यह अष्टका ४ में से हीन करनेसे दिन ३ घटी १४ काष्ठा १८ यह तीसरा अंक सिद्ध हुआ इसको "क" संज्ञा देंगे।

सूदम वर्षमान

(१) उपरोक्त "ब" संज्ञक अङ्क ३६८।३०।०
,, "क" संज्ञक अङ्क —३।१४।१८
नाक्षत्र सौर वर्षमान " ३६५।१५।१२ (१ का. २ प.)

इसमें "वेदाङ्गज्योतिषोक्त वर्षमान ३६५ दिन १५ घटि २४ पल, यह आधुनिक वर्षमान ३६५ दिन १५ घटि २३ पलसे १ पल अधिकसे आधुनिक वेधतुल्य वर्षमानके तुल्य 'वेदाङ्गज्योतिष'का वर्षमान प्राप्त होता है। इसी प्रकार एक वर्षमें तिथि इस प्रकार आती हैं—

उपरोक्त "ब" संज्ञक अंक दि० ३६८ घ० ३० का० ०
उपरोक्त "क" संज्ञक अंक + ३ — १४ — १८
१ सौर वर्षमें चान्द्र तिथि दि० ३७१ घ० ४४ का० १८

इस प्रकार 'वेदाङ्गज्यो०' श्लो० १० को लगाया है और वह उपपत्ति शास्त्र दृष्ट्या योग्य है। ऐसे अनेक विद्वानोंके अभिप्राय अभीतक प्राप्त हुए हैं फिर भी यह उनका प्रथम ही उपक्रम होनेसे विद्वानों के लिए यहाँ दिया गया है। आधुनिक वेधतुल्य वर्षमानके तत्तुल्य वर्षमान प्राचीन 'वेदाङ्गज्योतिष' से प्राप्त होना भारतके लिए भूषणास्पद है और पाश्चात्योंको आश्चर्यचकित कर देने जैसा संशोधन है। और भी आपने प्रतिपादित किया कि 'वेदाङ्गज्योतिष'में आढ़ककी संज्ञा ५० मानी है, यह ५० आढककी संज्ञा माननेका उद्देश्य 'वेदाङ्गज्योतिष' कारका' अयन-गतिके मानसे माननेका होना चाहिये और वेदाङ्गज्योतिषकी अयनगति ५० ही होनी चाहिए। यह सूदमवर्षमान और सूदम अयन गति जो कि आज पाश्चात्योंने अपनी अद्भुत बुद्धि व्यय कर अनेकों दूरवीक्षणयन्त्रोंसे निश्चित किया वही मान हमारे भारतीय विद्वान् ३॥ हजार वर्ष पूर्व ही निश्चित कर चुके थे। 'वेदांगज्योतिष' की गणित पद्धति कुछ वर्षों तक लुप्तप्राय होनेसे सिद्धान्तकारोंकी तथा तदनन्तरके कारणग्रन्थकारोंकी स्थिति दयनीय हो गई और ये गुरुगम्य बातें लुप्त होकर वेधप्रणाली बहुतांशमें नष्ट होनेसे भारतीय जनता लकीरकी

फकीर बनकर प्रत्येक मानको श्रद्धासे मानकर स्थूलका ही समर्थन कर बैठती हैं, इसी तत्त्वसे पुरातन 'वेदाङ्गज्योतिष' के सूक्ष्म मानका त्याग होकर सिद्धान्त कालके बाद सिद्धान्तकारोंके माने हुए मानोंको मानने लगे, परन्तु सूक्ष्म वेधतुल्य मानोंको ही स्वीकार करनेका सिद्धान्तकारोंका हेतु होनेसे प्रत्येकमें बीज संस्कार करनेका अर्थात् वेधतुल्य मानोंको स्वीकार करनेका लिखा हुआ है जोकि मैंने अपने पूर्व लेखोंमें अनेक प्रमाण देकर सिद्ध किया है।

अब अयनांश और शून्य अयनांश वर्ष यह पौष्णान्त (अश्विन्यारम्भ) के उपस्थित होनेसे प्रथम पौष्णान्तका विचार करेंगे। पहले मैं यह कह चुका हूँ कि पौष्णान्त अर्थात् अश्विन्यारम्भ स्थान निश्चित शब्दोंमें नहीं कहकर वर्षमानानुसार आये हुए सूर्य से कहा है। वास्तवमें यह पद्धति "शास्त्रपूतं" इस न्यायसे ठीक नहीं है, क्योंकि वर्षमानमें स्थूलता होगी तो अश्विन्यारम्भ तथा अयनांश स्थूल ही प्राप्त होंगे, इसीलिए आज चित्रा रैवतका द्वंद्व युद्ध चल रहा है, सूर्य सिद्धान्तकारने "पौष्णान्ते भगणस्मृतः" कहकर पौष्णान्त अर्थात् रेवत्यन्त पर भगण का पूरा होना लिखा है और "स्मृतः" इस शब्द में परंपरागत व्यक्त की है। आज हम प्रथक् प्रथक् ग्रन्थों से निरयन सूर्य लावें तो वह पृथक् २ आयगा और उसी से सबमें परस्पर अयनांश में भिन्नता दिखाई देगी, तो क्या हमारा अश्विन्यारम्भ भिन्न भिन्न है ? कदापि नहीं, आरम्भ स्थान आर्योंका एक ही होना चाहिए था, परन्तु पौष्णान्त यह स्थिर प्राय होते हुए गति जन्य मानोंके अनुसार मान लेनेसे सिद्धान्तोंका वर्षमानानुसार लाया हुआ अश्विन्यादि भिन्न भिन्न आकर वर्षमान ८॥ पल अधिक स्वीकार कर लेनेसे उनका अश्विन्यारम्भ प्रतिवर्ष आगेकी ओरको हटता रहा और स्थिर अश्विन्यादि चल मान लिया गया, यह हेतु मात्र स्थिरप्राय माननेका रहा, इसी लिए वैदिक परम्परागत पौष्णान्त कहाँ है ? यह जानने की जिज्ञासा होना स्वाभाविक ही है। (क्रमशः)

क्या आप विज्ञानकी ये बातें जानते हैं ?



विज्ञानाचार्य श्री जगदीशचन्द्र बोसने सिद्ध करके बताया है कि शंखध्वनिसे विषाक्त कीटाणुओंका नाश होता है। गूंगोंकी मूकता दूर करनेके लिए वैज्ञानिकोंका कथन है कि उन लोगोंको शङ्ख बजानेके लिए, उसका जल उनके पानार्थ, तथा माला धारणार्थ देना चाहिये। शङ्खमें मनुष्यका हित करनेवाली बिजली रहती है।

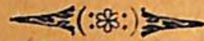
वैज्ञानिकोंके विचारमें जो लोग मृग और बाघके चमड़े पर बैठते हैं; उन्हें भगन्दर नामक रोग नहीं होता। व्याघ्रके चमड़े पर सर्प, बिच्छु आदि विषाक्त कीड़े नहीं चढ़ते हैं। हिरनके चमड़ेमें एक प्रकारकी प्रभा होती है ? जिससे योगी और ब्रह्मचारी लोगोंको लाभ होता है।

वैज्ञानिकोंके मतमें खड़ाऊं पर चढ़ कर चलनेसे गाज गिरनेका डर नहीं रहता। पादुका पर खड़ा हुआ मनुष्य बिजलीके तारको स्पर्श करके भी उसके द्वारा हो सकने वाली हानिसे बच जाता है।

इनके मतमें जूते पहिननेसे पैरमें रहने वाली अंगूठे और पीछेके ओर की नली कामवर्द्धिनी होती हैं। पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियोंमें कामशक्ति अधिक होती है, इससे स्त्रियां जूते पहिनकर, क्षण-क्षणमें कामातुर होकर अनुचित मार्गमें न चलने लगें, इसी लिए प्राचीन भारतीय लोग उनका जूता पहिनना उचित नहीं मानते थे।

प्रश्नोंके उत्तर

[लेखक—वि० भू० वि० वा० श्री पं० दीनानाथ जी शास्त्री, सारस्वत]



'श्रीस्वाध्याय'के तृतीयवर्ष 'ग्रीष्माङ्क' पृष्ठ ५२ पर 'विद्वानोंसे कुछ प्रश्न' शीर्षकसे ७ प्रश्न प्रकाशित हुए थे; उनके उत्तर हमने तभी लिख डाले थे। परन्तु दूसरे पण्डितोंके उत्तरोंकी प्रतीक्षा करते हुए हमने इतना समय बिता दिया। अब तक भी किसीका उत्तर प्रकाशित न हुआ देखकर उन पर अपना मत दिया जाता है। उन सातों प्रश्नोंका उत्तर क्रमशः निम्न है:—

प्रश्न (१) वेद श्रुतिस्मृति पुराणादिमें चार ही वर्ण पाए जाते हैं वा इनके अतिरिक्त कोई और भी ?

उत्तर (१) वेद स्मृति आदिमें वर्ण चार ही पाये जाते हैं, अधिक नहीं। इसमें वेद-प्रमाण—

ब्राह्मणोस्य मुखमासीद् बाहू राजन्य कृतः।
उरू तदस्य यद् वैश्यः, पद्भ्या ५ शूद्रो अजायत ॥
(यजुः वा० सं० ३१।११)

स्मृतिका प्रमाण—

ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यस्त्रयो वर्णा द्विजातयः।
चतुर्थ एकजातिस्तु शूद्रो, नास्ति तु पञ्चमः॥
(मनुस्मृति १०।४)

तब इन चार वर्णोंसे भिन्न जातियां वर्णसङ्कर, वा अवर्ण वा पञ्चम मानी जाती हैं, वर्ण नहीं।

प्रश्न (२) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रोंमें परस्पर विवाह हो सकते हैं या नहीं ?

उ० (२) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रोंमें परस्पर विवाह प्रशस्त नहीं माना जाता, किन्तु कामज होनेसे निन्दित होता है। जैसेकि—मनुस्मृतिमें—

सवर्णाग्रे द्विजातीनां प्रशस्ता दारकर्मणि।
कामतस्तु प्रवृत्तानामिमाः स्युः क्रमशोऽवराः॥
(३।१२)

कलियुगमें तो वैसा विवाह वर्जित किया गया है, क्योंकि—कलियुगमें काम अधिक होनेसे अव्यवस्था होनेका भय है। अव्यवस्थाका कारण यह है कि—फिर शुद्ध वर्णव्यवस्था नष्ट हो जायगी, क्योंकि—शुद्ध वर्णकी उत्पत्ति समान-वर्ण-वाले मातापितासे ही होती है, जैसेकि मनुस्मृतिमें—

सर्ववर्णेषु तुल्यासु पत्नीष्वक्षतयोनिषु।
आनुलोम्येन सम्भूता जात्या ज्ञेयास्त एव ते॥
(१०।५)

याज्ञवल्क्यस्मृतिमें भी कहा है—

सवर्णेभ्यः सवर्णासु जायन्ते हि सजातयः॥

(आचाराध्याय वर्ण जातिविवेक प्रकरण, ९० श्लोक)

वेदमें भी "सवर्णामददुर्विवस्वते" ऋ० १०।१७।२ यहां पर सवर्णादानका यौगिकरूपमें समर्थन किया है।

प्र० (३) चारों वर्णोंमें लोमप्रतिलोमज सङ्कर सन्तान किस वर्णमें समाविष्ट हो सकती है ?

उ० (३) सङ्कर-सन्तान शुद्ध-वर्ण न होनेसे वर्णमें समाविष्ट नहीं किये जाते; किन्तु वर्णसङ्कर होते हैं। उनके पृथक् पृथक् नाम मूर्धावसिक्थ आदि याज्ञवल्क्य स्मृति आदि स्मृतियोंमें प्रसिद्ध हैं, कहीं उनके लिये वर्णशब्द यदि आता भी है तो गौणतासे।

प्र० (४) वीर्य प्रधान माना जाय या क्षेत्र प्रधान ?

उ० (४) बीज प्रधानताका भी पक्ष मिलता है, क्षेत्र प्रधानताका भी। परन्तु "तस्माद् बीजं प्रशस्यते" १०।७२ से बीजकी प्रधानता ध्वनित होती है। नियोगादिमें क्षेत्र-प्रधानता भी मानी गई है। पर नियोग कलिवर्जित है।

प्र० (५) क्या एक ब्राह्मण दूसरे ब्राह्मणका बनाया कच्चा भोजन करने पर प्रायश्चित्त करे ?

उ० (५) यद्यपि स्मृति आदिमें तो एक ब्राह्मणको दूसरे ब्राह्मणके बनाये भोजनके खाने आदिका निषेध वा प्रायश्चित्त स्पष्टतया नहीं मिलता; तथापि आजकल यह बन्धन जो प्रचलित हैं, उसका कारण आह्निक-तत्त्वसूत्रावली आदिमें लिखा है —

एकपङ्क्त्यां न भोक्तव्यमपि स्वजनबान्धवैः।
न जाने कस्य किं पापं प्रच्छन्नं कुत्र किं भवेत्॥

इस प्रकार नितरां शुद्धताके लिये यह नियम लागू रक्खा गया।

प्रायः एक वर्ग वाले मण्डलका समान व्यवहार होता है, समान नियमादि होते हैं, इस लिये उनके हाथका खाया भी जा सकता है; परन्तु भिन्न वर्ग वालोंके परस्पर नियम तथा आहार-व्यवहारादिमें बहुत भेद सम्भव होते हैं; अतः उनके हाथका खाना भी शुद्ध नहीं हो सकता। यद्यपि पञ्जाबमें अब यह नियम नहीं रहे, किन्तु युक्तप्रान्त वा पूर्व आदिमें ही यह नियम देखे जाते हैं; तथापि कोई यदि इन नियमों पर चल सके; तो अच्छी बात होगी। इसी प्रकार विवाह भी उसी अपने वर्गमें ही उचित है, क्योंकि आचार आदिका वैषम्य न होनेसे कोई विवाद आदि भी नहीं हो पाता। भिन्नोंमें आचारोंकी भिन्नता हो जानेसे उनमें रक्तसम्बन्ध भी हानिप्रद हो सकता है।

प्र० (६) क्या ब्राह्मणको द्विजमात्र (ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य) का बनाया कच्चा भोजन करने पर कोई पातित्य या दोष लगता है।

उ० (६) जब ब्राह्मणोंमें ही परस्पर भेद हो जाते हैं; तब अन्य वर्णोंका तो क्या कहना। शुद्धता यही होगी कि अपने वर्णका खाया जाय। तथापि ब्राह्मण को द्विजके भोजन कर लेनेमें हमने अभी तक पातित्य दोषका वर्णन कहीं नहीं देखा। सम्भव है कहीं वर्णन हो। इस विषयमें संगृहीत महानिबन्धोंके ग्रन्थ द्रष्टव्य हैं। हां, यदि "अन्नस्य अश्यमानस्य योऽणिमा....तन्मनो भवति" (६।५।६, आहारशुद्धौ सत्वशुद्धिः, सत्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः स्मृतिलाभे सर्वग्रन्थीनां विप्रमोक्षः" (७।२६।२) "अन्नमय ꣳ हि सौम्य! मनः" (६।५।४) छान्दोग्य-उपनिषत्, प्रोक्त इस सूक्ष्मतामें जाएं; तो अपनेसे भिन्न व्यवहार वालेके अन्न खानेसे उसका मन पर दुष्प्रभाव होनेसे पातित्य भी हो सकता है, क्योंकि—ब्राह्मणके सत्त्व-गुणप्रधान होनेसे क्षत्रियादिके रजोगुणादिप्रधान होनेसे गुणवैषम्यमूलक आहार खानेके कारण पातित्य सम्भव है।

प्र० (७) किस किस वर्णका भोजनके समय एक ही पंक्तिमें समावेश हो सकता है?

उ० (७) इसका उत्तर पूर्व आ चुका है। समान वर्ग वाले ब्राह्मणादि ही एक पंक्तिमें रहें। वे भी आपस में पार्थक्यके लिये 'को हि जानाति किं पापं प्रच्छन्नं कस्यचिद् भवेत्' इस नियमके अनुसार भस्म वा जल आदि की रेखासे भोजनस्थानमें पार्थक्य कर लें।

चेष्टा की गई है कि—इन उत्तरोंमें शास्त्रीयता रहे; परन्तु एक व्यक्तिको नहीं; इन बातोंका उत्तर बहुत विद्वानोंको देना चाहिये। 'ज्ञातसारोपि खल्वेकः सन्दिग्धे कार्यवस्तुनि' (शिशुपालवध २।१२) यह नियम स्वाभाविक है।

ज्योतिष सम्बन्धी कुछ प्रश्न

निम्न शंकाओंका उत्तर विद्वान् महानुभाव 'श्रीस्वाध्याय' में ही प्रकाशित करानेकी कृपा करें ताकि ज्योतिश्शास्त्र प्रेमियों और जिज्ञासुओंको लाभ हो। प्रश्न निम्न हैं—

बालाद्यवस्था जोकि सम विषम राशिमें विपरीत क्रमसे कही गई है, वह किस आधार पर है? दूसरा यह कि बाल अवस्थामें किञ्चित्फल, कुमारमें अर्द्धादि। किन्तु जब ग्रह अपने परमोच्चांशोंमें हो जैसे मेषराशिके प्रथम पांच अंशोंमें बाल, तथा दश अंशों तक कुमार और फिर तुलामें भी यही क्रम। और दूसरा बृहस्पति तथा चन्द्रमा पूर्व पांच अंश तथा ३ अंश कर्क तथा वृषराशिकी मरण

अवस्थामें होते हैं। जिसका फल 'मरणं मृताख्य:' के अनुसार बहुत ही अनिष्ट होना चाहिए। किन्तु इसका फल विपरीत होता है। इसका सयुक्तिक उत्तर होना चाहिये।

दूसरा प्रश्न—"चन्द्रमंगलसंयोगे लक्ष्मी गेहं न मुंचति" के अनुसार तो बहुत ही लक्ष्मीवान् होना चाहिये। किन्तु "धनेस्थितौ च भौमेन्दू कथितौ धन नाशकौ" के अनुसार इनका संयोग धन नाशक कहा गया है। इसका कारण क्या है? इनका उत्तर यदि सयुक्तिक मिल गया तो दूसरे प्रश्न भी सेवामें उपस्थित किये जायेंगे।

—जिज्ञासु—पं० यशोदानन्दन शास्त्री



कवि से !

[क०—श्री बालकवि रामानन्द शर्मा सारस्वतरत्न]



हे! कवि अरुण-अरुण-आभासे
जीवन-ज्योति जगाओ।
भारत माँके मृदु-अञ्चलसे
स्नेह-सुधा सरसाओ॥
आज तुम्हारे पथमें छाईं
जन-जनकी चीत्कारें।
आज तुम्हें ग्रसनेको व्याकुल
व्यालोंकी फुंकारें॥
रोक रही हैं किन्तु आज कवि
ज्योति-दूत बन आओ।
जंजीरोंकी झंकारोंसे
तन्त्रीतार मिलाओ॥
तुम तो प्रलयङ्कर शाश्वत हो
सोता देश जगाओ।
हे! कवि.................॥
जगतीतलमें गूंज रहा है
अन्यायोंका क्रन्दन।
एक बार फिर कविता-शरसे
कर दो उसका भञ्जन॥

'मा-निषाद' की परिभाषामें
सांसोंकी झंकारें।
तुमको व्याकुल बना रही हैं
आज समाज पुकारें।
मौन आज आदर्श काँपता
उसके गीत सुनाओ।
हे! कवि.................॥
आज तुम्हारी अभिलाषाकी
जलती हैं तसवीरें।
'प्रतिबन्धों' में चमक रही हैं
कवियोंकी तकदीरें॥
क्यों न? शांतिकी हाला भरकर
आज पिलाओ प्याला।
जिसको पी-पी कर सारा जग
बन जाये मतवाला॥
शान्ति क्रान्तिका वन्दन कर कवि
क्रांति शांति वा सरसाओ।
हे! कवि.................॥



दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार चक्र

[लेखक—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी, सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय']

गत चन्द्रग्रहणके दिन ता० २५ जूनसे भारतके वायसराय महोदय द्वारा अखिल भारतीय नेता-सम्मेलनका शिमला शैल पर अभी-अभी जो अभूतपूर्व अभिनय हुआ, वह भारतके इतिहासमें एक अद्भुत घटना थी। इस सम्मेलनसे भारतके प्रत्येक वर्गके व्यक्तिको स्वराज्य प्राप्ति और निकट-भविष्यमें सब प्रकारके दुःखोंसे मुक्ति पाकर सुशासन (रामराज्य) स्थापित होनेकी दृढाशा हो गयी थी। समस्त संसारकी दृष्टि शिमला शैलपर लगी हुई थी। किन्तु, जिस अशुभ दिन और समयमें यह सम्मेलन प्रारम्भ हुआ था उसी दिनसे हमने समझ लिया था कि इसका परिणाम भारत और विशेषकर आर्यहिन्दुओंके लिए अच्छा न होगा। सम्मेलनारम्भ समयकी लग्नकुण्डली द्वारा हमने ग्रहों के बलाबल-योग-संगति लगाकर इस सम्मेलनके भविष्य एवं श्रीजिन्नाह और श्री० वायसरायकी मनोवृत्तिका सप्रमाण विश्लेषण करके इसके द्वारा होने वाले हानिलाभका विस्तृत विवेचन किया था। किन्तु, प्रेसकी असुविधा (अकस्मात् कई कम्पोजीटरोंके नौकरी छोड़ देने) से इस अङ्कको हम आषाढ़ शु० १ को प्रकाशित न कर सके। १५ जूनको सम्मेलन का परिणाम पाठकोंके सामने आ ही गया। अतः अब उस विस्तृत विवेचनको यहाँ न देकर पाठकोंसे इतना ही निवेदन करेंगे कि सन् १९४५के आरम्भमें ही गत पौष के 'हेमन्ताङ्क' और 'वसन्ताङ्क'में हमने इस वर्षका जो भविष्य लिखा है उसी पर विश्वास रक्खें। अभी अधिक सुख शान्तिकी आशा करना दुराशामात्र होगी। यह भी हम पहिले कई बार लिख चुके हैं कि परमुखापेक्षी परावलम्बी आत्मज्ञानहीन स्वार्थी पुरुषोंको स्वतन्त्रता कभी प्राप्त नहीं हो सकती। प्रभाविनी राष्ट्रशक्ति ही पूर्ण स्वातन्त्र्य सुखका उपभोग करा सकती है। एतदर्थ भारतीयोंको अकर्मण्य एवं कोरे आशावादी न बनकर 'श्रीराष्ट्रालोक'के आदेशानुसार त्रिविध राष्ट्रशक्तिकी वास्तविक उपासना करनी चाहिए—

राष्ट्रकी त्रिविध शक्तियां ये हैं—

राष्ट्रकाली राष्ट्रलक्ष्मीस्तथा राष्ट्रसरस्वती।
सेवनीया प्रयत्नेन भोगमोक्ष प्रदायिनी॥

[राष्ट्रमें विराजमान काली (अन्याय विनाशक शक्ति) लक्ष्मी (ऐश्वर्य व्यवस्थापिका शक्ति) सरस्वती (विद्या-बुद्धि-प्रसारिका शक्ति) की प्रत्येक राष्ट्रियको प्रयत्नसे उपासना करनी चाहिए, कारण यह त्रिविध शक्तिकी उपासना ही व्यावहारिक समस्त सुख स्वातन्त्र्य तथा पारमार्थिक सुख स्वातन्त्र्य (मोक्ष)की देनेवाली है]

आजसे ७ मास पूर्व 'हेमन्ताङ्क' में हमने लिखा था कि "...... वायसराय श्री लार्ड वेवल महोदयको इस वर्षके पूर्वार्द्धमें किसी महत्त्वपूर्ण मन्त्रणाके लिए यूरोप यात्रा करनी पड़ेगी और भारतीय समस्याओंके सुलझानेका प्रयत्न आपकी ओरसे होगा...... बृटिश शासकोंकी ओरसे भारतीय गत्यवरोध दूर करने और औपनिवेशिक स्वराज्य देनेकी चर्चा विशेष रूपसे होगी। साम्प्रदायिक मतभेद और कलह भी होंगे। गत्यवरोध दूर करनेके लिए नेताओंको महान् त्याग और परिश्रम करना पड़ेगा। ....कारण विशेषसे बाध्य होकर बृटिश शासकोंको भारतीय स्वतन्त्रताके लिए कागजी घोषणा करनी पड़े, किन्तु यह क्रियात्मक नहीं होगी।......" इत्यादि।

ये सब बातें घटनाचक्रने संसारके सामने सत्य सिद्ध कर दी हैं। अभी उक्त सम्मेलनका असफल होना एक प्रकारसे हम आर्य लोगोंके लिए श्रेयस्कर ही है।

आगे चलकर भविष्यमें इसकी जो प्रतिक्रिया होगी उसका लाभ हमें अवश्य मिलेगा। श्रावण कृष्णपक्ष १३ दिनका है और आगे भाद्रपदमें शनि-राहु-मंगल एकत्र हो रहे हैं ये संसारकी राजनीतिमें कई प्रकारके उलटफेर करेंगे। प्रशान्त एवं जापानका युद्ध उग्ररूप धारण करेगा और भांति-भांतिकी आधिव्याधियों से भयंकर संहार हो। ता० २२ सितम्बरको शनि मित्र राशिको छोड़कर शत्रुके घर कर्कराशिमें जा रहा हैं; उस समय आगे कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाएं घटेंगी। मित्रराष्ट्रोंके पारस्परिक सम्बन्ध बिगड़ेंगे। यदि ऐसा न हो सका तो मित्र शत्रुओंमें क्रांतिपात, पारस्परिक सन्धिचर्चा एवं उलटफेर अवश्य होगा। वर्तमान मित्रराष्ट्रोंका आन्तरिक सौहार्द न्यून होगा। श्रावणके अनन्तर भारतीय प्रगतिका वर्तमान प्रश्न पुनः बृटिश शासकों और वायसराय द्वारा उठाया जायगा। प्रान्तीय धारासभाओंके चुनावका उपक्रम बनेगा। कुछ मन्त्री मण्डलोंमें परिवर्तन होगा, उस समय सम्भवतः श्रीएमरी भी भारतमन्त्रीके पद पर न रह सकेंगे।

जैसा कि गताङ्कमें सूचित किया गया था—उसीके अनुसार सानफ्रान्सिस्को परिषद्का परिणाम पाठकों के सामने आ चुका है। अब इस समय जर्मनीमें जो त्रिराष्ट्रनायक सम्मेलन प्रारम्भ हो रहा है उससे भी निकट भविष्यमें किसी विशेष प्रकारकी शुभाशा प्रतीत नहीं होती। आगे त्रयोदशदिन पक्ष और शनि-राहु-मंगल योगके कारण हमें भय है कि इस सम्मेलन में ही संसारको कोई अनिष्टप्रद वार्ताकी प्रतिध्वनि न सुनाई दे जाये। सम्मेलनमें त्रिमूर्तिकी पारस्परिक चर्चा प्रारम्भमें ऊपर-ऊपरसे संसारको जितनी मित्रतापूर्ण आशाजनक और विश्वशान्तिके लिए हितकर दिखाई देगी उतना उसका आन्तरिक रूप कल्याणकारक न होगा। यह त्रिमूर्ति-सम्मेलन पहिले सम्मेलनोंसे अधिक लम्बा खिंचेगा और कुछ समय के लिए पारस्परिक समस्याएं जटिल होंगी। श्री स्टालिन का महत्त्व बढ़ेगा। यद्यपि मिथुनके शनिमें मित्रराष्ट्र एक सूत्रमें बंधे दिखाई देंगे तथापि शनि राहु मंगल का योग संसारके लिए अच्छा न होगा। इसमें अनेक प्रकारकी आधिव्याधियोंसे जनता पीड़ित रहे और यूरोप एवं एशियामें कुछ एक अनिष्टप्रद घटनाएं घटित होना भी सम्भव हैं।

अन्य शुभाशुभ योग

गत 'वसन्ताङ्क'के ग्रहण फलमें इतनी विशेषता यह और हो गई है कि चन्द्रग्रहणसे एक सप्ताहके अन्दर-अन्दर भारतके कई प्रान्तोंमें वर्षा हो गई थी, अतः ग्रहणका अधिक अनिष्टफल उन प्रान्तोंमें नहीं होगा। यदि ग्रहणसे सप्ताहान्तर्गत वर्षा हो जावे तो ग्रहणजन्य अशुभफलकी निवृत्ति हो कर सुभिक्ष होना शास्त्रकारोंने बतलाया है। यथा—

अविकृतसलिलनिपातैः सप्ताहान्तः सुभिक्षमादेश्यम्।
यच्चाशुभं ग्रहणजं तत्सर्वं नाशमुपयाति॥

आषाढकी सोमवती अमावस्याको आर्द्रानक्षत्र भी भारतके लिए सुभिक्ष कारक है—

आषाढस्याप्यमावास्या यदि सोमवती भवेत्।
सुभिक्षं कुरुतेऽवश्यं नक्षत्रमृगसप्तके॥

आगे आषाढ शु० ११ को शुक्रवार, श्रावण शु० ७ को स्वातिनक्षत्र तथा भाद्र० शु० ४को सोमवार चित्रा-नक्षत्र और ५ को स्वातिका संयोग भी शुभकारक है।

शनिराहु युति

उपर्युक्त सब शुभ योगोंमें एक महान् अशुभ योग पड़ाहै मिथुन राशिमें शनिराहुकी युति और भादपद में श० रा० मं० इन तीन ग्रहोंका एकत्र होना। इस अशुभयोगके कारण संसारमें कई अकल्पित आश्चर्यकारक अप्रिय घटनाएं घटित होना सम्भव है।

मिथुनराशिका प्रभाव अमेरिका पर अधिक है, अतः इसका अनिष्ट परिणाम अमेरिकामें अधिक होगा। यद्यपि शनिराहुकी अंशसाम्य पूर्ण युति ता०७ जूनको हो चुकी है, तथापि इसका फल जबतक ये एक राशिमें एकत्र रहते हैं तबतक होताहै। मिथुनके शनि

राहुमें ही अकस्मात् श्री० प्रे० रूजवेल्टका देहावसान हुआ था। अब वर्तमान प्रे० ट्रूमेनको भी इस अशुभ योगमें अपने स्वास्थ्य और राष्ट्रका पूरा ध्यान रखना चाहिए। इस योगमें अमेरिकामें अशान्तिकारक अकल्पित अप्रिय प्रसंग उपस्थित होनेकी सम्भावना है। शनि नदी, जेलों, अश्वेत जातियों, लोहा, शीशा, तूफान, आंधी और छोटी जातियोंका शासक है। राहु विषैले सर्पों, आविष्कारकों, समुद्री-वायवी-यातायात, गैसों, राजनैतिक चक्रों तथा निर्वासितोंका प्रतिनिधि है। इन दोनों ग्रहोंके स्वभावकी संगतिसे हम कह सकते हैं कि संसारमें पूंजीपति और मजदूरों, गौरी काली जातियों और प्रगतिशील एवं प्रतिगामी शक्तियों में संघर्ष होगा। आर्थिक प्रतिबन्धोंके कारण सामाजिक जीवनमें अनुदार भावोंकी प्रधानता रहेगी। भारतके पूर्वी तट पर जहाजोंको भय। पूर्वी समुद्रमें उत्पात। आगे चलकर अन्तर्राष्ट्रिय राजनीतिमें पारस्परिक मतभेद और स्पष्ट हो जावेंगे। प्रजातन्त्र साम्यवाद भावनाकी वृद्धि। रोग दुर्भिक्षादि द्वारा प्राणहानि। कई बड़े २ कोट्यधीश पूंजीपतियोंकी स्थिति खराब। दुराचार वृद्धि। फसलमें रोग। कहीं २ अतिवृष्टिसे जन धन और फसलका नाश। मध्यपूर्वके लोगोंको विशेष हानि हो। इस योगके कारण भारतकी कुछ नदियोंमें भी भयंकर बाढ़ आवे और फसलोंको भी हानि हो। पूर्वी भारत मध्यप्रान्त और पश्चिममें विशेष हानि हो। भारतकी आर्थिक स्थिति खराब रहे। अन्न वस्त्रादिकी समस्यामें अक्टूबर तक कोई विशेष सुधार न हो सकेगा।

श्रीचर्चिल चुनावमें विजयी होंगे

इंगलैण्डमें नया चुनाव प्रारम्भ है, इसी मास जुलाई के अन्त तक परिणाम निकल आयेगा। बृटिश प्रधान मन्त्री श्रीचर्चिलके ग्रह इस समय बलवान् हैं। अभी उनको गुरु महादशामें शुक्रान्तर चल रहा है। पराक्रमेश गुरु भाग्येश बुधके साथ लग्नमें है और लग्नेश शुक्र पराक्रममें पड़ा है अतः यह समय इनके लिए विजयकारक है। गत ग्रहण भी इनकी राशिसे श्रेष्ठ था। और इनके राज्येश चन्द्रमाके साथ आजकल गोचरसे बृहस्पति चल रहा हैं, तथा ११ वें शनिराहु है अतः हमें विश्वास है कि चाहे कितना ही विरोधी वातावरण क्यों न हो, बहुमत इनके पक्षमें रहेगा और साम्राज्यके प्रधानमन्त्रित्वका महत्त्वपूर्ण सम्मान इन्हें एक बार पुनः प्राप्त होगा। फिर आगे चलकर चाहे भले ही विरोधी पार्टी प्रबल हो जाये। अक्तूबरसे आगे आपको स्वास्थ्यकी ओरसे विशेष सावधान रहना चाहिए। आपके प्रतिद्वन्द्वी श्री एटलीकी जन्मकुण्डली हमारे सामने नहींहैं; अतः उनके लिए हम नहीं कह सकते कि वे सफलताके कितने समीप रहेंगे। हमें आशा नहीं है कि श्री एटलीकी जन्मकुण्डलीके ग्रह इस समय श्रीचर्चिलसे विशेष बलवान् होंगे। यदि ऐसा हुआ तो उनका प्रारब्ध और ग्रह अवश्य बलवान् मानने पड़ेंगे।

राष्ट्रान्तरोंमें

अक्तूबर तकका समय जापानके लिए हानिकारक रहेगा। युद्ध वायु आक्रमण और भूकम्पादि उत्पातोंसे जन नाश अधिक होगा, मन्त्रीमण्डलमें पुनः कुछ परिवर्तन होगा, मित्रराष्ट्रोंका घेरा बढ़ेगा। तथापि निकट भविष्यमें जापानका पूर्णरूपेण विनाश वा आत्मसमर्पण नहीं होगा। पश्चिमी यवनराज्यों (अरब यूनान टर्की ईरान ईराक आदि) में दैवी उत्पात एवं अशान्तिकारक घटनाएं अधिक होंगी। रूसके अधिनायक श्री स्टेलिनको गत सं० २००१ के कार्तिकसे मंगलकी महादशामें शनिका अन्तर चल रहा है, यह शनि योगकारक केन्द्र-त्रिकोणेश हो कर राज्येशके साथ पड़ा है अतः इस अन्तरमें इनकी महत्त्वाकांक्षाएं बहुत बढ़ेंगी। संसारके सभी राष्ट्र इनसे प्रभावित होंगे। ब्रिटेन अमेरिका इनसे विशेष सतर्क रहेंगे। चीनको रूसका विशेष सहयोग प्राप्त होगा (जैसा कि हम गताङ्कमें भी लिख चुके हैं) चीनके समुद्र तट पर युद्ध प्रगति बढ़ेगी। जलप्लावन वा कीटादिसे फसल को बहुत हानि होगी और बालमृत्यु अधिक होंगी।

आश्विन वा अक्तूबरसे आगे भारत और संसार

आगे चलकर भविष्यमें इसकी जो प्रतिक्रिया होगी उसका लाभ हमें अवश्य मिलेगा। श्रावण कृष्णपक्ष १३ दिनका है और आगे भाद्रपदमें शनि-राहु-मंगल एकत्र हो रहे हैं ये संसारकी राजनीतिमें कई प्रकारके उलटफेर करेंगे। प्रशान्त एवं जापानका युद्ध उग्ररूप धारण करेगा और भांति-भांतिकी आधिव्याधियों से भयंकर संहार हो। ता० २२ सितम्बरको शनि मित्र राशिको छोड़कर शत्रुके घर कर्कराशिमें जा रहा है, उस समय आगे कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाएं घटेंगी। मित्रराष्ट्रोंके पारस्परिक सम्बन्ध बिगड़ेंगे। यदि ऐसा न हो सका तो मित्र शत्रुओंमें क्रांतिपात, पारस्परिक सन्धिचर्चा एवं उलटफेर अवश्य होगा। वर्तमान मित्रराष्ट्रोंका आन्तरिक सौहार्द न्यून होगा। श्रावणके अनन्तर भारतीय प्रगतिका वर्तमान प्रश्न पुनः बृटिश शासकों और वायसराय द्वारा उठाया जायगा। प्रान्तीय धारासभाओंके चुनावका उपक्रम बनेगा। कुछ मन्त्री मण्डलोंमें परिवर्तन होगा, उस समय सम्भवतः श्रीएमरी भी भारतमन्त्रीके पद पर न रह सकेंगे।

जैसा कि गताङ्कमें सूचित किया गया था—उसीके अनुसार सानफ्रान्सिस्को परिषदका परिणाम पाठकों के सामने आ चुका है। अब इस समय जर्मनीमें जो त्रिराष्ट्रनायक सम्मेलन प्रारम्भ हो रहा है उससे भी निकट भविष्यमें किसी विशेष प्रकारकी शुभाशा प्रतीत नहीं होती। आगे त्रयोदशदिन पक्ष और शनि-राहु-मंगल योगके कारण हमें भय है कि इस सम्मेलन में ही संसारको कोई अनिष्टप्रद वार्ताकी प्रतिध्वनि न सुनाई दे जाये। सम्मेलनमें त्रिमूर्तिकी पारस्परिक चर्चा प्रारम्भमें ऊपर-ऊपरसे संसारको जितनी मित्रतापूर्ण आशाजनक और विश्वशान्तिके लिए हितकर दिखाई देगी उतना उसका आन्तरिक रूप कल्याणकारक न होगा। यह त्रिमूर्ति-सम्मेलन पहिले सम्मेलनोंसे अधिक लम्बा खिंचेगा और कुछ समय के लिए पारस्परिक समस्याएं जटिल होंगी। श्री स्टालिन का महत्त्व बढ़ेगा। यद्यपि मिथुनके शनिमें मित्रराष्ट्र एक सूत्रमें बंधे दिखाई देंगे तथापि शनि राहु मंगल का योग संसारके लिए अच्छा न होगा। इसमें अनेक प्रकारकी आधिव्याधियोंसे जनता पीड़ित रहे और यूरोप एवं एशियामें कुछ एक अनिष्टप्रद घटनाएं घटित होना भी सम्भव हैं।

अन्य शुभाशुभ योग

गत 'वसन्ताङ्क'के ग्रहण फलमें इतनी विशेषता यह और हो गई है कि चन्द्रग्रहणसे एक सप्ताहके अन्दर-अन्दर भारतके कई प्रान्तोंमें वर्षा हो गई थी, अतः ग्रहणका अधिक अनिष्टफल उन प्रान्तोंमें नहीं होगा। यदि ग्रहणसे सप्ताहान्तर्गत वर्षा हो जावे तो ग्रहणजन्य अशुभफलकी निवृत्ति हो कर सुभिक्ष होना शास्त्रकारोंने बतलाया है। यथा—

> अविकृतसलिलनिपातैः सप्ताहान्तः सुभिक्षमादेश्यम्।
> यच्चाशुभं ग्रहणजं तत्सर्वं नाशमुपयाति॥

आषाढकी सोमवती अमावस्याको आर्द्रानक्षत्र भी भारतके लिए सुभिक्ष कारक है—

> आषाढस्याप्यमावास्या यदि सोमवती भवेत्।
> सुभिक्षं कुरुतेऽवश्यं नक्षत्रमृगसप्तके॥

आगे आषाढ शु० ११ को शुक्रवार, श्रावण शु० ७ को स्वातिनक्षत्र तथा भाद्र० शु० ४को सोमवार चित्रा-नक्षत्र और ५ को स्वातिका संयोग भी शुभकारक है।

शनिराहु युति

उपर्युक्त सब शुभ योगोंमें एक महान् अशुभ योग पड़ा है मिथुन राशिमें शनिराहुकी युति और भाद्रपद में श० रा० मं० इन तीन ग्रहोंका एकत्र होना। इस अशुभयोगके कारण संसारमें कई अकल्पित आश्चर्यकारक अप्रिय घटनाएं घटित होना सम्भव है।

मिथुनराशिका प्रभाव अमेरिका पर अधिक है, अतः इसका अनिष्ट परिणाम अमेरिकामें अधिक होगा। यद्यपि शनिराहुकी अंशसाम्य पूर्ण युति ता०७ जूनको हो चुकी है, तथापि इसका फल जबतक ये एक राशिमें एकत्र रहते हैं तबतक होताहै। मिथुनके शनि

राहुमें ही अकस्मात् श्री० प्रे० रूजवेल्टका देहावसान हुआ था। अब वर्तमान प्रे० ट्रूमैनको भी इस अशुभ योगमें अपने स्वास्थ्य और राष्ट्रका पूरा ध्यान रखना चाहिए। इस योगमें अमेरिकामें अशान्तिकारक अकल्पित अप्रिय प्रसंग उपस्थित होनेकी सम्भावना है। शनि नदी, जेलों, अश्वेत जातियों, लोहा, शीशा, तूफान, आंधी और छोटी जातियोंका शासक है। राहु विषैले सर्पों, आविष्कारकों, समुद्री-वायवी-यातायात, गैसों, राजनैतिक चक्रों तथा निर्वासितोंका प्रतिनिधि है। इन दोनों ग्रहोंके स्वभावकी संगतिसे हम कह सकते हैं कि संसारमें पूंजीपति और मजदूरों, गोरी काली जातियों और प्रगतिशील एवं प्रतिगामी शक्तियों में संघर्ष होगा। आर्थिक प्रतिबन्धोंके कारण सामाजिक जीवनमें अनुदार भावोंकी प्रधानता रहेगी। भारतके पूर्वी तट पर जहाजोंको भय। पूर्वी समुद्रमें उत्पात। आगे चलकर अन्तर्राष्ट्रिय राजनीतिमें पारस्परिक मतभेद और स्पष्ट हो जावेंगे। प्रजातन्त्र साम्यवाद भावनाकी वृद्धि। रोग दुर्भिक्षादि द्वारा प्राणहानि। कई बड़े २ कोट्यधीश पूंजीपतियोंकी स्थिति खराब। दुराचार वृद्धि। फसलमें रोग। कहीं २ अतिवृष्टिसे जन धन और फसलका नाश। मध्यपूर्वके लोगोंको विशेष हानि हो। इस योगके कारण भारतकी कुछ नदियोंमें भी भयंकर बाढ़ आवे और फसलोंको भी हानि हो। पूर्वी भारत मध्यप्रान्त और पश्चिममें विशेष हानि हो। भारतकी आर्थिक स्थिति खराब रहे। अन्न वस्त्रादिकी समस्यामें अक्टूबर तक कोई विशेष सुधार न हो सकेगा।

श्रीचर्चिल चुनावमें विजयी होंगे

इंगलैण्डमें नया चुनाव प्रारम्भ है, इसी मास जुलाई के अन्त तक परिणाम निकल आयेगा। बृटिश प्रधान मन्त्री श्रीचर्चिलके ग्रह इस समय बलवान् हैं। अभी उनको गुरु महादशामें शुक्रान्तर चल रहा है। पराक्रमेश गुरु भाग्येश बुधके साथ लग्नमें है और लग्नेश शुक्र पराक्रममें पड़ा है अतः यह समय इनके लिए विजयकारक है। गत ग्रहण भी इनकी राशिसे श्रेष्ठ था। और इनके राज्येश चन्द्रमाके साथ आजकल गोचरसे बृहस्पति चल रहा हैं, तथा ११ वें शनिराहु है अतः हमें विश्वास है कि चाहे कितना ही विरोधी वातावरण क्यों न हो, बहुमत इनके पक्षमें रहेगा और साम्राज्यके प्रधानमन्त्रित्वका महत्त्वपूर्ण सम्मान इन्हें एक बार पुनः प्राप्त होगा। फिर आगे चलकर चाहे भले ही विरोधी पार्टी प्रबल हो जाये। अक्तूबरसे आगे आपको स्वास्थ्यकी ओरसे विशेष सावधान रहना चाहिए। आपके प्रतिद्वन्द्वी श्री एटलीकी जन्मकुण्डली हमारे सामने नहीं हैं; अतः उनके लिए हम नहीं कह सकते कि वे सफलताके कितने समीप रहेंगे। हमें आशा नहीं है कि श्री एटलीकी जन्मकुण्डलीके ग्रह इस समय श्रीचर्चिलसे विशेष बलवान् होंगे। यदि ऐसा हुआ तो उनका प्रारब्ध और ग्रह अवश्य बलवान् मानने पड़ेंगे।

राष्ट्रान्तरोंमें

अक्तूबर तकका समय जापानके लिए हानिकारक रहेगा। युद्ध वायु आक्रमण और भूकम्पादि उत्पातोंसे जन नाश अधिक होगा, मन्त्रीमण्डलमें पुनः कुछ परिवर्तन होगा, मित्रराष्ट्रोंका घेरा बढ़ेगा। तथापि निकट भविष्यमें जापानका पूर्णरूपेण विनाश वा आत्मसमर्पण नहीं होगा। पश्चिमी यवनराज्यों (अरब यूनान टर्की ईरान ईराक आदि) में दैवी उत्पात एवं अशान्तिकारक घटनाएं अधिक होंगी। रूसके अधिनायक श्री स्टेलिनको गत सं० २००१ के कार्तिकसे मंगलकी महादशामें शनिका अन्तर चल रहा है, यह शनि योगकारक केन्द्र-त्रिकोणेश हो कर राज्येशके साथ पड़ा है अतः इस अन्तरमें इनकी महत्त्वाकांक्षाएं बहुत बढ़ेंगी। संसारके सभी राष्ट्र इनसे प्रभावित होंगे। ब्रिटेन अमेरिका इनसे विशेष सतर्क रहेंगे। चीनको रूसका विशेष सहयोग प्राप्त होगा (जैसा कि हम गताङ्कमें भी लिख चुके हैं) चीनके समुद्र तट पर युद्ध प्रगति बढ़ेगी। जलप्लावन वा कीटादिसे फसल को बहुत हानि होगी और बालमृत्यु अधिक होंगी।

आश्विन वा अक्तूबरसे आगे भारत और संसार

❀ ग्रहोंके नक्षत्र राशि भ्रमणका व्यापार पर प्रभाव ❀

[लेखक—श्री पं० बिहारीलाल जी शर्मा 'दैवज्ञ']



सूर्यका नक्षत्र और राशिभ्रमण

ता० १६ जुलाई पुष्यमें सूर्य—चांदी ऊन कपड़ा गुड़ सन और चपड़ाका मूल्य बढ़े। नाविकोंको कष्ट।

ता० २ अगस्त अश्लेषामें सूर्य—अलसी गुड़ गेहूँ व शेयरका मूल्य बढ़े, भारतमें सर्वत्र वर्षा प्रारम्भ हो।

ता० १६ अगस्त मघा नक्षत्र और सिंह राशिमें सूर्य—अनाज, एरण्डा गुड़ शक्कर गन्ना तिल तैल घृत और लाल रङ्गकी वस्तुओंका भाव बढ़े, वर्षा अधिक होनेसे कई जगह बहुत हानि हो, यात्रियों-को कष्ट,

ता० ३० अगस्त पू० फा०में—रुई चांदी कपड़ा गेहूँ सरसों और जवाहरातके भाव बढ़े। ज्वरोत्पत्ति।

ता० १३ सितम्बर उ० फा० में एरण्डा तैल सोना चांदी लोहा सरसोंका भाव बढ़े। पक्षियों-को कष्ट।

ता० १६ सितम्बर कन्यामें समक्षेत्री—रुई घृत तैल बिनौलाके भावमें तेजी, युवतियोंको पीड़ा।

ता० २६ सितम्बर हस्तमें—रुई गेहूं नमक सन गुड़ और खाण्डके भाव तेज। लेखकोंको कष्ट।

ता० १० अक्टूबर चित्रामें—रुई सूत कपड़ा और गेहूँका भाव बढ़े। ज्वरातिसारादि रोगसे जनता कष्ट पावे।

मङ्गलका राशिभ्रमण

ता० २७ अगस्त मिथुनमें मङ्गल समक्षेत्री—अमे-रिका देशवासी अगुआ बनकर रुईके मामलेमें बड़ा फेरफार करेंगे। अमेरिका स्पेन भारत प्रभृति देशोंमें किसी-न-किसी कारण आतङ्क वृद्धि हो।

बुधका नक्षत्र और राशि भ्रमण

ता० १६ जुलाई मघा नक्षत्र और सिंह राशि मित्र क्षेत्रमें—कपड़ा लकड़ी सूत तेज, अधिक वर्षासे फसल में हानि। फ्रांस देशमें अशान्ति।

ता० २६ अगस्त वक्रगतिसे अश्लेषा नक्षत्र और कर्क राशिमें बुध—अधिक वर्षासे पश्चिमी भारतमें जनताको नानाविध कष्ट, पुल टूटे, तालाब फूटे, सर्प भय, छलछिद्र और कूटनीतिमें वृद्धि हो।

ता० ३ सितम्बर मघा नक्षत्र और सिंह राशिमें—उत्पन्न हुई निराशा हटे, चिन्ता मिटे, अलसीके भावमें अचानक मन्दी आना पाया जाता है। मध्य यूरोपीय जनता अपनी ओरसे संसारको कोई विशेष कार्य करके दिखलावे।

ता० १४ सितम्बर पू० फा० में—ज्वरातिसार रोग वृद्धि, मध्य भारतकी खड़ी फसलमें हानिकी सम्भावना।

ता० २२ सितम्बर उ० फा० में—चांदीमें बड़ी सस्ताईका संकेत है, मन्दीका चांस सम्भालें। लड़-कियोंका अपहरण हो।

ता० २३ सितम्बर कन्याराशिमें स्वक्षेत्री—सोना चांदी शक्कर व रुईका भाव घटे।

ता० २६ सितम्बर हस्तमें—घोर गर्जनाके साथ

मेघ वर्षे खरीफकी फसल सुधरे। रुईके भावमें मंदी का वातावरण बढ़े, चांदी सस्ती बिके।

ता० ६ अक्टूबर चित्रामें—सिनेमा विभागमें उन्नति, खास २ नट नटियोंका भाग्योदय। वेश्याओं को कष्ट।

ता० १० अक्टूबर तुलामें मित्रक्षेत्री—रुईमें रौला, जापानियोंकी ओरसे शान्ति चर्चा वा सन्धि प्रस्ताव।

ता० १४ अक्टूबर स्वातिमें— गेहूँ सोना व रुईके भावमें अच्छी सस्ताईका योग है। मोतीका भाव घटे।

बुधकी अस्तोदय वक्रातिचार स्थिति

ता० २८ जुलाईसे मन्दातिमन्द गतिसे चल रहा हैं अतः कई कारणोंसे तेजीवालोंको भावकी चिन्ता सताये। मन्दीवाले चेतें।

ता० ६ अगस्तसे मन्दातिमन्द गतिमें वक्री हुआ। केवल ३ दिनके लिए तेजीका उछाला आये। रुई ५) ७) टके बढ़ने पर बेचो। नजराना लगानेपर न चूकिये, नितान्तमें भाव गिरेगा।

ता० १३ अगस्तसे मन्दगतिमें प्रवृत्त हुआ, रुई आदिमें घटे भाव सुधारनेका आइडिया जानिये। प्रत्येक नीचे भावके रियेक्शनमें माल खरीदो या नजराना लगाओ।

ता० २९ अगस्तको समगतिसे पूर्वमें उदय हुआ। दिखाई देने (उदय होने) से ४ दिनमें काटन कुष्टा आदिके भावमें तेजी। १०) १५) टके बढ़ना पाया जाता है, चांसका उपयोग करिये।

ता० २ सितम्बर समगतिसे मार्गी—कपासके बढ़े भाव शनैः शनैः एक सप्ताहमें घट जावें। ओछी घटबढ़।

ता० १४ सितम्बर शीघ्रगामी—रुईका भाव बढ़ने की सूचना मिलती है। समझदार सौदागरको चाहिये कि नजदीककी मासिक ड्यूडेट की तेजी लगा चांस खेल जावें।

ता० १७ सितम्बर शीघ्रातिशीघ्रगतिसे पूर्वमें अस्त हुआ; जबकि अबतकका अनुभव ऐसे मौके १०) १५) टके रुईके लिए तेजीका मिलता है तो यहां भी चार दिनमें यही बात होना जाने।

ता० २८ सितम्बर शीघ्रगतिमें—निकट भविष्यमें रुईके बढ़े चढ़े भाव प्रायः उतर जावें।

ता० ११ अक्टूबरसे समगतिमें—खास घट बढ़ प्रतीत नहीं होती, ऐसे मौकेपर नजराना खाना चतुराई है।

बृहस्पतिका नक्षत्र चरण और राशिभ्रमण

ता० १८ जुलाईको उ० फा० २ कन्याराशिमें—प्रजाको प्रसन्नता, राजकीय शासनतन्त्रमें सुप्रबन्ध, रुईके भावमें मन्दीकी सूचना, मौसममें विकृति, अतिवृष्टि आदि उत्पातोंसे जनताको कष्ट, धार्मिक कार्यमें वृद्धि।

ता० ६ अगस्त उ० फा० ३—स्वास्थ्यमें बाधा, कफ रोग वृद्धि, शान्ति भङ्ग।

ता० २४ अगस्त उ० फा० ४—चांदीके भावमें जबर पलटा, अधिक वर्षासे कहीं २ फसलको हानि।

ता० ९ सितम्बर हस्त १—सुख शान्तिमें बाधा, युवतियोंको कष्ट, अपहरणके अभियोग अधिक चलें।

ता० २४ सितम्बर हस्त २ में—धर्माधिकारी लोग अपने उत्तरदायित्वको न निभावें, मठाधीशोंमें मतिभ्रम।

ता० ११ अक्टूबर हस्त ३ में—गेहूँ मंदा हो, तपस्वी सन्यासी और योगियोंके लिए यह समय चिन्ताजनक रहे।

शुक्रका नक्षत्र और राशिभ्रमण

ता० २६ जुलाई मिथुनमें मित्रक्षेत्री—चौमासा की सजन जोर पकड़े। रुईके भावमें जबर पलटा। नजराना लगाकर व्यापार करना ठीक है।

ता० ४ अगस्त आर्द्रा—कहीं २ वर्षाकी अधिकता से नदियोंमें बाढ़ आवे। रुईका भाव आगे घटना चाहिए।

ता० १६ अगस्त पुनर्वसु—अमेरिका और भारत-की काटन कमेटियोंमें मन्दीका प्रस्ताव प्रकट हो। वर्षा अधिक।

ता० २४ अगस्त कर्कमें शत्रुक्षेत्री—उमड़ उमड़के बादल चढ़े, मूसलाधार वर्षासे जनता घबरा उठे। खासकर रुई व धान्यके भावमें तेजीका असर आवे।

ता० ७ सितम्बर अश्लेषा—चावल अनाज और अलसीके भावमें सस्ताई वापरे।

ता० १८ सितम्बर मघा सिंहमें शत्रुक्षेत्री—मरुस्थल मारवाड़ आदिमें वर्षाकी तङ्गी। सोना तांबा गेहूं अनाजके भावमें तेजीका उछाला आये।

ता० ३० सितम्बर पू० फा०—बङ्गालमें कहीं २ तूफान आए। अनाजकी खड़ी फसलमें साधारण हानि।

ता० ११ अक्टूबर उ० फा०—भारतके पश्चिमी देशोंमें कहीं-कहीं उत्पात, धान्यमें मंहगाई।

ता० १३ अक्टूबर कन्यामें समक्षेत्री—रुई और चांदीमें मन्दी, स्त्रियोंको पीड़ा।

शनिका नक्षत्र चरण राशिभ्रमण

ता० २२ जुलाई पुनर्वसु २—सूती वस्त्र और रेशम तेज। दम्पतियोंमें कलह, फसल अच्छी हो।

ता० १८ अगस्त पुनर्वसु ३—भारतके पूर्व भागमें कहीं २ उपद्रव, 'क' नाम आद्यक्षर देश वा नगर पर विपत्ति।

ता० २२ सितम्बर पुनर्वसु ४ कर्कमें शत्रुक्षेत्री—मध्य भारतमें अशान्ति, आसाम मणिपुर नागपुरमें भी अशान्ति व्यापे। अनाजमें मंहगाई। कपास कङ्गनी की खेतीमें हानि।

शनिकी वक्रातिचार स्थिति

ता० २५ जुलाई शीघ्रगतिसे पूर्वमें उदय—समेटी हुई बात किसी अंशसे बिखर जाये और काटन कन्तान कालीमिर्चके भावमें अच्छी मंहगाई आए। २०) बढ़े।

ता० १५ सितम्बर शीघ्रगामी—वर्तमान स्थिति सुधरती जाये। मन्दीकी आगाही जानिये, गली लगाकर व्यापार करें।

राहुकेतुका नक्षत्र चरण भ्रमण

ता० २२ अगस्तको आर्द्रा २ में राहु और मूला ४ में केतु—सोना चांदी जस्तादिके भावमें चढ़ाव रहे, अन्तमें मन्दी। क्षारवस्तु सैंधानमक समुद्रखारके सौदागर सचेत रहें, क्योंकि आगे भाव बढ़ेगा।

व्यापार-विमर्श (तेजी मन्दी)

[लेखक—श्री पं० बिहारीलाल जी शर्मा 'दैवज्ञ']

सौर श्रावण मासका ब्यौरा

[ता० १६ जुलाईसे १५ अगस्त तक]

इस मासके ग्रहयोगायोगोंको देखनेसे ज्ञात होता है कि अमेरिका देशमें कई नवीन घटनाएं घटेंगी। रुईमें बड़ी मन्दी चलना प्रतीत होता है, मान लो काटनमें ४०) ५०) टके घटे, तब अन्य वस्तुके रेटमें कितनी कीमत घटे—पेरिटी लगा लीजिये।

ता० २० जुलाई प्रातः ४ बजे से—

प्रत्येक वस्तुके भावमें अच्छी घटबढ़ चले, असर मन्दी। नजरानाके खड़े सौदेमें यहां मिलते भावसे प्राफिट पेमेण्ट कीजिए।

ता० २३ जुलाई दिनके १ बजेसे—

स्पष्ट बात सस्ताईकी सूचित है, तब व्यापार मंदी लगाकर करें। अथवा माथे बेचान करें। तुरत मुनाफा उठानेकी तरकीब खेलें।

ता० २७ जुलाई प्रातः ४ बजेसे—

राजविग्रह, उत्पात। भावमें काफी चढ़ाव उतार। फेरफारके मौकेपर नजरानेकी तरकीबका सौदा करना ही समझदारी है।

ता० ३० जुलाई दिनके १ बजेसे—

मारकेटमें ढीलाईकी सम्भावना है। सौदा सस्ताईके आइडियासे बाजारमें दाव धर दीजिये ताकि दाम मिलें।

ता० ३ अगस्त प्रातः ४ बजेसे—

अचानक तेजीका बवाल आ धमके। संकेत मंहगाईका मिला अतः रुई १०) हैसियन कालीमिर्च ५) ७) एरण्डा मूङ्गफली ४) ६) चांदी कपासिया २) ३) अलसी गेहूँ सोना १) १॥) टकेकी तादादमें बढ़े। तेजीके उछालेके पहिले ही माल तुरत खरीद करो और सौदाकी सम्भाल रखते झटसे नफा सुधारनेकी कोशिशमें रहे। यह चांस हाथसे निकल गया तो पछताते रह जाओगे।

ता० ६ अगस्त दिनके १ बजेसे—

योग मोटी सस्ताईका बना तब जान लीजिये कि रुईके भावमें १५) टकेके लगभग टूट जावें। हैसियन व चांदी वगैराके भावमें कितनी कसर पडे अन्दाज पत्र बना लें। ऐसे मौके सौदा सूत बादस्तूर मन्दीकी तरकीबोंसे हौसलेसे करें।

ता० १० अगस्त प्रातः ४ बजेसे—

प्रत्येक वस्तुके भावमें प्रायः सस्ताई वापरे। होश रखियेगा यहां हवाला मंदीसे मुकाबला करना हैं।

ता० १३ अगस्त दिनके १२ बजेसे—

व्यापार साधारण तेजीकी आशा रख मामूली दावसे खेलकूद करते रहिये।

सौर भाद्रपद मासका ब्योरा

[ता० १६ अगस्तसे १५ सितम्बर तक]

अमेरिका देशको छोड़ अन्य देशोंके लिए नभचरोंकी तारतम्यता बता रही है कि सवत्र शान्तिमय वातावरण दिखाई दे। अफ्रीका देशसे कोई विशेष समाचार मिले। प्रत्येक वस्तुके भावमें अच्छी घट बढ़ चलेगी। रुई ३०) ४०) एरण्डा मूङ्गफली १५) २०) कालीमिर्च हैसियन २०) ३०) चांदी बिनौला ८) १०) अलसी गेहूँ सोना ५) टकेकी तादादमें फेरफार होना पाया जाता है। सौदा सब तरहकी सावधानी रखकर करें।

ता० १६ अगस्त रातके १२ बजेसे—

अचानक उछाला आना जानिये खासकर रुईके भावमें। व्यापार मारकेटका टोन देखकर करिये।

ता० २० अगस्त दिनके १० बजेसे—

मंहगाई अटके, मन्दी आवे। काटनकी कीमतसे ५, ७, टके कमती होना मालूम देता है। मामूली सस्ताईकी आशासे साधारण सौदा कर लीजिये बेचानका।

ता० २३ अगस्त रातके १० बजेसे—

हैसियन कालीमिर्च रुई १०) चांदी बिनौला २) ३) एरण्डा मूंगफली ५) अलसी गेहूँ सोना १॥) के लगभग बढ़ना पाया जाता है। व्यापार वस्तु खरीद कर उछाले बेचानका काम करना समयका चांस है।

ता० २७ अगस्त प्रातः ४ बजेसे—

इस मौके खासकर रुईके भावमें मोटी घटा बढ़ी मालूम देगी। चिह्न अच्छी तेजीके पाये जाते हैं। मंहगाईके ख्यालसे माल खरीद करते बाइचांस सौदा बेचनेका प्रयास रक्खें।

ता० ३० अगस्त दिनके १ बजेसे—

चालू तेजीमें सस्ताई आना चाहती है। धन्दा-रोजगार मन्दीके टोनसे करें।

ता० ३ सितम्बर प्रातः ७ बजेसे—

ग्रहोंकी चाल मन्दीकी मिलती है पर व्यापार मारकेटका टोन देखकर करें।

ता० ६ सितम्बर सायंकाल ६ बजेसे—

सस्ताईके संयोगमें शतरंजी चाल अचानक तेजी के उछालेका इशारा देती है। सावधानीसे काम करें।

ता० १० सितम्बर प्रातः ७ बजेसे—

मारकेटकी चालमें साधारणतया अवश्य फेरफार होना पाया जाता है। सौदा समयकी स्थिति देखकर करें।

ता० १३ सितम्बर दिनके दो बजेसे—

रुई १०) १५) कालीमिर्च हैसियन ८) १०) एरण्डी मूङ्गफली ५) ७) चांदी कपासिया ३) ४) सोना अलसी गेहूं २) के लगभग बढ़ें अतः आनेवाली तेजी का तखमीना बांधते तुरन्त माल खरीदनेपर उतर जाइये।

सौर आश्विन मासका व्यौरा

[ता० १६ सितम्बरसे १७ अक्टूबर तक]

इस मासके ग्रहयोगोंसे यह समय सारे भारतके लिए सुख समृद्धिका है। चांदीके भाव दो पैर आगे चलेंगे, चांदीमें १०) से १५) टकेकी घटबढ़ हो तब रुई आदि अन्य वस्तुमें कितना फेरफार हो यह अनुमान लगा लीजिये।

ता० १६ सितम्बर रातके ११ बजेसे—

रुईमें मोटी मंहगाई मालूम देती है पीछे तेजी की यदि कमी रहेगी तो यहां पूरी होजायेगी।

ता० २० सितम्बर दिनके १० बजेसे—

अचानक घटबढ़की बौछार आवे। रुई हैसियन कालीमिर्चके भावमें यहां अच्छा फेरफार चले।

ता० २३ सितम्बर रातके ८ बजेसे—

पिछले भाव टिके रहें, कोई खास बात नहीं।

ता० २७ सितम्बर प्रातः ६ बजेसे—

रुईके भावमें घटाबढ़ी चले व्यापार सावधानीसे करें।

ता० ३० सितम्बर दिनके ६ बजेसे—

प्रत्येक वस्तुके भाव उछल-कूद मचावेंगे। मारकेट मंहगाईमें टिका हुआ मालूम देगा।

ता० ३ अक्तूबर रातके ११ बजेसे—

विशेष कोई बात मालूम नहीं देती।

ता० ७ अक्टूबर प्रातः ४ बजेसे—

संयोग साधारण फेरफारके हैं अन्तमें कुछ तेजी।

ता० १० अक्तूबर सायं ६ बजेसे—

फेरफारका मौका मालूम देता है अतः रुई आदि में ८) १०) टकेका चढ़ाव उतार कूत लीजिये।

ता० १४ अक्टूबर दुपहरसे—

रुई १५) के लगभग घटे इसी प्रकार अन्य वस्तुओंके भाव भी घटे।

ज्योतिष प्रेमियोंसे आवश्यक निवेदन

मेरे अनेकों मित्र, सहयोगी, 'श्रीस्वाध्याय' के ग्राहक और अन्य ज्योतिष-प्रेमी सज्जन मुझसे जन्मपत्र वर्षफल एवं भविष्य विचार बना देनेके लिये निरन्तर आग्रह करते रहते हैं। कई सज्जन तो बिना मेरी स्वीकृतिके अपने कार्यका पारिश्रमिक (फीस) भी पहले ही मनीआर्डर द्वारा भेज देनेकी कृपा करते हैं। किन्तु 'श्रीस्वाध्याय' का गुरुतर भार वहन करनेके अनन्तर मेरे पास एक क्षण भी ऐसा नहीं होता जिसे मैं किसी दूसरे कार्यके लिए लगा सकूं। अतः वाध्य होकर इन दिनों मुझे अपना ज्योतिषका निजी व्यवसाय स्थगित करना पड़ा है। यद्यपि ऐसा करनेसे मेरी व्यक्तिगत रूपमें पर्याप्त आर्थिक हानि हो रही है, तथापि मैं अपने निजी लाभके कारण 'श्रीस्वाध्याय' के द्वारा जनता-जनार्दनकी सेवासे विरत होना नहीं चाहता। इसलिए वे सब मेरे इष्टमित्र, सम्बन्धी, सहयोगी, कृपालु, हितैषी सज्जन और ज्योतिषप्रेमी महानुभाव मुझे क्षमा करेंगे—जिनका कार्य चिरकालसे मेरे पास रुका पड़ा है। मैं किसी योग्य सहकारीको ढूंढ रहा हूँ, मिलने पर शीघ्र ही ज्योतिष विभागका कार्य पुनः सुचारु रूपसे प्रारम्भ किया जायगा। अभी कोई सज्जन मेरे पास ज्योतिष सम्बन्धी कार्य वा उसके लिये मनीआर्डर भेजनेका कष्ट न करें।

निवेदक— हरदेव शर्मा त्रिवेदी, सम्पादक, 'श्रीस्वाध्याय'।

ग्रहोंका व्यापार व्यवसाय पर प्रभाव

व्यापारी वर्गके लिए शुभ सम्मति

[लेखक—श्री मनुभाई पी० शुक्ल पामिस्ट न्यूमेरिस्ट व कमर्शियल एडवाइजर]

[विद्वान् लेखकने पौर्वात्य एवं पाश्चात्य ज्योतिर्विज्ञान द्वारा व्यापारिक समर्घ-महर्घ (सट्टे के बाजार भाव) का अच्छा अनुभव प्राप्त किया है। गुजरात प्रान्तके आप सुप्रसिद्ध ज्योतिषी हैं। बङ्गलौरसे प्रकाशित होने वाले अंग्रेजी मासिक पत्र 'एस्ट्रॉलाजिकल मेग्ज़ीन'के पाठक भी आपके लेखोंसे पर्याप्त लाभ उठा चुके हैं। 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंको भी आपने अपने अमूल्य अनुभवोंसे लाभ पहुँचानेका निश्चय किया है, अतः इस अङ्कसे आपकी यह लेखमाला हम प्रकाशित कर रहे हैं। इस अङ्कमें भूमिकाके रूपमें केवल थोड़ासा उपक्रम मात्र है। पाठक आगामी अङ्कोंकी प्रतीक्षा करें, उनमें आपके जो मार्मिक विचार प्रकाशित होंगे उनसे 'श्रीस्वाध्याय'के पाठक अवश्य लाभान्वित होंगे। गुजरात प्रान्तीय और गुजराती भाषाविज्ञ होने पर भी आपने 'श्रीस्वाध्याय' के लिए हिन्दीमें लेख भेजनेका जो शुभ सङ्कल्प किया है इसके लिए हम आपका हृदयसे अभिनन्दन करते हैं। —सम्पादक]

भारतमें सट्टेके व्यापारका जोर बहुत बढ़ गया है और वर्तमान युद्धारम्भके अनन्तरसे तो इस सट्टेके व्यापारकी स्थिति सीमोल्लंघन करती जा रही है। इस कारण भारत सरकारको इसपर नियन्त्रण (कण्ट्रोल) करनेकी आवश्यकता प्रतीत हुई। बहुतसे लोग सट्टेको द्यूत या जुवेका रूप देते हैं, परन्तु मेरी दृष्टिमें सट्टे और जुवेमें बहुत अन्तर है। जुआरी लोग अपने थोड़ेसे पैसोंसे दूसरेकी विपुल धन-सम्पत्ति हरण कर लेते हैं। किन्तु सट्टा उस बीजका नाम है जो खेतीके समान फल देता है। जिस प्रकार मुट्ठीभर बीजको खेतमें बो देनेसे बैलगाड़ीभर अनाज उत्पन्न हो जाता है, उसी प्रकार मुट्ठीभर रुपयोंकी तेजी-मंदी लगानेसे झोली भरकर रुपये मिल सकते हैं।

कई एक साधारण व्यापारी किसी एक सुप्रसिद्ध सम्पत्तिशाली बड़े सटोरिये या बाजारके अधिपतिका रुख देखकर उसके अनुसार कार्य करते हैं। कई व्यापारी पिछले भावोंके घट-बढ़ आंकड़ोंपरसे बाजारकी चाल पकड़ते हैं, तो तीसरा वर्ग ऐसा भी है जो बाजारका रंगढंग देखकर काम करता है। चौथा वर्ग ऐसा है जो ज्योतिषशास्त्रपर श्रद्धा रखकर बाजी खेलता है। जिन श्रद्धालुओंको भाग्यवशात् किसी अनुभवी शास्त्रमर्मज्ञ ज्योतिषीकी सलाह मिल जाती है वे लाभान्वित भी हो जाते हैं और शास्त्रपर उनकी अटूट श्रद्धा हो जाती है। भारतमें आजकल तेजीमंदी बतानेवाले ज्योतिषियोंकी बरसाती मेंढकोंकी भांति वृद्धि हो रही है। जिधर देखो उधरसे ही प्रत्येक पत्र पत्रिकाओंमें तेजीमंदी और चांस बताने वाले ज्योतिषियोंके विज्ञापन मिलेंगे। इनमें से कई विज्ञापक तो ऐसे होते हैं जो स्वयं ज्योतिषका एक अक्षर भी नहीं जानते, कुछ इधर उधरसे लेकर दक्षिणके दश व्यापारियोंको तेजी तो उत्तरके दशको मंदी लिख देते हैं। इस प्रकार दुरंगी नीतिसे किसी-न-किसी ओरसे उनकी मुट्ठी गरम हो ही जाती है। साल छः महीने एक जगह काम करके बाद में किसी दूसरे शहरसे दूसरे नामसे विज्ञापन प्रारम्भ कर देते हैं और इस प्रकार समाचारपत्रोंकी विज्ञापन-नीतिसे इनका उल्लू सीधा होता रहता है।

विज्ञापनके शब्दोंसे सर्वसाधारण व्यापारी यह निश्चय नहीं कर सकते कि कौनसा ज्योतिषी अनुभवी एवं शास्त्रनिष्णात है और कौनसा अनाड़ी। इसी कारण अपरिचित एवं अपरीक्षित तेजीमंदी चांस

बतानेवाले विज्ञापनबाज ज्योतिषियों द्वारा बहुतसे श्रद्धालु व्यापारी लाभके स्थानमें अपरिमित हानि उठाते हैं। अतः श्रद्धालु व्यापारियोंका कर्तव्य है कि वे किसी शास्त्रमर्मज्ञ देशविख्यात अनुभवी ज्योतिषी से (जो उनके समीपका परिचित और हितैषी हो) राय लिया करें और उन्हींसे पहले अपने जन्मपत्र वर्षफल या प्रश्नके द्वारा लाभालाभका विचार करवा कर पुनः व्यापारमें पड़ें तो उन्हें अवश्य लाभ होगा।

आजकल पाश्चात्य (अंग्रेजी) ज्योतिषके उपासकों की भी तूती खूब बोलने लगी है। दो चार पुस्तकें एलनलीओ, सेफारिअल और रैफलकी पढ़कर ज्योतिषी बन बैठने वाले अंग्रेजी भाषाविद् भी बहुत हैं। इसी प्रकार मेंकविथर-स्टॉकमार्केट - फॉरकास्टिंगथ्योरी, जेम्समार्सलैंगहामकी स्टॉकमार्केट एण्ड प्लेनेटरी इफेक्टस आदि पुस्तकें देखकर अपनेको कमर्शियल टैस्टर कहलाने वाले कई ज्योतिषियोंने अपने ग्राहकोंको अवनतिके गहरे गड्ढेमें उतार दिये हैं। इसका कारण यह है कि इस प्रकार विज्ञापन करने वाले अल्पज्ञ नक्षत्रसूची ज्योतिषियोंको ग्रहबल और पृथ्वीके साथ ग्रहोंके यथार्थ सम्बन्धका ज्ञान बिल्कुल नहीं होता है।

एक ज्योतिषीने लिखा है कि 'गुरुग्रह जब वक्री होता है तब रुईमें पर्याप्त तेजी आती है, परन्तु सभी राशियोंमें गुरु वक्रीका फल एक समान नहीं होता, यह ध्यानमें रखना परमावश्यक है। प्रत्येक राशिका फल भिन्न २ है। हमारा ज्योतिषशास्त्र कहता है कि जब खगोलवृत्तमें भ्रमण करते हुए शुभग्रह पृथ्वीके समीप आते हैं तब सर्वदा शुभ फल प्रकट करते हैं और पाप ग्रह पृथ्वीसे जितने दूर जाते हैं उतना ही अधिक शुभ फल देते हैं। कर्कवृत्त और मकरवृत्त नाम के १२ राशियोंके दो ऐसे विभाग हैं जिनमें ग्रहोंके आनेसे पृथ्वीके समीप और दूरस्थ ग्रहोंका ज्ञान होता हैं। उत्तर क्रान्तिवृत्तमें जब सूर्य मेषराशिमें प्रवेश करते हैं तबसे कर्क संक्रमण पर्यन्त पृथ्वीके उत्तर गोलार्द्धमें गरमी निरन्तर बढ़ती रहती है। इसका कारण यही है कि उक्त समयमें पृथ्वी सूर्यदेवके समीप जानेकी गतिमें रहती है और सूर्यभगवान्की उष्ण किरणें भूपृष्ठपर समानान्तरसे सीधी पड़ती हैं।

कर्कवृत्तसे मकरवृत्त तक जब सूर्यनारायण विचरते हैं, तब पृथ्वी सूर्यसे दूर जाती है अतः क्रमशः शीत बढ़ने लगता है। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रहके सम्बन्धको जानकर पृथ्वीसे ग्रहका सुदूर एवं समीपस्थ अन्तर जानकर जो अनुभवी ज्योतिषी अपनी बुद्धि-विस्तार करके गणित द्वारा तेजी मंदी निकालता है उसका परिणाम ६५ प्रतिशत ठीक निकलता है।

हमारे शास्त्रोंमें लिखा है कि "जब मिथुन राशिमें शनि आता है तब धातुओंका भाव बहुत घट जाता है" किन्तु इस समय मिथुनके राहुने कई एक बड़े २ व्यापारियों और नक्षत्रसूची ज्योतिषियोंको पर्याप्त शिक्षा दी है। पहले तो यह जानना आवश्यक है कि मिथुन राशिके राहुमें किस कारणसे धातु मंदी होती है? मिथुन राहुकी उच्च राशि है। जब कभी पाप ग्रह उच्च राशिमें आता है तब शुभ कारक होता है। इसी कारण तुला राशिमें उच्चका शनि रुई, कपड़ा और शेयर्सको मन्दा करता है।

भारतीय पंचांगोंके गणितमें भी बहुत मतभेद रहता है। कई पंचांगकर्ता ग्रहलाघव और सूर्यसिद्धांत से पंचांग बनाते हैं। एक वर्ग ऐसा है जो १६ अयनांश सायन ग्रहोंमें घटाकर बनाता हैं। तीसरा वर्ग ऐसा मानता है कि पृथ्वीकी धुरी २३ अंश झुकी हुई है इस लिए सायन ग्रहोंमेंसे २३ अयनांश हीन करके पंचांग बनाते हैं।

अमेरिकन लेखक मेकविथरने अपनी पुस्तकमें राहुका सिद्धान्त लगाकर सायनगणितके आधारसे यूनाइटेड स्टेटस्के लिए 'स्टॉकमार्केट फारकास्टिंग' लिखी हुई है। इस लेखकने सारी पुस्तकमें यूनाइटेड स्टेट्सके गतवर्षोंके उदाहरण दिये हैं। उसमें भी कहीं कहीं जब उसकी थ्योरी लागू नहीं हुई वहाँ स्पष्ट लिखा है कि —"बाजारकी चाल उल्टी किस कारण से रही यह समझमें नहीं आया"। इस लेखककी मान्यता है कि सायन मिथुन यूनाइटेडस्टेट्सकी लग्न

राशि है और इसी मान्यता पर इस लेखकने सारी पुस्तक लिखी है। किन्तु हमारे यहाँ बात बिल्कुल दूसरी है। अमेरिका पश्चिम गोलार्धमें है और हम (भारत) पूर्वगोलार्धमें; भारतकी मकर राशि है। अतः मिथुनका प्रभाव यहाँ अधिक नहीं होगा। हमारे यहां सूर्य, बुध, शुक्र, इन तीन ग्रहोंसे व्यापार बाजार का विशेष निर्णय होता है। बुध, शुक्र, पृथ्वीके बहुत समीप हैं, अतः इनका प्रभाव भूमण्डल पर शीघ्र होता है। गुरु, शनि, मंगलकी जब २ अच्छी किरणें इन ग्रहोंको मिलती हैं तब बाजारोंमें उन्नति दिखाई देती है। इन ग्रहों पर जब भौमादि बड़े ग्रहोंकी बुरी किरणें पड़ती हैं तब बाजारोंमें हलचल और भूमण्डल पर नानाविध आतङ्क उत्पन्न होते हैं।

इस लेख मालाको प्रारम्भ करनेका मेरा यही उद्देश्य है कि सर्वसाधारण जनता और व्यापारियोंको यह निश्चय हो जावे कि भूमण्डल और वर्तमान व्यापार व्यवसाय पर ग्रहोंका प्रभाव अवश्य पड़ता है, परन्तु उसको यथार्थरूपमें समझना साधारण कार्य नहीं। अतः व्यापारी लोग किसी अनुभवी अधिकारी विद्वान् ज्योतिषीसे ही सम्मति लिया करें। अनधिकारी अनजान प्रत्येक विज्ञापनी तेजी मंदी और चांस बताने वाले नक्षत्रसूचियोंसे सम्मति लेने पर यदि उन्हें लाभके बदले हानि हो जावे तो इसमें ज्योतिर्विज्ञानका कोई दोष नहीं है। विशेष आगामी अङ्कोंमें लिखेंगे।

त्रैमासिक व्यापार भविष्य-प्रकाश

[ले०—श्री पं० गङ्गाप्रसादजी ज्यौतिषाचार्य]

आषाढ़ सुदी—

तथि वार व्यापारिक फल प्रदर्शक तेजी-मंदी।

११ शु० चांदी और सोना १२ बजे खरीदो शाम नफा लो।

१२ श० पहिले बेचो पीछे खरीदो लाभ होगा।

१३ इ० शु० ह० युतिः चांदी, सोना रूईकी मन्दी दिखला रही है।

१४ सो० गुवार, बारदाना, सोना मंदीमें चांदी तेज होकर मंदी।

१५ मं० समय पर चांदी, सोना, रुई बेचना ही चांस है।

श्रावण वदी—

१ बु० जूट और हर किस्मके शेयर ऊंचे जायेंगे।

२ गु० चांदी सोना रुई खरीदो ४ दिनमें लाभ।

३ शु० गुवार कालीमिर्च बारदाना तेजीमें प्रविष्ट

४ श० मुनाफा लेकर चांदी और रूई खरीदो।

५ इ० प्रायवेटमें साधारण घटबढ़।

६ सो० मिथुन पर शुक्र मंदी करके तेजी दिखलाता है।

७ मं० चांदी सोना ऊंचे भावमें बेचो।

८ बु० मंदीका टोन ४ बजे तक, बाद तेजी।

९ गु० रुईके खरीदने वाले अच्छा लाभ उठायेंगे।

१० शु० चांदी खरीदो—सोना बेचो लाभ होगा।

११ श० गुवार बारदाना मंदीमें, कपड़ा गल्ला तेज।

१२ इ० चांदी सोना रुईकी नरमाई, खरीदना

१३ सो० चं०श०युतिः ढाई दिनमें भारी उथल पुथल

१४ मं० सोमवारके खरीदने वाले मंगलको लाभ उठा लेंगे।

३० बु० वक्री बुध तेजीको भड़कायेगा व्यापारी सावधान।

श्रावण सुदी—

तिथि वार व्यापारिक फल प्रदर्शक तेजीमन्दी।

१ बु० अमावसका क्षय तेजी दिखलाता है।
२ गु० चन्द्रदर्शन मंदी लायेगा, चांदी खरीदो सोना बेचो।
२ शु० बाजार खुलते बेचो ३ दिनमें लाभ।
३ श० अलसी सरसों अरहर खरीदनेके चांस हैं।
४ इ० चं० गु० युतिः मन्दी लाती है।
५ सो० सोनेकी मंदी चांदीकी तेजी रुईके साथ।
६ मं० मुनाफा मिल रहा हो तो स्टाक कम करो।
७ बु० साधारण घटबढ़।
८ गु० बाजार मंदा देखो तो चांदी सोना रूई खरीदो।
९ शु० कलकी खरीद आज नफा देखो तो छोड़ो नहीं।
१० श० प्रायवेटमें मंदी फिर तेजी।
११ इ० घटबढ़ साधारण।
१२ सो० चांदी, सोना, रुई — शेयर खरीदनेके चांस हैं।
१३ मं० चांदी सोना रूईकी तेजी पर्याप्त हो रही है डबल बेचो।
१४ बु० बेचो बाजार खुलते, श्याम तक नफा लो।
१५ गु० मंदीका बोलबाला।

भाद्रपद बदी—

१ शु० तेजीका रंग देखो तो चांदी बेचो।
२ श० मंदी धातुओं की–पर्याप्त हो रही है।
३ इ० इकतरफा लाइन चलने वाली है।
५ सो० चांदी सोना गुवार रुई खरीदो।
६ मं० तेजीके टोनमें नफा लेकर माल बेचो।
७ बु० मिथुन पर मंगल मंदी से तेजी करता है।
८ गु० चांदी सोना रुई खरीदने के चांस हैं।
९ शु० मुनाफा मिले तो डबलबेचो।
१० श० मंदी का रंग देखो तो वापिस पोते करलो।
११ इ० प्रायवेटकी मंदी खरीदना बताती है।
१२ सो० चांदी सोना खरीदो २॥ दिनमें लाभ।
१३ मं० तेजीका रंग अच्छा लाभ देगा।
१४ बु० बाजार खुलते ही बेचो शाम को नफा लो।
३० गु० मंदीके रंगमें माल पोते करो।

भाद्रपद सुदी—

१ शु० कलकी खरीद का नफा लेकर डबल बेचो।
२ श० चांदी सोना रुई कावेचाण करना ही चांस है।
३ इ० अलसी बारदाना गुवार मंदीमें जावेंगे।
४ सो० चांदी सोना रुईकी तेजी पर्य्याप्त है।
५ मं० डबल बेचाण करो स्टाक नुकसान देगा।
६ गु० मन्दीका रंग देखो तो चांदी सोना खरीदो।
६ बु० गहने कपड़े के ग्रह भारी तेजीमें हैं।
७ शु० जूट और शेयरोंके भावोंमें भारी तेजी।
८ श० कालीमिर्च तारामीरा पर मुनाफे का विचार
९ इ० घटबढ़ साधरणतः
१० सो० चांदी सोना रुई जुवार खरीदनेके चांस हैं।
११ मं० तेजी टिकाऊ नहीं हैं डबल बेचो।
१२ बु० जोरदार मन्दी दिखा रही है।
१३ गु० बेचने वाले फायदेमें स्टाक वाले नुकसान में।
१५ शु० बाजार में भारी उथल पुथल रहेगी।

आश्विन बदी—

१ श० कर्कका शनि तेजी दिखलाता है।
२ इ० प्रायवेट बाजारोंमें क्रांति पैदा होगी।
३ सो० घटे हुए बाजार फिरसे चमकेंगे।
४ मं० चांदी सोना रुई, बाजार खुलते खरीदो।
५ बु० सर्व वस्तु तेजीकी ओर।
६ गु० मंदीका रंग जूट बारदाना देखेंगे।
७ श० चांदी सोना पर नफा लो और बेचो।
८ श० चांदी रुई पर तेजी दिखलाती है।
९ इ० बारदाना और शेयरोंमें भारी मंदी।
१० सो० चांदी सोना रुई खरीदो ४ दिन में लाभ।
११ मं० तेजीके टोनमें नफा लो।
१२ बु० मंदीके रियेक्शनमें खरीदना मत भूलो।
१३ गु० खरीदो १२ बजे, ६ बजे नफा लो।
१४ शु० टोन तेजी ३ बजे पर डबल बेचो।
३० श० मंदी की चाल शिर होने वाली है।

आश्विन सुदी—

१ इ० प्रायवेटमें तेजी का रंग।

उपयोगी वस्तुएँ बनानेकी विधि

[लेखक—श्री झावरमल्लजी दारुका]



शर्बत—जिस फल या दवाका शर्बत बनाना हो और यदि वह वस्तु गीली हो जिसके कूटनेसे रस निकल आवे तो उसको कूट कर निकाल लें। फिर उस रसको कपड़ेसे छान कर उसमें मिश्री या चीनी-की ढ़ीली चाशनी करके बोतल या चिकने बर्तनमें रख दें। यही शर्बत हुआ। यदि सुगन्धित करना हो तो इत्र गुलाब केवड़ाकी दो बूंद डाल दें। यदि दवा कड़वी या सूखी हो तो उसको कूट कर चौगुना पानीमें बारह घण्टे भिगो कर काढ़ा बना लें जब चौथाई पानी रह जाय तब छान कर उस पानीमें उपरोक्त विधिसे चाश्नी मिला दें। शर्बतकी चाश्नी प्रायः एक बारीक तारके अनुमान रहती है। सत्त बनाना—जिस औषधिका सत बताना हो, खूब कूट कर पानीमें भिगो देना चाहिये। एक दिन रात भीगी रहनेके बाद उस दवाको खूब मिला कर दूसरे बर्तनमें कपड़ेसे छान लेना चाहिये। कुछ घंटोंके पीछे पानीके नीचे वह जम जायगी तब पानोको होशियारीसे निकाल देना चाहिये और नीचे जमी हुई उस तहको सुखा लेना चाहिये। यही सत कहलाता है।

पीपरमेंट बनाना—हरे पुदीनेका रस पावभर, सोरा सफेद पावभर, नौसादर आधा तोला, कपूर आधा तोला, इनको महीन पीस कर पुदीनेके रसमें डाल कर सबको एक चीनी मिट्टीके बर्तनमें रख लो। फिर उसी तरहके बर्तनसे ढ़क कर दोनोंका मुँह मुलतानी मिट्टीसे बन्द कर दें। ऊपरके बर्तनमें जो चीज चिपकी रहेगी वही पीपरमेंट है। इस यन्त्रके ढ़कनेके ऊपर नीला कपड़ा डाले रहें।

दालका मसाला—सोंठ, कालीमिर्च, कालानमक, सेंधानमक, हींग भुनी हुई, नींबूका-सत, लौंग, जावंत्री, तेजपात, सब समभाग बराबर लेकर कूट पीस कर शीशीमें रख लें। यह दालका मसाला है। दालमें दे कर खानेसे दाल स्वादिष्ट हो जाती है।

ब्ल्यू ब्लैक स्याही बनाना—बड़ी हर्रे १ तोला, बहेड़े १ तोला, आंवला १ तोला, कशीश १५ माशा, अंग्रेजी नील २ तोला, नीलाथोथा ६ माशा, इन सबको महीन पीस कर रखें। जब इच्छा हो गर्म पानीमें डालकर स्याही बनालें।

खटमल दूर करनेकी विधि — कपूरकी पोटली बिस्तरमें रखनेसे खटमल भाग जाते हैं।

पागल कुत्ते काटनेकी दवा—पागल कुत्तेके काटे हुए स्थान पर कुचला घिसकर लगावें और शुद्ध किया हुआ कुचला खिलावें। अति उत्तम दवा है।

चोटकी दवा—हाड़ भांगा, इमलीका पत्ता, सोरा, इन तीनोंको पानीमें पीसकर गर्म करके चोट लगे हुए स्थान पर लगानेसे सूजन तथा भीतरी चोटका दर्द ठीक होता है।

गर्भ रहनेकी दवा—केशरकी बुकनी ४ रत्ती गौके घृतमें मिलाकर रजस्वला होनेके समय तीन दिन तक खावें।

आँखकी दवा—आग पर पकाया हुआ लीलाथोथा १ तोला, मिश्रीका गुला १ तोला, चीनी सफेद ४

---

२ सो० चांदी सोना गुवार रुई खरीदो।
३ मं० तेजीके टोनमें नफा लो।
४ बु० तुला पर बुध मंदी दिखायेगा।
५ गु० आखिरी मंदीमें चांदी रुई खरीदो।
६ शु० तेजीके रंगमें नफा लो और डबल बेचो।
७ श० कन्याका शुक्र ३ बजे तक तेजी बाद मंदी।
८ इ० चांदी सोना रुई डबल बेचाण ही चांस है।
९ सो० प्रायवेट में साधारण घट बढ़।
१० मं० मंदी के टोन में खरीदना मत भूलो।

तोला, सबको मिला कर गौके दूधमें सात दिन तक खरल करे, पीछे बेरके बराबर गोली बांध लें, इस गोलीको गौके कच्चे दूधमें घिसकर आँखमें आँजें।३ इससे आँखोंका जाला फूला आदि समस्त रोग दूर होते हैं।

दस्त बन्द करनेकी दवा—बिलकी गिरी ६ माशा, आमकी गुठलीकी गिरी ६ माशा, सुपारीका फूल ३ माशा, अफीम ३ माशा, इन सबको महीन पीसकर धूपमें चनेके बराबर गोली बांध लें। इन गोलियोंसे टट्टी (अतिसार) बन्द होती है।

पाचक चूर्ण—अनारदाना २ तोला, नौसादर ६ माशा, सफेद तथा स्याहजीरा दो-दो तोला, पोदीना १ तोला, कालीमिर्च १ तोला, सबको मिला कर चूर्ण बनालें। यह पाचक चूर्ण है।

जुलाब—सनायकी पत्ती २ तोला, गुलाबका फूल २ तोला, काला दाना २ तोला, अमलताशका गुदा २ तोला, मुनक्का २ तोला, काला नमक १ तोला, इन सबको कूट कर ४ पुड़िया बना लें। एक पुड़ीको पानीमें औटा कर छान कर रातको पीनेसे पाखाना साफ होगा। इसमें खानेको चावल, दालकी खिचड़ी खानी चाहिये।

दादकी दवा—गन्धक, हड़ताल, पारा, सुहागा यह एक-एक तोला, नीलाथोथा, फिटकरी सफेद दोनों दो-दो माशे लें। पहले गन्धक और पाराको खूब खरल कर लें। फिर दूसरी चीजें मिला कर बकरीके दूधमें खरल करें और गोली बना लें। इस गोलीको पानीमें घिसकर जहाँ दाद हो खुजला कर लगा दें। दो चार बार लगानेसे ठीक हो जायगा।

फोड़े फुन्सीका मलहम — राल, आंवलासार गन्धक, फिटकरी ३-३ तोला, रस कपूर ३ माशा, इन औषधियोंको खूब बारीक पीस लें। फिर एक सौ आठ बारके धोये हुए घृतमें मिला कर मलहम बना लें। यह मलहम सब प्रकारके फोड़े फुन्सीको शीघ्र ठीक करता है।

खांसीकी चटनी—त्रिफला १ तोला, पीपल छोटी १ तोला, इन दोनोंको खूब पीसकर कपड़ेमें छान लें। फिर दो तोले शहदमें मिला कर चटनी बना लें। ज्वरकी खांसीके लिए यह चटनी बहुत लाभदायक है। थोड़ी-थोड़ी करके दिनमें दो तीन बार चाटनी चाहिये।

विष दूर करना—यदि किसीको किसी प्रकारके विष भक्षणकी शंका हो तो गौ या भैंसके विशुद्ध घृतमें तीन या चार छटांक कालीमिरच मिला कर चाटे, विषका असर मिट जायगा। इससे अनेकों मरते हुए प्राणियोंके प्राण बच गये हैं। परन्तु इसमें शीघ्रता करनी चाहिये।

मुखकी झांई दूर करनेकी दवा—अण्डीके तेलमें चनेका आटा मिला कर चेहरे पर मलनेसे छांई आदि दूर होकर मुखकी सुन्दरता बढ़ती है।

उद्‌बोधन

[श्री पं० चम्पालालजी कविशेखर 'मंजुल']

कर जागृत म्यानके मन्दिरसे दृढ़ जीवन-ज्योति जिलाते रहैं,
चिरकालकी प्यास बुझाने अहो रिपु—रक्तके प्याले पिलाते रहैं। ★
★ कवि मंजुल सीखें न भीरुता किञ्चित् कालको भी शरमाते रहैं,
असि—प्रेयसिको रण प्राङ्गणमें रण—रङ्गसे होली खिलाते रहैं॥

दीर्घायु की कुञ्जी



वर्तमान कालमें दीर्घजीवनसे सम्बन्ध रखनेवाले अनेक मन्तव्य व्यक्त किये जा चुके हैं। दीर्घजीवन प्राप्तिके लिए सर्वप्रथम शरीरका आरोग्य रहना परमावश्यक है और आरोग्य-प्राप्तिके लिए प्राकृतिक रहन-सहन अतीव लाभदायक है। शरीर, मन और बुद्धिके आरोग्य संरक्षण तथा बिगड़े हुए स्वास्थ्यको पुनः सुधारनेके लिये प्रकृतिके अतिरिक्त अन्य कोई सुलभ और अव्यर्थ औषधि नहीं; अतएव प्रकृतिका संरक्षण प्राप्त करना ही विधेय है। शरीर-संचालनमें मुख्य दो शक्तियां काम करती देखी जाती हैं। एक विनाशक और एक रचनात्मक। चिरायु भोगके इच्छुक सदैव रचनात्मक शक्तिका ही सुदुपयोग करते हैं।

शरीरके आरोग्य-साधनोंमें वायु, जल और भोजन मुख्य रूपसे सहायक हैं। इनमें भी वायु और जलका महत्त्व विशेष है; फिर भी शरीर-रक्षाके लिए भोजन भी उतना ही आवश्यक है। अतीव हलके ढङ्गसे और विचारपूर्वक क्षुधाशान्ति करनेसे कभी स्वास्थ्य बिगड़नेका भय नहीं रहता। दीर्घायुके लिये शुद्ध और नियमित मिताहार ही मुख्य औषधि है। अधिक भूख लगनेपर ही रुचिके अनुसार भोजन करना चाहिये। न अधिक; न कम। जल पीनेके सम्बन्धमें भी इसी नियमका पालन करना अधिक अनुकूल होगा। इतना होनेपर भी खाने-पीनेमें जरा त्रुटि और अतृप्ति रह गई हो, तो उसे पूर्ण करना ही परमावश्यक है। क्योंकि सन्तोष ही सुख है और सुख ही जीवन है।

एक लेखकका कहना है कि पूरी, लड्डू, हलवा, पतली तथा गाढ़ी दाल, मूंग तथा अरहरकी दाल, भात, मटरकी फलियां, उड़दकी दाल, तरोई, करेला, भिण्डी, आलू, मूली, टमाटर, प्याज और गाजरमें मुख्य विटामीन आ जाते हैं। यदि उपर्युक्त नामावली किसीको अपूर्ण प्रतीत हो, तो नारंगी, मीठे नीम्बू, केला, पपीता और द्राक्षासव द्वारा उसे पूरा किया जा सकता है। आफिसमें भूखका अनुभव होनेपर चाय, चिवड़ा आदिके स्थानपर भुने हुए चनोंका उपयोग अधिक लाभदायक होगा।

दूसरे मन्तव्यके अनुसार दूधके बदले चाय पीना, भारी और गरिष्ठ मिष्टान्नका उपयोग, तीक्ष्ण रायता, चटनी और सागका खाना बीमारीको आमन्त्रण देकर बुलाना है। युरोप और अमेरिकाकी नकल करनेवाले यहांके सुधारवादी लोग जीवनयात्रामें बात-बातमें औषधियोंके भक्त बन रहे हैं। साधारण जुकाम होनेपर भी वह डाक्टरों और वैद्योंका दरवाजा खटखटाने लगते हैं। उन्हें भले अनुभव न हो; किन्तु यह आदत उनके स्वास्थ्यके लिए अतीव घातक है। औषधियोंका उपयोग अधिकतर उन्हीं लोगोंमें पाया जाता है, जो प्राकृतिक जीवनसे कोसों दूर हैं।

अब रही अङ्ग-कसरत या व्यायामकी बात। इस सम्बन्धमें कुछ लोगोंका कहना है, कि व्यवस्थित व्यायाम करना अज्ञानताका द्योतक है। उनके मतमें व्यवस्थित व्यायाम करना जीवनको एकाङ्गी बनाना है। दण्ड, बैठक, कुश्ती आदिको तो आजकलके सुधारवादी फैशनेबल नवयुवक असंस्कारिताका प्रतिबिम्ब कहते हैं। वह शुद्धवायुमें टहलना या किसी मैदानमें मील आधमील दौड़ लगा लेनेमें ही अपने कर्त्तव्यकी इतिश्री समझ लेते हैं। इसके अतिरिक्त मन प्रसन्न रखनेके लिए शेलीकी फिलासफीका अध्ययन या सिनेमा देखना भी अधिक पसन्द करते हैं। दण्ड, बैठक, कुश्ती और तैरना आदि ऐसी कसरतें हैं, जिनके द्वारा शरीरके सभी अङ्गोंको सम्यक् गतिशीलता प्राप्त होती है और वह संगठित तथा सुदृढ़ होते हैं। जो लोग नियमित व्यायामके अभ्यासी हैं; वह तो इसके परिणामोंका प्रत्यक्ष

अनुभव कर रहे हैं; किन्तु जो लोग व्यायाम करना पसन्द नहीं करते, उन्हें अवश्य ही एकबार इस क्रिया का नियमित उपयोग कर इसके लाभोंका अनुभव करना चाहिये।

सापुल्वा–ओवला–हामाकी 'आण्टलीजीडिवर्स' नाम्नी एक किसानकी स्त्री आज ११३ वर्षकी हो जानेपर भी तीस वर्षकी युवतीके समान चपल और तेजस्विनी है, वह बारह पुत्रोंकी माता है। वह वृद्धा शारीरिक और मानसिक दोनों ही रीतियों से स्वस्थ है।

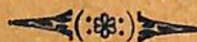
वैज्ञानिकोंने उसकी दिनचर्या-सम्बन्धी सर्वदेशीय जांच की है और उनका कथन है, कि लीजीको इतनी लम्बी आयु पानेका श्रेय उसके शरीरकी रचनात्मक शक्तिको है। यह सर्वविदित है, कि शरीरको नित्य-प्रति धक्के लगते ही रहते हैं। बीमारी इन धक्कों का ही परिणाम है। यदि शरीरका कोई भी अङ्ग निकम्मा हो जाये, तो मनुष्यको मृत्युसे भी अधिक दुःखदायी प्रतीत होता है।

यहाँ यह कह देना भी असङ्गत न होगा, कि दीर्घायुके लिए धार्मिकता भी अतीव सहायक है। अपने धर्मशास्त्रोंकी आज्ञाओंपर विश्वास रखकर तदनुसार जीवन-पथपर आरूढ़ होनेसे मनुष्य निस्सन्देह दीर्घजीवी, निरामय और आधि-व्याधियोंसे परे रह सकता है। रोगियोंकी सेवा, विपन्नोंकी सहायता और पथभ्रष्टोंको सुपथ-दर्शन करानेसे जो आनन्द और शान्ति प्राप्त होती है; उससे हमारा मन बलशाली, स्थिर और विश्वासु बनता है। अतः दीर्घायु-कामियोंको चाहिए, कि वह मानसिक स्वेच्छाचारको दबाकर धर्मशास्त्रानुकूल अपने जीवनकी गतिविधि स्थिर करें; निस्सन्देह उन्हें उनकी धार्मिकता ही उस अमृतत्वकी ओर ले जायेगी; जिसे प्राप्त कर हमारे पूर्वज शक्तिशाली, कार्यक्षम, सुदृढ़ और दीर्घायु-भोक्ता होते थे।

वैज्ञानिकोंका मत है, कि सरकार ५५ वर्षकी आयुमें नौकरोंको इसलिए अपने पदसे हटा देती है, कि वह उस पदके अयोग्य होजाते हैं। किन्तु यह धारणा भ्रान्त है। आज भी ६० वर्षसे भी अधिक आयुवाले अनेक अङ्गरेज राजकर्मचारी साम्राज्यके उत्तरदायित्वका सम्पादन बड़ी ही सफलताके साथ कर रहे हैं। मध्ययुगके युरोपियन लोगोंने भी युवावस्था स्थिर रखनेके लिए सैकड़ों प्रयोग आजमाये थे। वर्त्तमान कालके वैज्ञानिक भी तत्सम्बन्धी अनुसन्धानमें दत्तचित्त हैं; किन्तु उन्हें इसमें वास्तविक सफलता प्राप्त नहीं हो सकी। जो हो; उपर्युक्त सभी मतोंका तात्पर्य यह है, कि नैसर्गिक जीवन, शुद्ध जल-वायु, सादा धार्मिक जीवन, मिताहार, आवश्यक व्यायाम, निद्रा और आराम तथा सन्तोषीमन मनुष्य को दीर्घायु प्रदान करनेमें महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

उद्बोधन

[श्री पं० चम्पालालजी कविशेखर 'मंजुल']



जग वर्द्धित कीर्तिकी कौमुदीमें निज शौर्यकी सृष्टि बढ़ाते रहैं,
सब शान्तिके इच्छुक कायरोंको अभियानका पाठ पढ़ाते रहैं। ★
★ कवि मंजुल युद्धके नामसे ही मनमें अति–मोद–मढ़ाते रहैं,
असि देवि! तुम्हैं रिपु—मुण्डनकी नित नूतन भेंट चढ़ाते रहैं॥

त्रैमासिक व्यापार-भविष्य



जुलाई

जुलाईमें बुरे और अच्छे योग प्रायः समान हैं। बुरे योग—अतिवृष्टि, अग्निकाण्ड, विस्फोट, प्रचण्ड वायु, और व्यापारियोंके लिए हानिप्रद। अच्छे योग सुभिक्षसूचक, व्यापारिक समझौता, सर्वत्र वृष्टि, परस्परमैत्रीकी भावना और राष्ट्रों द्वारा नवनिर्माण योजनायें।

इस महीनेमें मन्दीका काफी जोर रहेगा। रुईमें मन्दी वाले कमायेंगे। बीच २ में आने वाली तेजियां नहीं टिक सकेंगी। गत माससे सचेत रहने वाले व्यापारी यहां कमायेंगे नहीं तो उनको हानि होगी। १३ दिनोंका पक्ष ता० २६ से शुरू होगा इस पक्षका फल अनिष्टप्रद है।

साप्ताहिक तेजी मन्दी जुलाई

चौथा सप्ताह (२३ से २६)

पिछले हफ्तेमें बेचा हो तो यहां नीचेमें ज्यादा खरीदकर फिर थोड़े नफेसे बेच देना।

चान्दी, सोना और रुईमें तेजी आएगी। चना ग्वार और शेयर मन्दे। कपड़ा, लाख और चमड़ा तेज रहेगा। ता० २४ सोना मन्दा।

अगस्त

अगस्तका आरम्भ १३ दिनोंके पक्षमें होता है, इसका फल भयावह, रोगोपद्रव युद्धकी तीव्रता, बाढ़, नवीन अशान्ति, अपराधोंकी वृद्धि और हड़ताल, साथ ही अच्छी वृष्टिका योग है। वायदेके व्यापारोंकी कुछ विलक्षण गतिविधि रहेगी। कई चीजें तेज और कई मन्दी। शेयर बाजार कुछ झुका हुआ सा प्रतीत होगा। धातु और रुईमें तेजीमन्दी वाले दोनों कमा सकेंगे।

साप्ताहिक तेजी-मन्दी अगस्त

प्रथम सप्ताह (३० से ५)

बाजारमें काफी घट-बढ़ चलेगी, पहिले तेजी फिर मन्दीका चान्स रहेगा।

चान्दी सोनेमें मन्दीसे ज्यादा तेजी और रुईमें तेजीसे ज्यादा मन्दीका असर रहेगा। इसी तरह और चीजोंका अन्दाज लगा लें।

दूसरा सप्ताह (६ से १२)

इस हफ्तेमें ५ दिन मन्दीके और २॥ दिन तेजी के हैं। चान्दीसे सोना तेज और रुई मन्दी। खरीदकर बेचनेका ध्यान रखें। अलसी, एरंडा, बिनोला, और ग्वार मन्दा। ता० ८ बिनौला मन्दा।

तीसरा सप्ताह (१३ से १६)

यहां भी मन्दीका माकूल असर रहेगा, फिर भी तेजीका उछाला आये बिना नहीं रहेगा।

चान्दी और रुईमें ज्यादा घटबढ़। सोना तेज होकर मन्दा। ता० १५ शेयर तेज।

चौथा सप्ताह (२० से २६)

पहले खरीदकर तुरत नफा खाओ, फिर बेचकर नीचेमें कवर कर लो।

सोना प्रायः समान, चान्दीमें विशेष घटबढ़ और रुईमें लगातार तेजी। ता० २४ सोना तेज।

पांचवां सप्ताह (२७ से २)

बेचकर तुरत खरीदें, फिर ज्यादा खरीदकर बेचने का मौका मिलेगा। चान्दी, रेशम, पाट तेज। बिनौला, सोना मन्दा। ता० २८ रुई तेज।

सितम्बर

सितम्बरके योग अत्यधिक उत्पात सूचक हैं। पश्चिमी देशोंमें उपद्रव, आकस्मिक दुर्घटनाएं, विप्लव, शोक वृद्धि, वर्षाकी खेंच मलेरिया प्लेग आदि रोग और चौर भय बना रहे।

बाजार यहां एक प्रखर भावसे खूब वेगसे बहते हुए दिखाई देंगे। वायदोंके सौदोंका जोर बढ़ेगा। फिर भी वायदेके व्यापारी सावधान रहें। पद-पद पर सोच समझकर काम करें। तेजीकी शक्ति काफी बढ़ी हुई दिखाई देगी। और महीनेके उत्तरार्धमें खासी घट-बढ़ चलेगी।

साप्ताहिक तेजी मन्दी सितम्बर

पहला सप्ताह (३ से ६)

व्यापारके लिए क्रांतिकारी योग। काफी घटबढ़। चान्दी, सोना, खांड, तिल तेल, रुई मन्दी।

ता० ७ चांदी तेज

दूसरा सप्ताह (१० से १६)

व्यापारी सावधान होकर काम करें।

चान्दी, सोना और रुई खरीदकर बेचनेका ध्यान रखें। ता० १३ पाट तेज। १४ चान्दी तेज।

तीसरा सप्ताह (१७ से २३)

तेजी-मन्दीके चालू चक्रमें यहाँ तेजीकी ताकत ज्यादा रहेगी। शुरूमें तेजीका काम करें फिर मन्दीमें आना ठीक रहेगा।

सोनेमें ज्यादा घटबढ़का योग नजर नहीं आता, चान्दी चमकने लगेगी और घटबढ़ भी होगी, रुईकी रफ्तार तेज रहेगी। घृत, तिल, सरसों, कपड़ा, पाट, लालमिर्च इनका साथ देगी। ता० २२ सोना तेज।

चौथा सप्ताह (२४ से ३०)

पिछले सप्ताहमें तेजीके बाद मन्दी आई होगी तो यहां चालू रह कर तेजीमें तबदील होती हुई दिखलाई देगी।

इस सप्ताह सोनेमें कम चान्दी और रुईमें अच्छी तेजी सम्भव होगी, मगर मन्दी फिर भी आएगी। पाट, सण, रेशम, ऊन, तेज। लाख, चमड़ा, ग्वार और बिनौलामें मन्दीका असर रहेगा। ता० २८ रुई तेज।

अक्टूबर

अक्टूबरके पूर्वार्द्धमें कुछ अच्छे योग हैं और उत्तरार्द्धमें रक्तपात, आपसी झगड़े और मनमुटाव बने रहेंगे। मौज शौकके साधन सम्बन्धी अपराध बढ़ेंगे। बाजारोंमें तेजीके बाद एक अच्छी मन्दीकी सम्भावना है। घटबढ़के लिए ता० १, २, ६, १३, १६ २६, और ३० महत्त्वपूर्ण हैं।

साप्ताहिक तेजी-मन्दी अक्टूबर

प्रथम सप्ताह (१ से ७)

इस सप्ताहमें २॥ दिन तेजीके २॥ मन्दीके और फिर शेष दिन तेजीके हैं।

चान्दी, सोना और रुई पहले मन्दीमें खरीदकर तेजीके २॥ दिनोंमें नफेसे बेचकर फिर खरीदने से दूना लाभ होगा। सोना साधारण तेज कुछ मन्दा और रुई तेज होकर मन्दी। अन्न, सूत, पाट, रस पदार्थ मन्दे। ता० १ चांदी तेज, ता० २ रुई तेज।

दूसरा सप्ताह (८ से १२)

पिछले सप्ताहसे चली आई तेजी यहाँ टिकेगी नहीं। मन्दीको माकूल मौका मिलेगा।

यहां चान्दी, सोना और रुईमें अच्छी तेजीका टोन मालूम होता है। बेचें और मन्दीकी राह देखें। एकाएक शनिवारको बाजार फिर बदल जायगा, और आगे ज्यादा फेरफार होगी। ता० ६ रुई तेज।

"भविष्यप्रकाश" रतनगढ़ से।

त्रैमासिक राशिफल

अगस्त मास किस राशिको कैसा रहेगा ?

मेष—दाहिने नेत्रमें कुछ पीड़ा, कुटुम्ब कलह, मुख वा दांतोंमें रोग, खनिज पदार्थ वा नौकरोंसे लाभ, ता० ६ तक चिन्ता, १६ तक धन लाभ, २४ तक सुख प्राप्ति, शेष दिन साधारण। १६ तक चांदी सोना और रुईसे लाभ। अधिकांश मन्दीका कार्य करें।

वृष—चेचक, आपरेशन, व्रणादि रोग, नाक रोग, मानसिक चिंता, धनलाभ, नये कार्यारम्भमें विघ्न, आलस्यकी अधिकता, सामाजिक-कार्यमें बाधा, ता० ८ तक धन प्राप्ति, १६ तक चिन्ता, २२ तक खराब। शेष दिन शुभ, सफेद वस्तु लाभदायक, तेजी मन्दी समान।

मिथुन—स्वास्थ्य साधारण, धन हानि, स्त्री कष्ट, सत्कर्म विरक्तता, सङ्गीतवाद्यमें मनोभिरुचि, व्यर्थ व्यय, ता० ३ तक खराब, १० तक धनका व्यय, १६ तक शारीरिक कष्ट, २३ तक अशुभ, शेष दिन लाभदायक, सफेद वस्तुसे भी कभी कभी साधारण लाभ।

कर्क—साधारण शारीरिक कष्ट, शत्रु नाश, व्यय विशेष, स्वच्छता और सुगन्धित वस्तु पर विशेष ध्यान, कार्यमें स्वतन्त्रता, राज्यसे प्रतिष्ठा प्राप्त, ता० ५ तक धन लाभ, १८ तक खराब, २५ तक पूर्ण लाभ, शेष दिन शुभ, १५ तक व्यापारमें लाभ, बादमें हानि अधिक।

सिंह—गले या गर्दनमें पीड़ा, मानसिक चिंता, विद्या बुद्धि ह्रास, संतान कष्ट, धनलाभ, सामाजिक कार्यमें संलग्नता, स्त्री सुख उत्तम ; ता० ४ तक लाभ, १५ तक खराब, २२ तक चिन्ता, शेष दिन सुख और लाभ, ज्यादा रिस्क ठीक नहीं है।

कन्या—सुखकी अधिकता, मातृ सुख, आलस्य, शुभ कार्यमें विघ्न, धनलाभ उत्तम, ता० ३ तक शारीरिक कष्ट, १८ तक चिंता, २७ तक धन व्यय, शेष दिन साधारण, सफेद वस्तुमें पहले तेजी फिर मन्दीसे लाभ।

तुला—शारीरिक कष्ट, धन लाभके साथ विशेष व्यय, पराक्रमकी वृद्धि, बन्धु कष्ट, ता० ७ तक धन व्यय, १४ तक स्त्री सुख, २३ तक देहमें पीड़ा, शेष दिन शुभ, सट्टेसे सम्भल कर रहें।

वृश्चिक—स्त्रीको रक्त विकारसे कष्ट, बुद्धिविद्योन्नति, धन लाभ, बड़े भाईसे सुख प्राप्ति, स्त्री सुखकी कमी, प्रापंचिक सुखमें बाधा, भूत पिशाचादि भय, ता० ५ तक खराब, १० तक पूर्ण लाभ, १६ तक शारीरिक चिंता, २८ तक पुनः लाभ, शेष दिन कष्टदायक, अधिकांश तेजीका काम करें।

धनु—मासके पूर्वार्द्धमें शिर या मुखमें रोग, मानसिक चिंता, स्त्रीको तकलीफ, बुद्धि चञ्चल, उत्तरार्द्ध सामान्य, ता० ३ तक स्त्री कष्ट, ७ तक बुद्धिकी न्यूनता, १२ तक शुभ, १८ तक आलस्य, शेष दिन साधारण, दिनमान देखकर काम करें।

मकर—विद्या हानि, सन्तान कष्ट, शारीरिक पीड़ा, भाग्य वृद्धि, धार्मिक कार्योंकी अधिकता, ता० ८ तक शारीरिक कष्ट, १२ तक शुभ, १६ तक सन्तान कष्ट, २३ तक मानसिक चिंता, शेष दिन साधारण शुभ, आरम्भमें लाभ, तेजी-मन्दी समान।

कुंभ—पूर्ण धन लाभ, स्त्री कष्ट, मातृ सम्बन्धी चिंता, विद्योन्नति, ता० ७ तक शारीरिक चिंता, १२ तक मातृ कष्ट, १७ तक मानसिक व्यथा, शेष दिन साधारण, मन्दीसे तेजी लाभदायक।

मीन—पराक्रम वृद्धि, शुभ कार्यमें सफलता, सन्तान कष्ट, शत्रुकी वृद्धि, राजभय, धार्मिक कामोंमें अभिरुचि, ता० २ तक श्रेष्ठ, ५ तक शत्रु रोगसे भय, १४ तक उत्तम, १६ तक मातृ कष्ट, चिंता वृद्धि, २८ तक शत्रुसे हानि, शेष दिन खराब, अचानक हानिका योग है।

सितम्बर मास किस राशिको कैसा रहेगा ?

मेष—ता० ५ तक शारीरिक कष्ट, १५ तक लाभ, २३ तक स्त्री कष्ट, धार्मिक कार्यमें बाधा और शेष दिन साधारण, सफेद और पीली वस्तुसे हानि, तेजी मन्दी समान।

वृष—मासका पूर्वार्द्ध उत्तम, उत्तरार्द्ध चिन्ता जनक, ता० ६ तक लाभ, १७ तक हानि, २३ तक सुखसे वंचित, और शेष दिन शुभ। पूर्वार्धमें सफेद वस्तुसे तारुणीमें लाभ।

मिथुन—ता० २२ तक स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्ता, २८ लाभ और शेष दिन भयप्रद, बिनौला और सफेद वस्तुके व्यापारसे लाभ। थोड़े नफेसे बेचनेका ध्यान रखें।

कर्क—चित्त प्रसन्न, हरेक व्यापारमें लाभ। ता० ३ तक धनलाभ, १० तक भय, २० तक क्लेश, २५ तक सुख। शेष दिन खराब। पूर्वार्द्धमें सफेद और पीली वस्तुसे हानि, उत्तरार्द्धमें अधिकांश तेजीसे लाभ।

सिंह—ता० १५ तक पूर्ण लाभ योग, तदुपरान्त हानि, उस समय सम्भलकर काम करें। ३ तक लाभ, ६ तक सुख, १५ तक धनप्राप्ति, २१ तक धन हानि, शेष दिन शुभ, अनाज और शेयरसे लाभ, पहले तेजी और फिर मन्दीका काम करें।

कन्या—ता० २ तक भय, ६ तक व्यापारमें लाभ, १७ तक हानि, ३० तक चिन्ता और व्यय, चांदी सोना और रुईके वायदेके व्यापारसे लाभ, तेजी-मन्दी समान।

तुला—ता० १३ तक धन-व्यय और भय, २६ तक चिन्ता, और शेषदिन लाभप्रद, धनप्राप्ति और धार्मिक कार्योंमें बाधा। तैयारीके व्यापारसे लाभ।

वृश्चिक—शारीरिक कष्ट, धार्मिक प्रवृत्ति। ६ तक धन लाभ, १५ तक स्वास्थ्य खराब और शेष दिन शुभ। सफेद और पीली वस्तुके व्यापारसे अलग रहें।

धनुः—ता० ६ तक रोग भय, धन हानि, १५ तक स्त्री कष्ट, २२ तक चिन्ता, अशुभ समाचार और शेष दिन साधारण। वायदेका व्यापार लगातार करनेसे हानि। बीच-बीचमें तेजी-मन्दी लाभदायक।

मकर—पूर्वार्द्धमें शारीरिक कष्ट, उत्तरार्द्धमें धन प्राप्ति, ता० ७ तक स्त्री सुख. १५ तक लाभ, २२ तक व्यापार उत्तम, और शेष दिन चिन्ताजनक, चांदी सोनेसे हानि, खरीदकर बेचें।

कुम्भ—ता० ५ तक शारीरिक कष्ट, १५ तक सन्तान कष्ट, २७ तक रोग भय और शेष दिन खराब, पूर्वार्द्धमें सफेद वस्तुसे तेजीमें लाभ।

मीन—स्वास्थ्य साधारण, स्त्री सुख, सन्तान प्राप्ति और धन योग साधारण, ता० १६ तक रोग चिन्ता, २२ तक स्त्री सुख, और ३० तक सन्तान प्राप्ति, पाट रुई और चांदीसे लाभ, तेजी-मन्दी समान।

अक्टूबर मास किस राशिको कैसा रहेगा ?

मेष—ता० ५ तक स्त्री सुख, १० तक धन लाभ, २३ तक शत्रु वृद्धि, चिन्ता, शेष दिन साधारण, सफेद और पीले रङ्गकी वस्तुओंसे लाभ, तेजी-मन्दी समान।

वृष—ता० ८ तक व्यापारमें लाभ, १३ तक धन-क्षति, १६ तक सन्तान सुख उत्तम, २२ तक रोग और शत्रुवृद्धि, शेष दिन शुभ, सफेद और पीले रङ्गकी वस्तुओंके व्यापारमें हानि। अधिकांश तेजी उत्तम।

मिथुन—ज्वर, फोड़ा-फुन्सी, स्त्री-कष्ट, मानहानि धन हानिके योग हैं। १० तक शारीरिक कष्ट, १६ तक धनहानि, ३१ तक भय, पूर्वार्द्धमें चांदी, सोने, रुईसे लाभ। उत्तरार्द्धमें हानि, खरीदकर बेचें।

कर्क—ता० १२ तक व्यापारसे लाभ, १६ तक शारीरिक कष्ट, २२ तक धन-प्राप्ति, शेष दिन खराब,

लाभसे हानि अधिक। वायदेके व्यापारसे लाभ, तेजी-मन्दी समान।

सिंह—ता० ४ तक धनहानि, १६ तक व्यापारसे पूर्ण धन लाभ, शेष दिन साधरणतया अच्छे हैं, उजले रङ्गकी वस्तुसे विशेष लाभ, सफेद वस्तुके व्यापार से अलग रहें। ठहरकर तेजीका काम करें।

कन्या—काले रङ्गकी वस्तुओंसे लाभ, धन मिलते भी मन चिन्तित रहेगा, ता० ३ तक शारीरिक कष्ट, १८ तक धन प्राप्ति, २६ तक व्यापारसे लाभ, शेष दिनोंमें चिन्ता और भय बना रहेगा। पूर्वार्द्धमें तेजीका उत्तरार्द्धमें अधिकांश मन्दीका काम करें।

तुला—शोक चिन्ताजनक, मानहानि, शारीरिक कष्ट, व्यापार और राजपक्षसे हानि, धार्मिक कार्यमें बाधा। ता० ७ तक खराब, १४ तक मध्यम, २३ तक भाग्य विपक्षमें, शेष दिन साधारण। मिल शेयर, चांदी और सोनेसे लाभ। पहले तेजी और फिर मंदी लाभदायक।

वृश्चिक—ता० ५ तक खर्च, १० तक स्त्री पुत्र सुख, विद्या बुद्धि वृद्धि, १६ तक कुटुम्बमें कलह, २८ तक लाभ, शेष दिन साधारण। गल्ला रुईसे विशेष लाभ, तेजी-मन्दी समान है।

धनुः—ता० ३ तक साधारण, ७ तक साधारण लाभ, २२ तक स्त्रीको ज्वर और व्रण सम्बन्धी रोग, २६ तक शारीरिक कष्ट, शेष दिन उत्तम। व्यापार सम्भलकर करें, अचानक हानिकी सम्भावना।

मकर—ता० ८ तक भाग्य वृद्धि, १२ तक स्त्रीकष्ट २३ तक धार्मिक प्रवृत्ति, आनन्दमय जीवन, शेष दिन साधारण। पूर्वार्द्ध में सफेद वस्तुसे हानि, उत्तरार्द्ध में लाभ, पहले खरीदो।

कुम्भ—ता० ५ तक व्यापारमें रुकावट, १३ तक सन्तान कष्ट चिन्ता, १८ तक साधारण लाभ, शेष दिन खराब। पीली और लाल वस्तुओंसे अलग रहें। तेजी-मन्दी समान।

मीन—ता० १६ तक दुःख, स्त्री पुत्र कष्ट, अस्वास्थ्य और व्यापारमें हानि, २८ तक साधारण ठीक, शेष दिनोंमें शत्रु भय। खास मौकेसे वायदेका काम करें और शीघ्रतासे सौदा बराबर करदें।

'भविष्यप्रकाश' रतनगढ़।

श्राद्धकी महत्ता

आस्तिक हिन्दू जनता अपने जीवनमें जिन कार्यों को अत्यधिक महत्त्व देती है उन्हींमें श्राद्धका भी स्थान है, इसीलिए पितर पक्षकी प्रतीक्षा हिन्दू श्रद्धा पूर्वक करते रहते हैं। यह दुर्भाग्यकी बात है कि इसका महत्त्व और इसका विज्ञान न समझनेके कारण हिन्दुओंमें ही ऐसे मनुष्य भी देखे जाते हैं जो न केवल स्वयं अपने इस पवित्र कर्तव्यसे विरत हैं वरन् दूसरे लोगोंको भी पथभ्रष्ट करते हैं। इसलिए लोग अनेक प्रकारका कुतर्क भी करने लगे हैं।

कहते हैं कि श्राद्ध कर्म वैदिक है या अवैदिक? और यह किस किस कर्मका नाम है? पितरोंके उद्देश्यसे जो किया जाता है तो वह जीतोंके निमित्त किया जाता है या मरोंके निमित्त? और वह किस प्रकार पहुंचता है? आज इसी विषयकी मीमांसा करनी है। जिस समय हम श्राद्ध विषयको अपने हाथमें ले उस समय सबसे प्रथम हमको विचारना चाहिये कि श्राद्धका उद्देश्य क्या है? अन्ततोगत्वा आपको कहना पड़ेगा कि-"श्रद्धया क्रियते तच्छ्राद्धम्" अर्थात् पितरोंके उद्देश्यसे जो श्रद्धापूर्वक किया जाय उसको श्राद्ध कहते हैं। जब पितरोंके उद्देश्यसे करनेका नाम श्राद्ध है तब यह वैदिक कर्म है या नहीं इसका निर्णय करते हैं।

मातृदेवो भव, पितृदेवो भव,, आचार्य देवो भव देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्॥ तै०

अर्थात् माता पिता आचार्यकी उपासना करनी चाहिये, देवता और पितृ कर्ममें प्रमाद नहीं करना चाहिये।

कुर्यादहरहः श्राद्धमन्नाद्येनोदकेन वा।
पयोमूलफलैर्वापि पितृभ्यः प्रीतिमावहन् ॥
मनु० अ० ३ श्लोक ८२।
एकमप्याशयेद्विप्रं पित्रर्थे पाञ्चयज्ञिके ॥

पितरोंसे स्नेह करनेवाला तिल, जौ और पय मूल फल जल इनसे श्राद्ध करे और पितरके अर्थ एक ब्राह्मणको भोजन करावे।

आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः यजुः १६। ५८

अग्निकर्मको प्राप्त हुए हमारे पितर देवयान मार्गसे आवें। यजु०।

इस मन्त्रसे यह स्पष्ट हो गया कि पितृकर्म वैदिक है, इसीके विस्तारमें और भी बहुतसे मन्त्र हैं। अब इस बात पर बिचार करना है कि यह जीवितोंके निमित्त है या मृतोंके? इसमें वेदके मन्त्रका प्रमाण दिया जाता है।

ये समानाः समनसः पितरो यमराज्ये तेषां लोकः स्वधा-नमोयज्ञो देवेषु कल्पताम्। अ० १६ मं० ॥४५॥ इत्यादि।

तीन भाग भूमिमें हैं मनुष्य लोक पितृलोक देवलोक, इनमें जीव कर्मके अनुसार प्राप्त होता है। और केवल निषिद्ध कर्मका कर्ता जीव नरकको ही प्राप्त होता है। "विधूर्ध्वे भागे पितरो वसन्ति" (सिद्धान्तशिरोमणी) अर्थात् चन्द्रमाके ऊर्ध्व भागमें पितरोंका निवास है। जब यह बात सिद्ध हो गई तब कोई शंकाकी बात नहीं रह जाती। जैसे चम्पाके फूलोंका पात्र चंपाके फूल चले जाने पर भी सुगन्धित रहता है। इसी प्रकार जीवके निर्गत हो जाने पर भी यत्किञ्चित् संबन्ध शेष रहता है। पंचाग्नि विद्याके द्वारा जैसे जीवकी गति उर्ध्वगामी होकर चन्द्रलोक मेघ सूर्यकी किरण भूमि में होती है और उसका पुण्य रूप अदृष्ट उसके साथ रहता है वही उसे ऊपर नीचे घुमाता है और उसीका संबंध आत्मा रूप पुत्र उसके निमित्त जो कुछ करता है उसका पुण्य अदृष्टरूपसे पितरको प्राप्त होता है। क्योंकि वह उसीका धन है और जो अपने हाथोंके किए कर्म से नीचे गिरता है वह पुत्र पौत्र प्रपौत्रके छः हाथोंके किये सुकृतसे निरन्तर पितृलोकमें सुख भोगता है। जैसे मनुष्य लोकमें मानवी शक्ति है, ऐसे ही देव और पितर लोकमें भी उनकी पृथक् शक्ति है। वह भाग होनेसे अनेक रूप धारण कर सकते हैं, आत्मा ही इनका रथ आदि होता है; जिस प्रकार शहदकी मक्खी पुष्पमेंसे मधु ले जाती है और पुष्पमें कोई विकार नहीं आता इसी प्रकार ब्राह्मणके निमित्त जो दिया हुआ अन्न है उसका सार भाग दिव्य पितर ले जाते हैं, आत्मप्रकाश वालोंको प्रत्यक्ष दर्शन भी होता है। महाबली भीष्मजीको पिताके हाथका और जगज्जननी श्री जानकी महारानीको मुनियोंके मध्य में राजा दशरथका दर्शन हुआ था। पिण्डदान जो किया जाता है वही मानों पितरोंके आकर्षण पूजनका प्लान चेट है, यदि कहीं किसीका जन्म भी हुआ है तो पितर उसको यथार्थ रूपमें जानते हैं, यह पितरों के उद्देश्यसे दिया हुआ दिव्यपितरोंके समीप उपस्थित होता है; अपनी सर्वज्ञतासे उस पुण्यके फलको उस जीवके निमित्त प्राप्त करतेहैं और वह जीवको सुख देनेके निमित्त प्राप्त होता है इसी कारण अथर्ववेदमें तीन स्थान भूमि अन्तरिक्ष और दिव्य इन तीन लोकों में पितरोंका निवास कहकर तीनों स्थानमें अन्नको स्वधारूप लिखा है। परोक्षका ज्ञान वेदसे होताहै, जिस प्रकार दिया हुआ तार वहीं रहता है और खटका उस स्थानके तारघरमें पहुँचता है जहांको तार दिया जाय, वहांसे भेजा द्रव्य कोई चपरासी वहां पहुँचाता है— जहां पानेवाला है। इसी प्रकार वैदिकधर्मका तार सब लोकमें व्याप्तहै वह शब्दात्मक संकल्प होते ही उसका फल पितृलोकमें पहुँच जाता है। और कागजकी भांति यह अन्नादि यहीं रहता है पर फल वहां उपस्थित हो जाता है, उस फलको उस जीवके निमित्त दिव्य पितर प्रदान करते हैं। प्रथम तो शास्त्र विधिके अनुसार जिसका और्ध्वदैहिक कर्म हुआ है उसकी कभी

'श्रीस्वाध्याय'का सूर्यग्रहण ही ठीक रहा

आषाढ़ कृष्णा ३० ता० ६ जुलाईके सूर्यग्रहणका पंजाबमें दिखाई देना भारतके किसी भी पंचांगकर्ता ने नहीं लिखा था। कुछ पञ्चाङ्गोंमें तो स्पष्ट लिखा था कि पंजाबमें यह ग्रहण बिलकुल दिखाई नहीं देगा, वायव्य-सरहद-प्रान्त सिन्धके पश्चिमोत्तर भाग श्रीनगर काश्मीरमें इस ग्रहणका स्पर्श होते ही सूर्यास्त हो जायेगा" किन्तु इसके विपरीत हमने अपने 'श्रीविश्वमार्तण्ड पंचाङ्ग' और 'श्रीस्वाध्याय' के गताङ्कमें सचित्र विशेष विवरण द्वारा यह घोषित किया था कि यह ग्रहण पंजाबमें लाहौर अमृतसर जालन्धर लुधियाना आदि नगरोंमें ४ से १३ मिनट तक और इससे पश्चिममें रावलपिण्डी पेशावरकी ओर आधे घण्टे तक अधिकाधिक दिखाई देगा। तदनुसार इस ग्रहणका चमत्कार ठीक हमारे लेखानुसार ही जनता को दृग्गोचर हुआ। अमृतसर लाहौर मुल्तान रावलपिण्डी आदि पंजाबके विभिन्न भागोंसे हमें अनेकों धन्यवादात्मक पत्र मिल रहे हैं—जिनमें लिखा है कि "आपके लेखानुसार ग्रहण हमने प्रत्यक्ष देखा, इस ग्रहण पर आपके पंचाङ्गने ही पूर्ण विजय पाई" आदि आदि। यहां हम अमृतसर और मीयांवालीके दो पत्र उद्धृत करते हैं—

श्रीमान्याः पं० हरदेव शर्माणः त्रिवेदिनः ज्योतिषाचार्याः सहर्षं वन्दे।

सर्वेषां ज्यौतिषाचार्याणां ग्रहणनिर्णये श्रीमतां निर्णयो विजयतेतरां, भवल्लेखानुसारं दृष्टिगोचरत्वात्। यतो हि यन्त्रं विनैवास्माभिः स्वचक्षुषावालोकि अतएवोचित शास्त्रपर्यालोचनत्वात्-भवन्तो धन्यवादाधिकारिणः। आशासे चाग्रेऽपि विशेषपर्यालोचनपूर्वकं ज्योतिषशास्त्रनिर्णयं करिष्यन्ति भवन्तः। प्रवर्धयतु च विश्वनाथः भवतां शास्त्राभ्यासमिति।

भवतां—केदारनाथः (काशीवाले ज्यौतिषी)
ज्योतिषकर्मकाण्ड कार्यालय, अमृतसर।

श्रीमन्महोदय ज्योतिषाचार्य पण्डितभूषण श्री१०८ हरदेव शर्मा त्रिवेदीजी। प्रणामके अनन्तर निवेदन है कि हमने आपके पंचाङ्ग और पत्र (श्रीस्वाध्याय) को मुख्य मानकर सोत्साह समस्त विप्र-मण्डलोको एकत्र करके सारे नगरमें सूर्यग्रहण होनेकी घोषणा करवाई और सूर्यास्तसे एक घण्टा पूर्व हम सब लोग इस महत्त्वपूर्ण चमत्कारकी परीक्षाके लिए (ग्रहणदर्शनार्थ) एकत्रित हो गये। ग्रहण ठीक समय पर सूर्यास्तसे आध घण्टा पहिले वायव्यकोणसे स्पर्श हुआ और सब लोगोंको नेत्रोंसे स्पष्ट ग्रहण लगा हुआ दिखाई देते हुए सूर्यबिम्बने अस्ताचलमें प्रवेश किया। रात्रि ११ बजकर ३० मिनट तक जनताने बड़े उत्साहसे हरिकीर्तनादिसे आपके अटूट परिश्रमको सफल किया और सबने आपके परिश्रमकी मुक्तकंठसे श्लाघा की।

दुर्गति नहीं होती, दशगात्र-क्रियासे उसका शरीर सम्पादन होता है और यदि दैवात् किसीके अतिशय कुत्सित कर्म हुए और वह यदि कहीं कुत्सित योनिमें स्थान पावे तो भी उसको अनेक प्रकारके सुख होते हैं।

इस विषयमें अनेक प्रमाण शास्त्रोंमें भरे पड़े हैं, साथ ही प्रमाणों द्वारा यह सिद्ध किया जा चुका है कि श्राद्ध मृतक पितरोंका ही होता है और उनके निमित्त ब्राह्मण आदिको जो सत्कार पूर्वक दिया जाता है वह निसन्देह वेद मन्त्रों द्वारा पहुंचता है।

यद्यपि यह विषय ऐसा नहीं है जिसका तत्त्व सर्वांशतः एक दो पृष्ठके लेखमें समझाया जा सके-- और इसीलिये हमने इस लेखमें अधिक विस्तारमें जानेका प्रयत्न भी नहीं किया— तथापि उपर्युक्त पंक्तियोंमें यह सिद्ध किया जा चुका है कि यह पवित्र कार्य वैदिक और वैज्ञानिक दोनों दृष्टियोंसे सिद्ध है। इस विषयको लोग जितना अन्धेरेका विषय समझते हैं उतना ही यह सुस्पष्ट सिद्धान्त है।

रजत-जयन्ती

देहलीस्थ संस्कृत-महाविद्यालयके अध्यक्ष, सर्वतन्त्रस्वतन्त्र, श्री पं० छज्जूराम शास्त्री विद्यासागरजीकी 'रजतजयन्ती' के उपलक्ष्यमें आए हुए भारतीय विद्वानों के आशीर्वाद पत्र, श्रद्धाञ्जलि एवं अभिनन्दन पत्रोंका सारांश—

"पं० छज्जूरामशास्त्री विद्यासागरोवयसः पूर्वार्द्धमतिक्रम्य २००२ वैक्रमवर्षस्य वैशाखशुक्लातृतीयातः परार्द्धमनुप्रवेक्ष्यतीति भगवान् विश्वनाथोभवतस्त्यायुषंजमदग्नेः कश्यपस्य च त्र्यायुषं विदध्यात्, इत्याशास्ते—

श्रीकृष्णबोधाश्रमः परमहंस परिव्राजकाचार्यः, अध्यक्ष-धर्मसङ्घ महाविद्यालय देहली।

देहलीस्था विद्यासागरोपाधिकाः श्रीछज्जूरामशास्त्रिणः, प्रणीतानेकसंस्कृतहिन्दीनिबन्धाः पाठितादभ्रान्तेवासिनः किल कस्यनाम-विपश्चित-औपकर्णिकतां नजिहतेतमाम् जगदीशात एतदभ्युदयमर्थयमानोऽमूनादरेणाभिनन्दयति—

श्रीमाध्वसंप्रदायाचार्य, दार्शनिक-सार्वभौम, साहित्य-दर्शनाद्याचार्य, तर्करत्न न्यायरत्न गोस्वामी दामोदर शास्त्री, काशी।

"श्रीमन्तो-मान्या-विद्वन्महाभागाः श्रीछज्जूरामशास्त्रिणो विद्यासागरविरुदविभूषिता ममचिरपरिचिताः सन्ति। एभिर्महाभागैर्बहुषुविद्यालयेषु प्रौढाँश्छात्रानध्याप्य सारगर्भितान् बहून्प्रौढान्ग्रन्थांश्च विरचय्योभयथापिसम्यक् ससेविताभगवती-सुरभारती। कवितविरचनेऽपि श्लाघनीयैषां प्रौढिः। न्यायमुक्तावली-न्यायदर्शन-वेदान्तसारमहाभाष्य-निरुक्तादि ग्रन्थानां टीकाः काव्य साहित्येऽपि च कतिपयेनिबन्धा एषां महाभागानां प्रौढा अपि च्छात्राणामत्यर्थमुपकारकाः। दीर्घमायुरेभ्योजगन्नियन्तापरमेश्वरोवितरत्विति मदीयाहार्दिकी-शुभाशंसेति—

गिरिधरशर्मा चतुर्वेदः (महामहोपाध्यायः)
अध्यक्ष – संस्कृत विद्यापीठ लाहौर।

"दार्शनिकीयत्प्रतिभा प्रतिभासंपन्नचेतसां पुंसाम्।
रमयति मानसमाराच्छज्जूरामः स विश्रुतः शास्त्री॥
यन्मुखपद्मविनिःसृतकाव्यकलापः प्रतिक्षणं लोके।
काव्यकलारसिकानां मनांसि सद्यःप्रमोदयन्नास्ते॥

महामहोपदेशक अखिलानन्दशर्मा कविरत्नम्

"विद्वत्सामन्तसम्राट् कविकुलतिलकः सर्वतन्त्रस्वतन्त्रः
गीर्वाणाचार्यवाणी प्रवणगुणगणागण्यधन्यःशरण्यः।
प्राधानाध्यापको यो निखिलमुनिमनोवेद्यनिष्ठप्रतिष्ठः।
श्रीमाञ्छास्त्रार्थवीरो जयति बुधवरः छज्जूरामोविपश्चित्॥

पं० माधवाचार्य शास्त्री शास्त्रार्थमहारथी, कुरुक्षेत्र।

पं० कुबेरदत्तशास्त्री व्याकरणाचार्य खुर्जा, पं० दीनानाथशास्त्री विद्यावागीश मुल्तान, रायबहादुर पं० श्रीदत्तजी सबजज आनरेरी मजिस्ट्रेट भिवानी, पं० कृष्णदत्त शास्त्री भारद्वाज एम० ए० आदिके नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

संकलयिता—
पं० वामदेव उपाध्याय।

यह पत्र वर्धापन रूप सेवामें भेजा जाता है।
—पं० बोधराज ज्योतिषी, मीयांवाली (पंजाब)

इस प्रकार अन्यान्य जिन अनेक बन्धुओंने ग्रहण देखकर हमारे पास पत्र भेजनेकी कृपा की उन सबके हम आभारी हैं। इसका सारा श्रेय नवीन सूक्ष्म दृश्य-गणितके करणग्रन्थ केतकी ज्योतिर्गणित और भारत भूमण्डलीभ सूर्यग्रहण गणितके मूलप्रवर्तक वा निर्माता स्व० आचार्य श्रीकेतकरजीको है।

—ह० शा० त्रिवेदी

'श्रीस्वाध्याय' के गताङ्क

प्रथम वर्षकी फाइल—

१—शरदङ्क १।।) रु०, २—हेमन्ताङ्क २।।) रु०,
३—वसन्ताङ्क १।।) रु०, ४—ग्रीष्माङ्क १।।) रु०,
चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य ६) रु०।

द्वितीय वर्षकी फाइल—

१—शरदङ्क ४) रु०, २—हेमन्ताङ्क २) रु०,
३—वसन्ताङ्क १।। रु०, ४—ग्रीष्माङ्क १।।) रु०,
चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य ८) रु०।

तृतीय वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क ५।।) रु०, २—हेमन्ताङ्क २) रु०,
३—वसन्ताङ्क १।।।) रु०, ४—ग्रीष्माङ्क १।।।) रु०,
चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य १०) रु०।

चतुर्थ वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क अप्राप्य, २—हेमन्ताङ्क २) रु०,
३—वसन्ताङ्क २) रु०, ४—ग्रीष्माङ्क २) रु०,

मिलने का पता—

व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

आवश्यकता

श्रीस्वाध्यायसदन ज्योतिषविभागके लिए एक गणित और फलितके विशेषज्ञ ज्योतिषीकी आवश्यकता है। अपने कार्यके प्रमाण-पत्र सहित प्रार्थना-पत्र भेजें। जो ज्योतिर्विज्ञानके विशेषज्ञ वेतन पर सोलन न आ कर अपने स्थानसे ही ज्योतिष सम्बन्धी कार्य करके भेज सकते हों वे भी नीचे लिखे पते पर पत्र व्यवहार कर सकते हैं। उनका कार्य देखकर वा प्रत्यक्ष मिलने पर पारिश्रमिक नियत हो सकेगा।

श्रीस्वाध्यायसदनमें एक सहकारीकी भी आवश्यकता है जो व्यवस्था सम्बन्धी कार्यको सम्हाल सके। हिन्दी संस्कृतकी योग्यता अच्छी होनी चाहिए, साथ ही ज्योतिषका भी ज्ञान हो तो और भी उत्तम है। साहित्य-सेवा एवं राष्ट्र-सेवाकी हार्दिक लगन रखने वाले नवयुवक विद्यार्थी एवं आदर्शवादी सज्जन ही नीचे लिखे पते पर पत्रव्यवहार करें। कार्यके अनुसार उनकी वृत्तिका समुचित प्रबन्ध किया जायगा।

व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्याय सदन, सोलन (शिमला)

विज्ञापनका अपूर्व साधन

कई मित्रोंके आग्रहसे आगामी पंचमवर्षसे 'श्रीस्वाध्याय' में सर्वथा विश्वसनीय प्रामाणिक संस्थाओं और व्यवसायियोंके विज्ञापन लेनेका निश्चय किया गया है। 'श्रीस्वाध्याय' प्रत्येक वर्गके शिक्षित भद्र-पुरुषोंके पास पहुंचता है और बहुमूल्य ग्रन्थोंकी भांति स्थायी-साहित्यमें सुरक्षित रहता है; अतः 'श्रीस्वाध्याय' विज्ञापनदाताओंके लिए सफल कल्पवृक्ष है। अन्यान्य पत्रोंकी भांति 'श्रीस्वाध्याय'में विज्ञापनों की भर मार नहीं होगी। कुछ चुने हुए विज्ञापन ही लिये जायेंगे, इसलिए विज्ञापनदाता अभीसे अपना विज्ञापन भेजकर 'नववर्षाङ्क'के लिए स्थान रिजर्व करा लें। विज्ञापन शुल्क पृष्ठ ३ पर देखिये।

व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्याय सदन, सोलन (शिमला)

श्रीग्रन्थमालाका प्रथम पुष्प

श्रीपञ्चस्तवी

(श्रीमद्धर्माचार्य भगवत्पाद प्रणीत)

यह एक अत्यन्त प्राचीन तथा भक्तोंके सम्पूर्ण मनोरथों को पूर्ण करनेवाला श्रीमहामायाका स्तोत्ररत्न है। लाखों भक्तोंने अनुभव किया है और आगे भी करेंगे कि यह स्तोत्ररत्न संसारमें अद्वितीय है।

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम श्रीमदमृतवाग्भवाचार्य प्रणीत कुछ प्रकाशित तथा अप्रकाशित ग्रन्थरत्न

श्रीपरशुरामस्तोत्र

यह एक अत्यन्त ओजस्विनी भाषामें लिखा हुआ भगवान् श्रीपरशुरामका स्तोत्र है। भारतके अनेकों पत्र पत्रिकाओंने तथा विद्वानोंने इसकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। राष्ट्रभाषानुवाद सहित सचित्र द्वितीय संस्करण छपकर तैयार है।

श्रीराष्ट्रालोक

अत्यन्त सरल तथा सरस संस्कृतभाषामय इस ग्रन्थके अध्ययनसे नस २ में राष्ट्रप्रेम व उत्साह भर जाता है। राष्ट्रिय व्यक्तियोंके सम्पूर्ण कर्तव्य, राष्ट्रको स्वतन्त्र व उन्नत करनेके उपाय, राष्ट्र किसे कहते हैं ? उस पर किसका अधिकार होता है ? इत्यादि विभिन्न राष्ट्रिय विषयोंका सम्पूर्ण ज्ञान हो जाता है। बड़े २ राष्ट्रिय नेताओंने इसकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। अधिक क्या, गागरमें सागर है। राष्ट्रभाषानुवाद सहित द्वितीय संस्करण प्रकाशित करनेका प्रयत्न हो रहा है। मूल प्रथम संस्करण समाप्त है।

श्रीसप्तपदीहृदय

(राष्ट्रभाषानुवाद सहित)

भारतीय आर्यविवाह-संस्कारमें सप्तपदी नामक क्रिया कितनी सुन्दर एवं महत्त्वपूर्ण है यह तो पाठकोंको विदित ही है। किन्तु इस सप्तपदीका वास्तविक रहस्य आज तक किसी भी विद्वान्ने खोल कर नहीं लिखा। "एकमिषे" इत्यादि सूत्रोंके यथार्थ रहस्यको खोल कर भारतीय आदर्शके राष्ट्रिय रूपमें यह श्रीसप्तपदीहृदय नामक ग्रन्थ लिखा गया है। विशेष क्या आदर्श-दाम्पत्य-जीवनका तत्त्व इस पुस्तकमें भरा पड़ा है।

श्रीआत्मविलास

(सुन्दरी राष्ट्रभाषा व्याख्या सहित)

मनुष्यमात्रके लिए परम कल्याणकारी व सन्मार्ग-प्रदर्शक यह वही अद्भुत आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थरत्न है, जिसके प्रकाशित होते ही दार्शनिक जगत्में हलचलसी मच गई और सैकड़ों प्रतियाँ हाथोंहाथ लग गईं। इस ग्रन्थको पढ़नेसे स्थितप्रज्ञता प्राप्त होती है, चित्त शान्त होता है, संसार बाहर भीतर सम्पूर्ण रूपसे आनन्दमय प्रतीत होता है। अतः यदि आप भी आत्मा क्या है ? परमात्मा क्या है ? ईश्वर जगदुत्पत्ति क्यों और किस प्रकार करता है ? हम क्या हैं ? और हमें क्या करना चाहिए ? दर्शन किसे कहते हैं ? उनका प्रारम्भ तथा अन्त कहाँ होता है ? उनकी उपपत्ति क्या है ? आदि २ आध्यात्मिक गूढ़ रहस्योंसे भली-भांति परिचित हो कर आत्म-साक्षात्कार करना चाहते हैं तो इस ग्रन्थका अवश्य मनन कीजिये। आपके सभी सन्देह दूर हो कर अद्भुत आनन्द प्राप्त होगा। मूल्य २) रु० मात्र।

शीघ्र प्रकाशित होनेवाला

श्रीराष्ट्रालोकका

श्रीराष्ट्रसञ्जीवन संस्कृतभाष्य

इसके विषयमें संक्षेपसे ही हम पाठकोंको सूचित करते हैं कि यह ग्रन्थरत्न सम्पूर्ण साहित्यसागरका सार है। इसके जोड़का ग्रन्थ आज तक संसार भरके किसी भाषाके साहित्यमें नहीं लिखा गया। ग्रन्थ क्या है, सम्पूर्ण राष्ट्रिय विषयोंका हृदय है। ग्रन्थमें प्रणेताने स्वाभाविक पूर्ण विज्ञानके आधार पर सम्पूर्ण मानव-कर्तव्य तथा स्वभावका उस विशेषतासे प्रतिपादन किया है कि जो एक अत्यन्त नवीव, सुललित स्वभाव-शुद्ध तथा प्रकृति-सिद्ध हो सकता है। इस ग्रन्थका स्वाध्याय प्रत्येक राष्ट्रहितैषीका परम प्रधान कर्तव्य है। न पढ़ने वाले आजन्म पछताएँगे। कईसौ पृष्ठोंमें यह ग्रन्थ समाप्त हुआ है।

सूचना—श्रीआत्मविलासको छोड़ कर शेष सभी मुद्रित पुस्तकें मार्ग-व्यय (दो आने) प्राप्त होने पर "श्रीस्वाध्याय" के ग्राहकोंको बिना मूल्य दी जावेंगी।

पता—श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)।

प० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस देहलीमें छप कर, श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (शिमला) से प्रकाशित